विक्षनरी:संस्कृत-हिन्दी शब्दकोश/पि-पौ

< विक्षनरी:संस्कृत-हिन्दी शब्दकोश

मूलशब्द—व्याकरण—संधिरहित मूलशब्द—व्युत्पत्ति—हिन्दी अर्थ

- **पि**—तुदा° पर° <पियति>—-—-—जाना, हिलना-जुलना
- **पिकः**—पुं°—-—अपि कायति शब्दायते- अपि + कै + क, अकारलोपः—कोयल
- **पिकानन्दः**—पुं°—पिकः-आनन्दः—-—बसन्तऋतु
- **पिकबांधवः**—पुं°—पिकः-बांधवः—-—बसन्तऋतु
- **पिकबंधुः**—पुं°—पिकः-बंधुः—-—आम का पेड़
- **पिकरागः**—पुं°—पिकः-रागः—-—आम का पेड़
- **पिकबल्लभः**—पुं°—पिकः-बल्लभः—-—आम का पेड़
- **पिक्कः**—पुं°—-—पिक इत्यव्यक्तसब्देन कायति- पिक + कै + क—२० वर्ष की आयु का हाथी
- **पिक्कः**—पुं°—-—पिक इत्यव्यक्तसब्देन कायति- पिक + कै + क—हाथी का बच्चा
- **पिङ्ग**—वि°—-—पिञ्ज् वर्णो अच् कुत्वम्—लालिमा लिये भूरा रंग, खाकी, पीला-लाल रंग
- **पिङ्गः**—पुं°—-—-—ख़ाकी या भूरा रंग
- **पिङ्गः**—पुं°—-—-—भैंसा
- **पिङ्गः**—पुं°—-—-—चूहा
- **पिङ्गमा**—पुं°—-—-—हल्दी
- **पिङ्गमा**—पुं°—-—-—केशर
- **पिङ्गमा**—पुं°—-—-—एक प्रकार का पीला रोगन
- **पिङ्गमा**—पुं°—-—-—चंडिका की उपाधि
- **पिङ्गाक्ष**—वि°—पिङ्ग-अक्ष—-—ललाई लिये भूरे रंग की आँखों वाला, लाल आँखों वाला
- **पिङ्गक्ष**—पुं°—पिङ्ग-क्ष—-—लंगूर
- **पिङ्गक्ष**—पुं°—पिङ्ग-क्ष—-—शिव का विशेषण
- **पिङ्गीक्षणः**—पुं°—पिङ्ग-ईक्षणः—-—शिव की उपाधि

- **पिङ्गीशः**—पुं°—पिङ्ग-ईशः—-—अग्नि का विशेषण
- **पिङ्गकपिशा**—स्त्री°—पिङ्ग-कपिशा—-—तेल चट्टा
- **पिङ्गचक्षुस्**—पुं°—पिङ्ग-चक्षुस्—-—केकड़ा
- **पिङ्गजटः**—पुं°—पिङ्ग-जटः—-—शिव का विशेषण
- **पिङ्गसारः**—पुं°—पिङ्ग-सारः—-—हरताल
- **पिङ्गस्फटिकः**—पुं°—पिङ्ग-स्फटिकः—-—'पीला बिल्लौर', गोमेद रत्न
- **पिङ्गल**—वि°—-—पिङ्ग°- सिध्मा° लच्, पिंगलाति ला + क व तारा°—ललाई लिये भूरे रंग का, पीताभ, भूरा, खाकी
- **पिङ्गलः**—पुं°—-—पिङ्ग°- सिध्मा° लच्, पिंगलाति ला + क व तारा°—खाकी रंग
- **पिङ्गलः**—पुं°—-—पिङ्ग°- सिध्मा° लच्, पिंगलाति ला + क व तारा°—अग्नि
- **पिङ्गलः**—पुं°—-—पिङ्ग°- सिध्मा° लच्, पिंगलाति ला + क व तारा°—बंदर
- **पिङ्गलः**—पुं°—-—पिङ्ग°- सिध्मा° लच्, पिंगलाति ला + क व तारा°—एक प्रकार का नेक्ला
- **पिङ्गलः**—पुं°—-—पिङ्ग°- सिध्मा° लच्, पिंगलाति ला + क व तारा°—छोटा उल्लू
- **पिङ्गलः**—पुं°—-—पिङ्ग°- सिध्मा° लच्, पिंगलाति ला + क व तारा°—एक प्रकार का साँप
- **पिङ्गलः**—पुं°—-—पिङ्ग°- सिध्मा° लच्, पिंगलाति ला + क व तारा°—सूर्य के एक अनुचर का नाम
- **पिङ्गलः**—पुं°—-—पिङ्ग°- सिध्मा° लच्, पिंगलाति ला + क व तारा°—कुबेर के एक कोष का नाम
- **पिङ्गलः**—पुं°—-—पिङ्ग°- सिध्मा° लच्, पिंगलाति ला + क व तारा°—एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम, संस्कृत के छन्दः शास्त्र का प्रणेता, उसकी कृति का नास
- **पिङ्गलम्**—नपुं°—-—पिङ्ग°- सिध्मा° लच्, पिंगलाति ला + क व तारा°—पीतल
- **पिङ्गलम्**—नपुं°—-—पिङ्ग°- सिध्मा° लच्, पिंगलाति ला + क व तारा°—पीले रंग की हरताल
- **पिङ्गला**—स्त्री°—-—पिङ्ग°- सिध्मा° लच्, पिंगलाति ला + क व तारा°—एक प्रकार का उल्लू
- **पिङ्गला**—स्त्री°—-—पिङ्ग°- सिध्मा° लच्, पिंगलाति ला + क व तारा°—शीशम का वृक्ष
- **पिङ्गला**—स्त्री°—-—पिङ्ग°- सिध्मा° लच्, पिंगलाति ला + क व तारा°—एक प्रकार की धातु
- **पिङ्गला**—स्त्री°—-—पिङ्ग°- सिध्मा° लच्, पिंगलाति ला + क व तारा°—शरीर की विशेष वाहिका
- **पिङ्गला**—स्त्री°—-—पिङ्ग°- सिध्मा° लच्, पिंगलाति ला + क व तारा°—दक्षिण देश की हथिनी
- **पिङ्गला**—स्त्री°—-—पिङ्ग°- सिध्मा° लच्, पिंगलाति ला + क व तारा°—एक गणिका जो अपनी पवित्रता तथा पावन जीवन के कारण प्रसिद्ध है
- **पिङ्गलाक्षः**—पुं°—पिङ्गल-अक्षः—-—शिव का विशेषण
- **पिङ्गलिका**—स्त्री°—-—पिंगल + ठन् + टाप्—एक प्रकार का सारस

- **पिङ्गलिका**—स्त्री°—-—पिंगल + ठन् + टाप्—एक प्रकार का उल्लू
- **पिङ्गाशः**—पुं°—-—पिंग + अश् + अण्—गाँव का मुखिया या मालिक
- **पिङ्गाशः**—पुं°—-—पिंग + अश् + अण्—एक प्रकार की मछली
- **पिङ्गाशम्**—नपुं°—-—पिंग + अश् + अण्—प्राकृत स्वर्ण
- **पिङ्गाशी**—स्त्री°—-—पिंग + अश् + अण्+ ङीप्—नील का पौधा
- **पिचण्डः**—पुं°—-—अपि + चण्ड् + घञ्—पेट, उदर
- **पिचण्डम्**—नपुं°—-—अपि + चण्ड् + घञ्—पेट, उदर
- **पिचिण्डः**—पुं°—-—अपि + चण्ड् + घञ्, अकारलोपः—पेट, उदर
- **पिचिण्डम्**—नपुं°—-—अपि + चण्ड् + घञ्, अकारलोपः, पृषो°—पेट, उदर
- **पिचण्डकः**—पुं°—-—पिचण्ड + कन्—पेटू, औदरिक
- **पिचिण्डिका**—स्त्री°—-—पिचिंड + ठन् + टाप्—पिंडली, टांग की पिंडली
- **पिचिण्डिल**—वि°—-—पिचिंड + इलच्—मोटे पेट वाला, स्थूलकाय
- **पिचुः**—पुं°—-—पच् + उ पृषो° तारा°—रूई
- **पिचुः**—पुं°—-—पच् + उ पृषो° तारा°—एक प्रकार का बाट, (दो तोल के बराबर) कर्ष
- **पिचुः**—पुं°—-—पच् + उ पृषो° तारा°—एक प्रकार का कोढ़
- **पिचुतलम्**—नपुं°—पिचुः-तलम्—-—रूई
- **पिचुमन्दः**—पुं°—पिचुः-मन्दः—-—नीम का पेड़
- **पिचुमर्दः**—पुं°—पिचुः-मर्दः—-—नीम का पेड़
- **पिचुलः**—पुं°—-—पिचु + ला + क—रूई
- **पिचुलः**—पुं°—-—पिचु + ला + क—एक प्रकार का जलकाक या समुद्री कौवा
- **पिच्चट**—वि°—-—पिच्च् +अटन्—दबाकर चपटा किया हुआ
- **पिच्चटः**—पुं°—-—-—आँखों की सूजन, नेत्र-प्रवाह
- **पिच्चटम्**—नपुं°—-—-—राँगा, जस्ता
- **पिच्चटम्**—नपुं°—-—-—सीसा
- **पिच्चा**—स्त्री°—-—पिच्च् + अच् + टाप्—१६ मोतियों की एक लड़ जिसका वज़न एक धरण (मोतियों की विशेष तोल) हो
- **पिच्छम्**—नपुं°—-—पिच्छ् + अच्—पूँछ का पर (जैसे मौर का)
- **पिच्छम्**—नपुं°—-—पिच्छ् + अच्—मोर की पूँछ

- **पिच्छम्**—नपुं॰—-—पिच्छ् + अच्—बाण के पंख
- **पिच्छम्**—नपुं॰—-—पिच्छ् + अच्—बाजू
- **पिच्छम्**—नपुं॰—-—पिच्छ् + अच्—कलगी, शिखा
- **पिच्छः**—पुं॰—-—पिच्छ् + अच्—पूँछ
- **पिच्छा**—स्त्री॰—-—पिच्छ् + अच्+ टाप्—म्यान, गिलाफ, कोष
- **पिच्छा**—स्त्री॰—-—पिच्छ् + अच्+ टाप्—चावल का मांड
- **पिच्छा**—स्त्री॰—-—पिच्छ् + अच्+ टाप्—पंक्ति, श्रेणी
- **पिच्छा**—स्त्री॰—-—पिच्छ् + अच्+ टाप्—ढेर, समुच्चय
- **पिच्छा**—स्त्री॰—-—पिच्छ् + अच्+ टाप्—रेशमीकपास के पौधे का गोंद या रस
- **पिच्छा**—स्त्री॰—-—पिच्छ् + अच्+ टाप्—केला
- **पिच्छा**—स्त्री॰—-—पिच्छ् + अच्+ टाप्—कवच
- **पिच्छा**—स्त्री॰—-—पिच्छ् + अच्+ टाप्—टाँग की पिंडली
- **पिच्छा**—स्त्री॰—-—पिच्छ् + अच्+ टाप्—साँप की विषमय लार
- **पिच्छा**—स्त्री॰—-—पिच्छ् + अच्+ टाप्—सुपारी
- **पिच्छवाणः**—पुं॰—पिच्छम्-वाणः—-—बाज़, श्येन
- **पिच्छल**—वि॰—-—पिच्छ् + लच्—चिपचिपा, चिकना, फिसलनवाला, लसलसा
- **पिच्छल**—वि॰—-—पिच्छ् + लच्—पूँछवाला
- **पिच्छलः**—पुं॰—-—पिच्छ् + लच्—चावलों का मांड, भुक्तमंड
- **पिच्छलः**—पुं॰—-—पिच्छ् + लच्—चावल की कांजी से युक्त चटनी
- **पिच्छलः**—पुं॰—-—पिच्छ् + लच्—मलाई समेत दही
- **पिच्छला**—स्त्री॰—-—पिच्छ् + लच्+टाप्—चावलों का मांड, भुक्तमंड
- **पिच्छला**—स्त्री॰—-—पिच्छ् + लच्+टाप्—चावल की कांजी से युक्त चटनी
- **पिच्छला**—स्त्री॰—-—पिच्छ् + लच्+टाप्—मलाई समेत दही
- **पिच्छलम्**—नपुं॰—-—पिच्छ् + लच्—चावलों का मांड, भुक्तमंड
- **पिच्छलम्**—नपुं॰—-—पिच्छ् + लच्—चावल की कांजी से युक्त चटनी
- **पिच्छलम्**—नपुं॰—-—पिच्छ् + लच्—मलाई समेत दही
- **पिच्छलत्वच्**—पुं॰—-—-—संतरे का पेड़ या छिल्का

- **पिञ्ज्**—अदा० आ० <पिक्ते>—-——-हल्के रंग की, पुट देना, रगना
- **पिञ्ज्**—अदा० आ० <पिक्ते>—-——-स्पर्श करना
- **पिञ्ज्**—अदा० आ० <पिक्ते>—-——-सजाना
- **पिञ्ज्**—चुरा० उभ० <पिंजयति>, <पिंजयते>—-—-—देना
- **पिञ्ज्**—चुरा० उभ० <पिंजयति>, <पिंजयते>—-—-—लेना
- **पिञ्ज्**—चुरा० उभ० <पिंजयति>, <पिंजयते>—-—-—चमकना
- **पिञ्ज्**—चुरा० उभ० <पिंजयति>, <पिंजयते>—-——-शक्तिशाली होना
- **पिञ्ज्**—चुरा० उभ० <पिंजयति>, <पिंजयते>—-——-रहना, बसना
- **पिञ्ज्**—चुरा० उभ० <पिंजयति>, <पिंजयते>—-——-चोट पहुंचाना, क्षति पहुंचाना, मार डालना
- **पिञ्जः**—पुं०—-—पिंज् + घञ्, अच् वा—चन्द्रमा
- **पिञ्जः**—पुं०—-—पिंज् + घञ्, अच् वा—कपूर
- **पिञ्जः**—पुं०—-—पिंज् + घञ्, अच् वा—हत्या, वध
- **पिञ्जः**—पुं०—-—पिंज् + घञ्, अच् वा—ढेर
- **पिञ्जम्**—नपुं०—-——-सामर्थ्य, शक्ति
- **पिञ्जा**—स्त्री०—-——-क्षति, चोट
- **पिञ्जा**—स्त्री०—-——-हल्दी
- **पिञ्जा**—स्त्री०—-—-—कपास
- **पिञ्जटः**—पुं०—-—पिंज् + अटन्—दीद, आँख की कीच
- **पिञ्जनम्**—नपुं०—-—पिंज् + ल्युट्—धुनकी, रूई धुनने का धनुषाकार उपकरण
- **पिञ्जर**—वि०—-—पिंज् + अरच्—ललाई लिये पीले रंग का खाकी, सुनहरी रंग का
- **पिञ्जरः**—पुं०—-—पिंज् + अरच्—ललाई लिये पीला या खाकी भूरा रंग
- **पिञ्जरः**—पुं०—-—पिंज् + अरच्—पीला रंग
- **पिञ्जरम्**—नपुं०—-—पिंज् + अरच्—सोना
- **पिञ्जरम्**—नपुं०—-—पिंज् + अरच्—हरताल
- **पिञ्जरम्**—नपुं०—-—पिंज् + अरच्—अस्थिपंजर
- **पिञ्जरम्**—नपुं०—-—पिंज् + अरच्—पिंजड़ा
- **पिञ्जरकम्**—नपुं०—-—पिंजर + कन्—हरताल

- **पिञ्जरित**—वि॰—-—पिंजर + इतच्—पीले रंग का, हल्के भूरे रंग का
- **पिञ्जल**—वि॰—-—पिंज् + कलच्—शोकसंतप्त, भयभीत, व्याकुल, विस्मित
- **पिञ्जल**—वि॰—-—पिंज् + कलच्—(सेना आदि) आतंकित
- **पिञ्जलम्**—नपुं॰—-—पिंज् + कलच्—हरताल
- **पिञ्जलम्**—नपुं॰—-—पिंज् + कलच्—कुश की पत्ती
- **पिञ्जालम्**—नपुं॰—-—पिंज् + आलच्—सोना,सुवर्ण
- **पिञ्जिका**—स्त्री॰—-—पिंज + ण्वुल् + टाप्, इत्वम्—पूनी, रूई का गोल गल्हा जिससे कातने पर सूत निकलता है
- **पिञ्जूषः**—पुं॰—-—पिंज् + ऊषण्—कान का मैल
- **पिञ्जटः**—पुं॰—-—पिंजट, पृषो॰—आँखों की कीच, दीद
- **पिञ्जोला**—स्त्री॰—-—पिंज् + ओल + टाप्—पत्तों की खड़खड़ाहट, पत्तों छप्पर, छत
- **पिटकः**—पुं॰—-—पिट + कन्—सन्दूक, टोकरी
- **पिटकः**—पुं॰—-—पिट + कन्—खत्ती
- **पिटकः**—पुं॰—-—पिट + कन्—फुंसी फफोला, छोटा फोड़ा, नासूर
- **पिटकः**—पुं॰—-—पिट + कन्—इन्द्र के झंडे पर एक प्रकार का आभूषण
- **पिटकम्**—नपुं॰—-—पिट + कन्—सन्दूक, टोकरी
- **पिटकम्**—नपुं॰—-—पिट + कन्—खत्ती
- **पिटकम्**—नपुं॰—-—पिट + कन्—फुंसी फफोला, छोटा फोड़ा, नासूर
- **पिटकम्**—नपुं॰—-—पिट + कन्—इन्द्र के झंडे पर एक प्रकार का आभूषण
- **पिटक्या**—स्त्री॰—-—पिटक + य + टाप्—सन्दूकों का ढेर
- **पिटाकः**—पुं॰—-—पिट् + काक बा॰—पिटारी, सन्दूक
- **पिट्टकम्**—नपुं॰—-—किट्टक, पृषो॰ कस्य पः—दाँतो का जमा हुआ मैल
- **पिठरः**—पुं॰—-—पिठ् + करन्—बर्तन, तसला, बटलोई
- **पिठरम्**—नपुं॰—-—पिठ् + करन्—बर्तन, तसला, बटलोई
- **पिठरम्**—नपुं॰—-—पिठ् + करन्—रई का डंडा
- **पिठरकः**—पुं॰—-—पिठर + कन्—बर्तन, तसला
- **पिठरकम्**—नपुं॰—-—पिठर + कन्—बर्तन, तसला
- **पिठरककपाल**—पुं॰—पिठरकः-कपाल—-—ठीकरा, खपड़ी, खप्पर

- **पिठरककपालम्**—नपुं°—पिठरकः-कपालम्—-—ठीकरा, खपड़ी, खप्पर
- **पिण्डकः**—वि°—-—पीड् + ण्वुल्, नि° साधुः—छोटा फोड़ा, फुंसी, फफोला
- **पिण्डका**—वि°—-—पीड् + ण्वुल्, नि° साधुः—छोटा फोड़ा, फुंसी, फफोला
- **पिण्ड्**—भ्वा° आ° <पिंडते>, चुरा° उभ° <पिंडयति>, <पिंडयते>—-—-—इकट्ठा करके पिंडी या गोला बनाना
- **पिण्ड्**—भ्वा° आ° <पिंडते>, चुरा° उभ° <पिंडयति>, <पिंडयते>—-—-—जोड़ना, मिलाना
- **पिण्ड्**—भ्वा° आ° <पिंडते>, चुरा° उभ° <पिंडयति>, <पिंडयते>—-—-—ढेर लगाना, इकट्ठा करना
- **पिण्ड**—वि°—-—पिण्ड् + अच्—ठोस, घन
- **पिण्ड**—वि°—-—पिण्ड् + अच्—मिला हुआ, सघन, सटा हुआ
- **पिण्डः**—पुं°—-—पिण्ड् + अच्—पिंडी, गोला, गोलक
- **पिण्डः**—पुं°—-—पिण्ड् + अच्—लौंदा, ढेला (मिट्टी का)
- **पिण्डः**—पुं°—-—पिण्ड् + अच्—कौर, ग्रास, मुंहभर कवल
- **पिण्डः**—पुं°—-—पिण्ड् + अच्—श्राद्ध में पितरों को दिया जाने वाला चावलों का पिंड
- **पिण्डः**—पुं°—-—पिण्ड् + अच्—भोजन
- **पिण्डः**—पुं°—-—पिण्ड् + अच्—जीविका, वृत्ति, निर्वाह
- **पिण्डः**—पुं°—-—पिण्ड् + अच्—दान
- **पिण्डः**—पुं°—-—पिण्ड् + अच्—मांस, आमिष
- **पिण्डः**—पुं°—-—पिण्ड् + अच्—गर्भधारण को आरंभिक अवस्था का गर्भ
- **पिण्डः**—पुं°—-—पिण्ड् + अच्—शरीर, शारीरिक ढांचा
- **पिण्डः**—पुं°—-—पिण्ड् + अच्—ढेर, संग्रहम् समुच्चय
- **पिण्डः**—पुं°—-—पिण्ड् + अच्—टांग की पिंडली
- **पिण्डः**—पुं°—-—पिण्ड् + अच्—हाथी का कुंभस्थल
- **पिण्डः**—पुं°—-—पिण्ड् + अच्—मकान के आगे का निकाला हुआ छज्जा
- **पिण्डः**—पुं°—-—पिण्ड् + अच्—धूप, या गंध द्रव्य
- **पिण्डः**—पुं°—-—पिण्ड् + अच्—जोड़, कुलयोग
- **पिण्डः**—पुं°—-—पिण्ड् + अच्—घनत्व
- **पिण्डम्**—नपुं°—-—पिण्ड् + अच्—पिंडी, गोला, गोलक
- **पिण्डम्**—नपुं°—-—पिण्ड् + अच्—लौंदा, ढेला (मिट्टी का)

- **पिण्डम्**—नपुं°—-—पिण्ड् + अच्—कौर, ग्रास, मुंहभर कवल
- **पिण्डम्**—नपुं°—-—पिण्ड् + अच्—श्राद्ध में पितरों को दिया जाने वाला चावलों का पिंड
- **पिण्डम्**—नपुं°—-—पिण्ड् + अच्—भोजन
- **पिण्डम्**—नपुं°—-—पिण्ड् + अच्—जीविका, वृत्ति, निर्वाह
- **पिण्डम्**—नपुं°—-—पिण्ड् + अच्—दान
- **पिण्डम्**—नपुं°—-—पिण्ड् + अच्—मांस, आमिष
- **पिण्डम्**—नपुं°—-—पिण्ड् + अच्—गर्भधारण को आरंभिक अवस्था का गर्भ
- **पिण्डम्**—नपुं°—-—पिण्ड् + अच्—शरीर, शारीरिक ढांचा
- **पिण्डम्**—नपुं°—-—पिण्ड् + अच्—ढेर, संग्रहम् समुच्चय
- **पिण्डम्**—नपुं°—-—पिण्ड् + अच्—टांग की पिंडली
- **पिण्डम्**—नपुं°—-—पिण्ड् + अच्—हाथी का कुंभस्थल
- **पिण्डम्**—नपुं°—-—पिण्ड् + अच्—मकान के आगे का निकाला हुआ छज्जा
- **पिण्डम्**—नपुं°—-—पिण्ड् + अच्—धूप, या गंध द्रव्य
- **पिण्डम्**—नपुं°—-—पिण्ड् + अच्—जोड़, कुलयोग
- **पिण्डम्**—नपुं°—-—पिण्ड् + अच्—घनत्व
- **पिण्डम्**—नपुं°—-—पिण्ड् + अच्—शक्ति, सामर्थ्य, ताक़त
- **पिण्डम्**—नपुं°—-—पिण्ड् + अच्—लोहा
- **पिण्डम्**—नपुं°—-—पिण्ड् + अच्—ताज़ा मक्खन
- **पिण्डम्**—नपुं°—-—पिण्ड् + अच्—सेना
- **पिण्ड कृ**—-—-—-—गोले बनाना, निष्पीडित करना, ढेर लगाना
- **पिण्डीभू**—-—-—-—गोले या लौंदे बनाना
- **पिण्डान्वाहार्य**—वि°—पिण्ड-अन्वाहार्य—-—पितरों को पिंड दान के पश्वात् खाने के योग्य
- **पिण्डान्वाहार्यकम्**—नपुं°—पिण्ड-अन्वाहार्यकम्—-—पितरों के उद्वेश्य से दिया हुआ भोजन
- **पिण्डाभ्रम्**—नपुं°—पिण्ड-अभ्रम्—-—ओला
- **पिण्डायसम्**—नपुं°—पिण्ड-अयसम्—-—इस्पात
- **पिण्डालक्तकः**—पुं°—पिण्ड-अलक्तकः—-—महावर, लाल रंग
- **पिण्डांशनः**—पुं°—पिण्ड-अंशनः—-—भिक्षुक

- **पिण्डाशः**—पुं°—पिण्ड-आशः—-—भिक्षुक
- **पिण्डाशकः**—पुं°—पिण्ड-आशकः—-—भिक्षुक
- **पिण्डाशिन्**—पुं°—पिण्ड-आशिन्—-—भिक्षुक
- **पिण्डोदकक्रिया**—स्त्री°—पिण्ड-उदकक्रिया—-—मृतव्यक्तियों के निमित्त पिण्डदान तथा जलदान, श्राद्ध और तर्पण
- **पिण्डोद्धरणम्**—नपुं°—पिण्ड-उद्धरणम्—-—पिंडदान में भाग लेना
- **पिण्डगोसः**—पुं°—पिण्ड-गोसः—-—रसगंध, लोबान की तरह का सुगंधित गोंद
- **पिण्डतैलम्**—नपुं°—पिण्ड-तैलम्—-—गंधद्रव्य विशेष, लोबान
- **पिण्डतैलकः**—नपुं°—पिण्ड-तैलकः—-—गंधद्रव्य विशेष, लोबान
- **पिण्डद**—वि°—पिण्ड-द—-—जो भोजन देता है, जीवन निर्वाह के लिए आहार देने वाला
- **पिण्डद**—वि°—पिण्ड-द—-—मृत पितरों को पिण्ड देने का अधिकारी
- **पिण्डदः**—पुं°—पिण्ड-दः—-—पिंडदान करने वाला निकटतम संबंधी पुरुष
- **पिण्डदः**—पुं°—पिण्ड-दः—-—स्वामी, अभिरक्षक
- **पिण्डदानम्**—नपुं°—पिण्ड-दानम्—-—अन्त्येष्टि क्रिया के समय पिंड देना
- **पिण्डदानम्**—नपुं°—पिण्ड-दानम्—-—अमावस्या की संध्या के समय पितरों को पिंडदान देना
- **पिण्डनिर्वपणम्**—नपुं°—पिण्ड-निर्वपणम्—-—पितरों को पिंडदान देना
- **पिण्डपातः**—पुं°—पिण्ड-पातः—-—भिक्षा देना
- **पिण्डपातिकः**—पुं°—पिण्ड-पातिकः—-—भिक्षा से जीविका चलाने वाला
- **पिण्डपादः**—पुं°—पिण्ड-पादः—-—हाथी
- **पिण्डपाद्यः**—पुं°—पिण्ड-पाद्यः—-—हाथी
- **पिण्डपुष्पः**—पुं°—पिण्ड-पुष्पः—-—अशोक वृक्ष
- **पिण्डपुष्पः**—पुं°—पिण्ड-पुष्पः—-—चीन का गुलाब
- **पिण्डपुष्पः**—पुं°—पिण्ड-पुष्पः—-—अनार
- **पिण्डपुष्पम्**—नपुं°—पिण्ड-पुष्पम्—-—अशोक वृक्ष पर फूल आना, मंजरी
- **पिण्डपुष्पम्**—नपुं°—पिण्ड-पुष्पम्—-—चीनी गुलाब का फूल
- **पिण्डपुष्पम्**—नपुं°—पिण्ड-पुष्पम्—-—कमल फूल
- **पिण्डभाज्**—वि°—पिण्ड-भाज्—-—पिंड प्राप्त करने का अधिकारी
- **पिण्डभाज्**—पुं°—पिण्ड-भाज्—-—स्वर्गीय मृत पुरुष या पितर

- **पिण्डभृतिः**—स्त्री°—पिण्ड-भृतिः—-—जीविका, जीवन निर्वाह का साधन
- **पिण्डमूलम्**—नपुं°—पिण्ड-मूलम्—-—गाजर
- **पिण्डमूलकम्**—नपुं°—पिण्ड-मूलकम्—-—गाजर
- **पिण्डयज्ञः**—पुं°—पिण्ड-यज्ञः—-—श्राद्ध करके पितरों का पिंडदान देना
- **पिण्डलेपः**—पुं°—पिण्ड-लेपः—-—पिंड का वह अंश जो हाथ में चिपका रह जाता है
- **पिण्डलोपः**—पुं°—पिण्ड-लोपः—-—(संतान न होने के कारण) पिंडदान का अभाव
- **पिण्डसंबन्धः**—पुं°—पिण्ड-संबन्धः—-—जीवित तथा मृत व्यक्ति के बीच का संबंध जिससे कि पिंडदाता की पिंडभोक्ता के प्रति पात्रता का निर्धारण किया जाय
- **पिण्डकः**—पुं°—-—पिण्ड + कै + क—लौंदा, गोला, गोलक
- **पिण्डकः**—पुं°—-—पिण्ड + कै + क—गूमड़ा या सूजन
- **पिण्डकः**—पुं°—-—पिण्ड + कै + क—भोजन का ग्रास
- **पिण्डकः**—पुं°—-—पिण्ड + कै + क—टांग की पिंडली
- **पिण्डकः**—पुं°—-—पिण्ड + कै + क—गंधद्रव्य, लोबान
- **पिण्डकः**—पुं°—-—पिण्ड + कै + क—गाजर
- **पिण्डकम्**—नपुं°—-—पिण्ड + कै + क—लौंदा, गोला, गोलक
- **पिण्डकम्**—नपुं°—-—पिण्ड + कै + क—गूमड़ा या सूजन
- **पिण्डकम्**—नपुं°—-—पिण्ड + कै + क—भोजन का ग्रास
- **पिण्डकम्**—नपुं°—-—पिण्ड + कै + क—टांग की पिंडली
- **पिण्डकम्**—नपुं°—-—पिण्ड + कै + क—गंधद्रव्य, लोबान
- **पिण्डकम्**—नपुं°—-—पिण्ड + कै + क—गाजर
- **पिण्डकः**—पुं°—-—पिण्ड + कै + क—बैताल, पिशाच
- **पिण्डनम्**—पुं°—-—पिंड् + ल्युट्—गोले या पिण्ड बनाना
- **पिण्डलः**—पुं°—-—पिंड् + कलच्—पुल, बाँध
- **पिण्डलः**—पुं°—-—पिंड् + कलच्—टीला, ऊर्ध्वभूमि या शैलशिला
- **पिण्डसः**—पुं°—-—पिंड + सन् + ड—भिक्षुक, भिक्षा पर जीवन यापन करने वाला साधु
- **पिण्डातः**—पुं°—-—पिंड + अत् + अच्—लोबान, गंधद्रव्य
- **पिण्डातः**—पुं°—-—पिंड + ऋ + अण्—साधु, भिक्षुक

- **पिण्डातः**—पुं°—-—पिंड + ऋ + अण्—ग्वाला
- **पिण्डातः**—पुं°—-—पिंड + ऋ + अण्—भैसों को चराने वाला
- **पिण्डातः**—पुं°—-—पिंड + ऋ + अण्—विकंकत वृक्ष
- **पिण्डातः**—पुं°—-—पिंड + ऋ + अण्—निन्दा की अभिव्यक्ति
- **पिण्डिः**—पुं°—-—पिंड् + इन्—पिन्नी, गोला
- **पिण्डिः**—पुं°—-—पिंड् + इन्—पहिये की नाभि
- **पिण्डिः**—पुं°—-—पिंड् + इन्—टांग की पिंडली
- **पिण्डिः**—पुं°—-—पिंड् + इन्—लौकी, घीया
- **पिण्डिः**—पुं°—-—पिंड् + इन्—घर
- **पिण्डिः**—पुं°—-—पिंड् + इन्—ताड़ की जाति का वृक्ष
- **पिण्डी** —स्त्री°—-—पिंडि + ङीष्—पिन्नी, गोला
- **पिण्डी** —स्त्री°—-—पिंडि + ङीष्—पहिये की नाभि
- **पिण्डी** —स्त्री°—-—पिंडि + ङीष्—टांग की पिंडली
- **पिण्डी** —स्त्री°—-—पिंडि + ङीष्—लौकी, घीया
- **पिण्डी** —स्त्री°—-—पिंडि + ङीष्—घर
- **पिण्डी** —स्त्री°—-—पिंडि + ङीष्—ताड़ की जाति का वृक्ष
- **पिण्डिपुष्पः**—पुं°—पिण्डिः-पुष्पः—-—अशोक वृक्ष
- **पिण्डिलेपः**—पुं°—पिण्डिः-लेपः—-—एक प्रकार का लेप या उबटन
- **पिण्डिशूरः**—पुं°—पिण्डि-शूरः—-—'गेहेशूरः' पेटू, डींग हाकने वाला, कायर, आत्मश्लाघी, भीरु, मेहरा
- **पिण्डिका**—स्त्री°—-—पिण्ड् + ण्वुल्, इत्वम्—घूम, गोलाकार सूजन
- **पिण्डिका**—स्त्री°—-—पिण्ड् + ण्वुल्, इत्वम्—टांग की पिंडली
- **पिण्डित**—वि°—-—पिण्ड् + क्त—दबा दबा कर बनाया गया गोला या पिण्डा
- **पिण्डित**—वि°—-—पिण्ड् + क्त—पिंडाकार बकाया हुआ, लौंदे जैसा
- **पिण्डित**—वि°—-—पिण्ड् + क्त—ढेर किया हुआ, बटौड़ा
- **पिण्डित**—वि°—-—पिण्ड् + क्त—मिश्रित
- **पिण्डित**—वि°—-—पिण्ड् + क्त—जोड़ा हुआ, गुणा किया हुआ
- **पिण्डित**—वि°—-—पिण्ड् + क्त—गिना हुआ, संख्यात

- **पिण्डिन्**—वि०—-—पिंड + इनि—पिंड प्राप्त करने वाला (पितर)
- **पिण्डिन्**—वि०—-—पिंड + इनि—भिखारी
- **पिण्डिन्**—पुं०—-—पिंड + इनि—पितरों को पिण्डदान देने वाला
- **पिण्डिलः**—पुं०—-—पिण्ड + इलच्—पुल, बाँध
- **पिण्डिलः**—पुं०—-—पिण्ड + इलच्—ज्योतिषी, गणक
- **पिण्डीर**—वि०—-—पिण्ड + ईर् + णिच्—फीका, रसहीन, नीरस, सूखा
- **पिण्डीरः**—वि०—-—पिण्ड + ईर् + णिच्—अनार का वृक्ष
- **पिण्डीरः**—वि०—-—पिण्ड + ईर् + णिच्—मसीक्षेपी का भीतरीं कवच
- **पिण्डीरः**—वि०—-—पिण्ड + ईर् + णिच्—समुद्रफेन
- **पिण्डोलिः**—स्त्री०—-—पिण्ड् + ओलि—खाते समय मुँह से गिरा कण, जूठन, उच्छिष्ट
- **पिण्याकः**—पुं०—-—पिष् + आक, नि० साधुः—खल (तिल या सरसों की)
- **पिण्याकः**—पुं०—-—पिष् + आक, नि० साधुः—गन्ध द्रव्य, लोबान
- **पिण्याकः**—पुं०—-—पिष् + आक, नि० साधुः—केशर
- **पिण्याकः**—पुं०—-—पिष् + आक, नि० साधुः—हींग
- **पिण्याकम्**—नपुं०—-—पिष् + आक, नि० साधुः—खल (तिल या सरसों की)
- **पिण्याकम्**—नपुं०—-—पिष् + आक, नि० साधुः—गन्ध द्रव्य, लोबान
- **पिण्याकम्**—नपुं०—-—पिष् + आक, नि० साधुः—केशर
- **पिण्याकम्**—नपुं०—-—पिष् + आक, नि० साधुः—हींग
- **पितामहः**—पुं०—-—पितृ + डामहच्—दादा, बाबा
- **पितामहः**—पुं०—-—पितृ + डामहच्—ब्रह्मा का विशेषण
- **पितृ**—पुं०—-—पाति रक्षति - पा + तृच्—पिता
- **पितरौ**—पुं०—-—-—पिता-माता, माता-पिता
- **पितरः**—पुं०—-—-—पूर्वपुरुष, पूर्वज, पिता
- **पितरः**—पुं०—-—-—पितृकुल के पितर, पितृवर्ग
- **पित्रर्जित**—वि०—पितृ-अर्जित—-—पिता द्वारा कमाई हुई पैतृक (संपत्ति)
- **पितृकर्मन्**—नपुं०—पितृ-कर्मन्—-—मृत पूर्व पुरुषों के निमित्त किया जाने वाला याग या श्राद्धकर्म
- **पितृकार्यम्**—नपुं०—पितृ-कार्यम्—-—मृत पूर्व पुरुषों के निमित्त किया जाने वाला याग या श्राद्धकर्म

- **पितृकृत्यम्**—नपुं°—पितृ-कृत्यम्—–—मृत पूर्व पुरुषों के निमित्त किया जाने वाला याग या श्राद्धकर्म
- **पितृक्रिया**—स्त्री°—पितृ-क्रिया—–—मृत पूर्व पुरुषों के निमित्त किया जाने वाला याग या श्राद्धकर्म
- **पितृकाननम्**—नपुं°—पितृ-काननम्—–—कब्रिस्तान
- **पितृकुल्या**—स्त्री°—पितृ- कुल्या—–—मलय पर्वत से निकलने वाली नदी
- **पितृगणः**—पुं°—पितृ-गणः—–—पूर्वपुरुषों के समस्त वर्ग
- **पितृगणः**—पुं°—पितृ-गणः—–—पितर, वंश प्रवर्तक जो प्रजापति के पुत्र थे
- **पितृगृहम्**—नपुं°—पितृ-गृहम्—–—पिता का घर
- **पितृगृहम्**—नपुं°—पितृ-गृहम्—–—कब्रिस्तान, जहाँ दफन किये जायँ
- **पितृघातकः**—पुं°—पितृ-घातकः—–—पिता की हत्या करने वाला
- **पितृघातिन्**—पुं°—पितृ-घातिन्—–—पिता की हत्या करने वाला
- **पितृतर्पणम्**—नपुं°—पितृ-तर्पणम्—–—पितरों को दी जाने वाली आहुति या जलदान
- **पितृतर्पणम्**—नपुं°—पितृ-तर्पणम्—–—(मार्जन के अवसर पर) पितर तथा अन्य दिवंगत पूर्वजों के निमित्त दायें हाथ से जल छोड़ना
- **पितृतर्पणम्**—नपुं°—पितृ-तर्पणम्—–—तिल
- **पितृतिथिः**—स्त्री°—पितृ-तिथिः—–—अमावस्या
- **पितृतीर्थम्**—नपुं°—पितृ-तीर्थम्—–—गया तीर्थ जहाँ जाकर पितरों के निमित्त श्राद्ध करना विशेष रूप से फलदायक विहित है
- **पितृतीर्थम्**—नपुं°—पितृ-तीर्थम्—–—अँगूठे और तर्जनी के मध्य का भाग
- **पितृदानम्**—नपुं°—पितृ-दानम्—–—पितरों के निमित्त किया जाने वाला दान
- **पितृदायः**—पुं°—पितृ-दायः—–—पिता से प्राप्त संपत्ति
- **पितृदिनम्**—नपुं°—पितृ-दिनम्—–—अमावस्या
- **पितृदेव**—वि°—पितृ-देव—–—पिता की पूजा करने वाला
- **पितृदेव**—वि°—पितृ-देव—–—पितरों की पूजा से संबद्ध
- **पितृदेवाः**—पुं°—पितृ-देवाः—–—अग्निष्वात्त आदि दिव्य पितर
- **पितृदैवत**—वि°—पितृ-दैवत—–—पितरों द्वारा अधिष्ठित
- **पितृदैवतम्**—नपुं°—पितृ-दैवतम्—–—दसवाँ (मघा) नक्षत्र
- **पितृद्रव्यम्**—नपुं°—पितृ-द्रव्यम्—–—पिता से प्राप्त संपत्ति
- **पितृपक्षः**—पुं°—पितृ-पक्षः—–—पितृकुल, पैतृक संबंध
- **पितृपक्षः**—पुं°—पितृ-पक्षः—–—पितृकुल के संबंधी

- **पितृपक्षः**—पुं°—पितृ-पक्षः—-—पितृ पक्ष आश्विन मास का कृष्ण पक्ष जिसमें पितृकृत्य करना प्रशस्त माना गया है
- **पितृपतिः**—पुं°—पितृ-पतिः—-—यम का विशेषण
- **पितृपदम्**—नपुं°—पितृ-पदम्—-—पितरों का लोक
- **पितृपितृ**—पुं°—पितृ-पितृ—-—दादा, बाबा, पितामह
- **पितृपुत्रौ**—पुं°—पितृ-पुत्रौ—-—पिता और पुत्र
- **पितृपूजनम्**—नपुं°—पितृ-पूजनम्—-—पितरों की पूजा
- **पितृपैतामह**—वि°—पितृ-पैतामह—-—पूर्व पुरुषों से प्राप्त, पैतृक, आनुवंशिक
- **पितृपैतामहाः**—ब° व°—पितृ-पैतामहाः—-—पूर्व पुरुष
- **पितृप्रसूः**—स्त्री°—पितृ-प्रसूः—-—दादी
- **पितृप्रसूः**—स्त्री°—पितृ-प्रसूः—-—सांध्यकालीन झुटपुटा
- **पितृप्राप्तः**—वि°—पितृ-प्राप्तः—-—पिता से प्राप्त
- **पितृप्राप्तः**—वि°—पितृ-प्राप्तः—-—पितृकुल क्रमागत से प्राप्त
- **पितृबन्धुः**—पुं°—पितृ-बन्धुः—-—पितृकुल के नातेदार
- **पितृबन्धुः**—नपुं°—पितृ-बन्धुः—-—पिता के संबंध से रिश्तेदारी
- **पितृभक्त**—वि°—पितृ-भक्त—-—पिता का कर्तव्य परायण भक्त
- **पितृभक्तिः**—स्त्री°—पितृ-भक्तिः—-—पिता के प्रति कर्तव्य
- **पितृभोजनम्**—नपुं°—पितृ-भोजनम्—-—पितरों को दिया गया भोजन
- **पितृभ्रातृ**—पुं°—पितृ-भ्रातृ—-—पिता का भाई, चाचा या ताऊ
- **पितृमन्दिरम्**—नपुं°—पितृ-मन्दिरम्—-—पितृगृह
- **पितृमन्दिरम्**—नपुं°—पितृ-मन्दिरम्—-—कब्रिस्तान
- **पितृमेधः**—पुं°—पितृ-मेधः—-—पितरों के निमित्त किया जाने वाला, यज्ञ, श्राद्ध
- **पितृयज्ञः**—पुं°—पितृ-यज्ञः—-—मृत पूर्व पुरुषों को प्रतिदिन तर्पण या जलदान, ब्राह्मण द्वारा अनुष्ठेय दैनिक पंच यज्ञों में से एक
- **पितृराज्**—पुं°—पितृ-राज्—-—यम का विशेषण
- **पितृराजः**—पुं°—पितृ-राजः—-—यम का विशेषण
- **पितृराजन्**—पुं°—पितृ-राजन्—-—यम का विशेषण
- **पितृरूपः**—पुं°—पितृ-रूपः—-—शिव का विशेषण
- **पितृलोकः**—पुं°—पितृ-लोकः—-—पितरों का लोक

- **पितृवंशः**—पुं°—पितृ-वंशः—-—पिता का कुल
- **पितृवनम्**—नपुं°—पितृ-वनम्—-—श्मशान, कब्रिस्तान
- **पितृवनेचरः**—पुं°—पितृ-वनेचरः—-—राक्षस, पिशाच, शिव का विशेषण
- **पितृवसतिः**—स्त्री°—पितृवसतिः—-—श्मशान, कब्रिस्तान
- **पितृसद्मन्**—नपुं°—पितृ-सद्मन्—-—श्मशान, कब्रिस्तान
- **पितृव्रतः**—पुं°—पितृ-व्रतः—-—श्राद्ध, पितृकर्म
- **पितृश्राद्धम्**—नपुं°—पितृ-श्राद्धम्—-—पिता या मृत पूर्व पुरुषों के निमित्त किया जाने वाला श्राद्ध
- **पितृष्वसृ**—स्त्री°—पितृ-स्वसृ—-—भुवा, फूफी
- **पितृष्वस्रीयः**—पुं°—पितृ-ष्वस्रीयः—-—फुफेरा भाई
- **पितृसंनिभ**—वि°—पितृ-संनिभ—-—पितृतुल्य, पितृवत्
- **पितृसूः**—पुं°—पितृ-सूः—-—पितामह, दादा, बाबा
- **पितृसूः**—पुं°—पितृ-सूः—-—सांध्यकालीन झुटपुटा
- **पितृस्थानः**—पुं°—पितृ-स्थानः—-—अभिभावक (जो पिता के स्थान में है)
- **पितृस्थानीयः**—पुं°—पितृ-स्थानीयः—-—अभिभावक (जो पिता के स्थान में है)
- **पितृहत्या**—स्त्री°—पितृ-हत्या—-—पिता का वध
- **पितृहन्**—पुं°—पितृ-हन्—-—पिता की हत्या करने वाला
- **पितृक**—वि°—-—पितुः आगतम् - पितृ + कन्—पैतृक, कुलक्रमागत, आनुवंशिक
- **पितृक**—वि°—-—पितुः आगतम् - पितृ + कन्—और्ध्वदैहिक
- **पितृव्यः**—पुं°—-—पितृ + व्यत्—पिता का भाई, चाचा
- **पितृव्यः**—पुं°—-—पितृ + व्यत्—कोई भी वयोवृद्ध पुरुष-नातेदार
- **पित्तम्**—नपुं°—-—अपि + दो + क्त अपेः अकारलोपः—पित्तदोष, शरीर में स्थित तीन दोषों में एक
- **पित्ततीसारः**—पुं°—पित्तम्-अतीसारः—-—पित्त के प्रकोप से उत्पन्न दस्तों का रोग
- **पित्तोपहतः**—वि°—पित्तम्-उपहतः—-—पित्त से ग्रस्त
- **पित्तकोषः**—पुं°—पित्तम्-कोषः—-—पित्ताशय
- **पित्तक्षोभः**—पुं°—पित्तम्-क्षोभः—-—पित्तदोष की अधिकता, पित्तप्रकोप
- **पित्तज्वरः**—पुं°—पित्तम्-ज्वरः—-—पित्त के प्रकोप से होने वाला ज्वर या बुख़ार
- **पित्तप्रकृति**—वि°—पित्तम्-प्रकृति—-—जिसके शरीर में पित्त की प्रधानता हो, या जो क्रोधी स्वभाव का हो

- **पित्तप्रकोपः**—पुं॰—पित्तम्-प्रकोपः—-—पित्त का आधिक्य या पित्त का कुपित हो जाना
- **पित्तरक्तम्**—नपुं॰—पित्तम्-रक्तम्—-—रक्तपित्त नामक रोग
- **पित्तवायुः**—पुं॰—पित्तम्-वायुः—-—पित्त के प्रकोप से पेट में वायु का पैदा होना, अफारा
- **पित्तविदग्ध**—वि॰—पित्तम्-विदग्ध—-—पित्त के प्रकोप से आक्रांत
- **पित्तशमन**—वि॰—पित्तम्-शमन—-—पित्त के प्रकोप को शान्त करने वाला
- **पित्तहर**—वि॰—पित्तम्-हर—-—पित्त के प्रकोप को शान्त करने वाला
- **पित्तल**—वि॰—-—पित्त + ला + क—पित्त बहुल, जिसमें पित्त की अधिकता हो
- **पित्तलम्**—नपुं॰—-—पित्त + ला + क—पीतल
- **पित्तलम्**—नपुं॰—-—पित्त + ला + क—भोजपत्र का वृक्ष विशेष
- **पित्र्य**—वि॰—-—पितुः इदम्- पितृ + यत्, रीङ् आदेशः—पैतृक, बपौती का, पुश्तैनी
- **पित्र्य**—वि॰—-—पितुः इदम्- पितृ + यत्, रीङ् आदेशः—मृत पितरों से संबंध रखने वाला
- **पित्र्य**—वि॰—-—पितुः इदम्- पितृ + यत्, रीङ् आदेशः—और्ध्वदैहिकक्रियासंबंधी
- **पित्र्यः**—पुं॰—-—पितुः इदम्- पितृ + यत्, रीङ् आदेशः—ज्येष्ठ भाई
- **पित्र्यः**—पुं॰—-—-—माघमास
- **पित्र्या**—स्त्री॰—-—-—मघा नक्षत्रपुंज
- **पित्र्या**—स्त्री॰—-—-—पूर्णिमा और अमावस्या का दिन
- **पित्र्यम्**—नपुं॰—-—-—मघा नाम का नक्षत्र
- **पित्र्यम्**—नपुं॰—-—-—अंगूठे और तर्जनी के बीच का हथेली का भाग (पितरों के लिए पूज्य)
- **पित्सत्**—पुं॰—-—पत् + सन्, इस् अभ्यासलोपः, पित्स + शतृ—पक्षी
- **पित्सलः**—पुं॰—-—पत् + सल्, इत्—मार्ग, पथ
- **पिधानम्**—नपुं॰—-—अपि + धा + ल्युट् अपेः अकारलोपः—ढकना, छिपाना
- **पिधानम्**—नपुं॰—-—अपि + धा + ल्युट् अपेः अकारलोपः—म्यान
- **पिधानम्**—नपुं॰—-—अपि + धा + ल्युट् अपेः अकारलोपः—चादर, चोगा
- **पिधानम्**—नपुं॰—-—अपि + धा + ल्युट् अपेः अकारलोपः—ढक्कन, चोटी
- **पिधायक**—वि॰—-—अपि + धा + ण्वुल्, अपेः अकारलोपः—ढकने वाला, छिपाने वाला, प्रच्छन्न रखने वाला
- **पिनद्ध**—भू॰ क॰ कृ॰—-—अपि + नह् + क्त, अपेः अकारलोपः—जकड़ा हुआ, बंधा हुआ या धारण किया हुआ
- **पिनद्ध**—भू॰ क॰ कृ॰—-—अपि + नह् + क्त, अपेः अकारलोपः—सुसज्जित

- **पिनद्ध**—भू० क० कृ०—-—अपि + नह् + क्त, अपेः अकारलोपः—छोपाया हुआ, प्रच्छन्न
- **पिनद्ध**—भू० क० कृ०—-—अपि + नह् + क्त, अपेः अकारलोपः—चुभाया हुआ, छिदा हुआ
- **पिनद्ध**—भू० क० कृ०—-—अपि + नह् + क्त, अपेः अकारलोपः—लपेटा हुआ, ढका हुआ, आवेष्टित
- **पिनाकः**—पुं०—-—पा रक्षणे आकान् नुट् धातोरात इत्वस्—शिव का धनुष
- **पिनाकः**—पुं०—-—पा रक्षणे आकान् नुट् धातोरात इत्वस्—त्रिशूल
- **पिनाकः**—पुं०—-—पा रक्षणे आकान् नुट् धातोरात इत्वस्—सामान्य धनुष
- **पिनाकः**—पुं०—-—पा रक्षणे आकान् नुट् धातोरात इत्वस्—लाठी या छड़ी
- **पिनाकः**—पुं०—-—पा रक्षणे आकान् नुट् धातोरात इत्वस्—धूल की बौछार
- **पिनाकम्**—नपुं०—-—पा रक्षणे आकान् नुट् धातोरात इत्वस्—शिव का धनुष
- **पिनाकम्**—नपुं०—-—पा रक्षणे आकान् नुट् धातोरात इत्वस्—त्रिशूल
- **पिनाकम्**—नपुं०—-—पा रक्षणे आकान् नुट् धातोरात इत्वस्—सामान्य धनुष
- **पिनाकम्**—नपुं०—-—पा रक्षणे आकान् नुट् धातोरात इत्वस्—लाठी या छड़ी
- **पिनाकम्**—नपुं०—-—पा रक्षणे आकान् नुट् धातोरात इत्वस्—धूल की बौछार
- **पिनाकगोप्तृ**—पुं०—पिनाकः-गोप्तृ—-—शिव की उपाधियाँ
- **पिनाकधृक्**—पुं०—पिनाकः-धृक्—-—शिव की उपाधियाँ
- **पिनाकधृत्**—पुं०—पिनाकः-धृत्—-—शिव की उपाधियाँ
- **पिनाकपाणिः**—पुं०—पिनाकः-पाणिः—-—शिव की उपाधियाँ
- **पिनाकिन्**—पुं०—-—पिनाक + इनि—शिव का विशेषण
- **पिपतिषत्**—पुं०—-—पत् + सन् + शतृ—पक्षी
- **पिपतिषु**—वि०—-—पत् + सन् + उ—गिरने की इच्छा वाला, पतनशील
- **पिपतिषुः**—पुं०—-—पत् + सन् + उ—पक्षी
- **पिपासा**—स्त्री०—-—पा + सन् + अ + टाप्—प्यास
- **पिपासित**—वि०—-—पा + सन् + क्त—प्यासा
- **पिपासिन्**—वि०—-—पिपासा + इनि—प्यासा
- **पिपासु**—वि०—-—पा + सन् + उ—प्यासा
- **पिपीलः**—पुं०—-—अपि + पील् + अच्, अपेः अकारलोपः—चीटा, चींटी
- **पिपीली**—स्त्री०—-—पिपील + ङीष्—चीटा, चींटी

- **पिपीलकः**—पुं॰—-—पिपील + कन्—मकौड़ा
- **पिपीलिकः**—पुं॰—-—अपि + पील् +इकन्, अपेः अकारलोपः—चींटा
- **पिपीलिकम्**—नपुं॰—-—-—एक प्रकार का सोना (चीटों द्वारा एकत्र किया हुआ माना जाना जाता है)
- **पिपीलिका**—स्त्री॰—-—पिपीलक + टाप्, इत्वम्—चींटी
- **पिपीलिकापरिसर्पणम्**—नपुं॰—पिपीलिका-परिसर्पणम्—-—चींटोयों का इधर उधर दौड़ना
- **पिप्पलः**—पुं॰—-—पा + अलच्, पृषो॰ —पीपल का पेड़
- **पिप्पलः**—पुं॰—-—पा + अलच्, पृषो॰ —चूचुक
- **पिप्पलः**—पुं॰—-—पा + अलच्, पृषो॰ —जाकेट या कोट की आस्तीन
- **पिप्पलम्**—नपुं॰—-—पा + अलच्, पृषो॰ —बरबंटा
- **पिप्पलम्**—नपुं॰—-—पा + अलच्, पृषो॰ —पीपल का बरबंटा
- **पिप्पलम्**—नपुं॰—-—पा + अलच्, पृषो॰ —सम्भोग
- **पिप्पलम्**—नपुं॰—-—पा + अलच्, पृषो॰ —जल
- **पिप्पलिः**—स्त्री॰—-—पृ + अचल् + ङीष् पृषो॰ पक्षे ह्रस्वाभावः—पिपरामूल, पीपल नाम की औषध
- **पिप्पली**—स्त्री॰—-—पृ + अचल् + ङीष् —पिपरामूल, पीपल नाम की औषध
- **पिप्पिका**—स्त्री॰—-—-—दाँतों पर जमी हुई मैल का पपड़ी
- **पिप्लुः**—पुं॰—-—अपि + प्लु + डु अपेः अकारलोपः—निशान, तिल, मस्सा, चित्ती
- **पियालः**—पुं॰—-—पीय् + कालन्, ह्रस्वः—एक वृक्षविशेष (चिरौंजी)
- **पियालम्**—नपुं॰—-—-—इस वृक्ष (चिरौंजी) का फल
- **पिल्**—चुरा॰ उभ॰ <पेलयति>, <पेलयते>—-—-—फेंकना, डालना
- **पिल्**—चुरा॰ उभ॰ <पेलयति>, <पेलयते>—-—-—भेंजना, चलता करना
- **पिल्**—चुरा॰ उभ॰ <पेलयति>, <पेलयते>—-—-—उत्तेजित करना, उकसाना
- **पिलुः**—पुं॰—-—-—बाण
- **पिलुः**—पुं॰—-—-—अणु
- **पिलुः**—पुं॰—-—-—कीड़ा
- **पिलुः**—पुं॰—-—-—हाथी
- **पिलुः**—पुं॰—-—-—ताड का तना
- **पिलुः**—पुं॰—-—-—फूल

- **पिलुः**—पुं॰———–—ताड के वृक्षों का समूह
- **पिलुः**—पुं॰———–—'पीलु' नाम का एक वृक्ष
- **पिल्ल**—वि॰——–क्लिन्ने चक्षुषी यस्य, क्लिन्न + अच्, पिल्लादेशः—चौंधियाई आँखों वाला
- **पिल्लम्**—नपुं॰———–—चुँधियाने वाली आँख
- **पिल्लका**—स्त्री॰—-—पिल्ल + कै + क + टाप्—हथिनी
- **पिश्**—तुदा॰ उभ॰ <पिशति>, <पिशते>———–—रूप देना, वनाना, निर्माण करना
- **पिश्**—तुदा॰ उभ॰ <पिशति>, <पिशते>———–—संघटित होना
- **पिश्**—तुदा॰ उभ॰ <पिशति>, <पिशते>———–—प्रकाश करना, उजाला करना
- **पिशङ्ग**—वि॰——–पिश् + अंगच् किच्च—ललाई लिये भूरे रंग का, लाल सा खाकी रंग का
- **पिशाङ्गः**—पुं॰———–—खाकी रंग
- **पिशाचः**—पुं॰—-—पिशितमाचमति-आ + चम्, बा॰ ड पृषो॰—भूत, बैताल, शैतान, प्रेत, दुष्ट प्राणी
- **पिशाचालयः**—पुं॰—पिशाचः-आलयः——वह स्थान जहाँ फास्फोरस के कारण अंधेरे में प्रकाश होता हो
- **पिशाचद्रुः**—पुं॰—पिशाचः-द्रुः——एक प्रकार का वृक्ष (सिहोर)
- **पिशाचबाधा**—स्त्री॰—पिशाचः-बाधा——पिशाच द्वारा आविष्ट होना
- **पिशाचसञ्चारः**—पुं॰—पिशाचः-सञ्चारः——पिशाच द्वारा आविष्ट होना
- **पिशाचभाषा**—स्त्री॰—पिशाचः-भाषा——शैतानों की भाषा, पैशाची प्राकृत जिसका प्रयोग नाटकों में मिलता है, संस्कृत का अपभ्रंश
- **पिशाचसभम्**—नपुं॰—पिशाचसभम्—-—शैतानों की सभा
- **पिशाचसभम्**—नपुं॰—पिशाचसभम्—-—भूतों का घर, प्रेतावास
- **पिशाचकिन्**—पुं॰——पिशाच + इनि, कुक्—धन के स्वामी कुबेर का विशेषण
- **पिशाचिका**—स्त्री॰——पिशाच + ङीष् + कन् + टाप्, ह्रस्वः—पिशाचिनी, भूतनी, स्त्री पिशाच
- **पिशाचिका**—स्त्री॰——पिशाच + ङीष् + कन् + टाप्, ह्रस्वः—किसी पदार्थ के लिए शैतानी या पैशाचिकी आसक्ति
- **पिशाचिका**—स्त्री॰——पिशाच + ङीष् + कन् + टाप्, ह्रस्वः—युद्ध के लिए घोर अनुरक्ति
- **पिशाची**—स्त्री॰——पिशाच + ङीष् —युद्ध के लिए घोर अनुरक्ति
- **पिशितम्**—नपुं॰——पिश् + क्त—मांस
- **पिशिताशनः**—पुं॰—पिशितम्-अशनः——मांसभक्षी, पिशाच, बैताल
- **पिशिताशनः**—पुं॰—पिशितम्-अशनः——मनुष्यभक्षी, नरभक्षी
- **पिशिताशः**—पुं॰—पिशितम्-आशः——मांसभक्षी, पिशाच, बैताल

- **पिशिताशः**—पुं°—पिशितम्-आशः—-—मनुष्यभक्षी, नरभक्षी
- **पिशिताशिन्**—पुं°—पिशितम्-आशिन्—-—मांसभक्षी, पिशाच, बैताल
- **पिशिताशिन्**—पुं°—पिशितम्-आशिन्—-—मनुष्यभक्षी, नरभक्षी
- **पिशितभुज्**—पुं°—पिशितम्-भुज्—-—मांसभक्षी, पिशाच, बैताल
- **पिशितभुज्**—पुं°—पिशितम्-भुज्—-—मनुष्यभक्षी, नरभक्षी
- **पिशुन**—वि°—-—पिश् + उनच्, किच्च—संकेत करने वाला, बतलाने वाला, प्रकट करने वाला, प्रदर्शन करने वाला, परिचायक
- **पिशुन**—वि°—-—पिश् + उनच्, किच्च—स्मरणीय, स्मारक
- **पिशुन**—वि°—-—पिश् + उनच्, किच्च—मिथ्यानिन्दक, चुगलखोर, चुगली खाने वाला
- **पिशुन**—वि°—-—पिश् + उनच्, किच्च—दुष्ट, क्रूर, प्रद्वेषी
- **पिशुन**—वि°—-—पिश् + उनच्, किच्च—अधम, कमीना, तिरस्करणीय
- **पिशुन**—वि°—-—पिश् + उनच्, किच्च—मूर्ख, मन्दबुद्धि
- **पिशुनः**—पुं°—-—-—मिथ्या निन्दा करने वाला, चुगलखोर, ढिंढोरवा, अधम, भेदिया, द्रोही, कलंकित करने वाला
- **पिशुनः**—पुं°—-—-—रूई
- **पिशुनः**—पुं°—-—-—नारद का विशेषण
- **पिशुनः**—पुं°—-—-—कौवा
- **पिशुनवचनम्**—नपुं°—पिशुन-वचनम्—-—चुगली, गुणनिन्दा, बदनामी
- **पिशुनवाच्यम्**—नपुं°—पिशुन-वाच्यम्—-—चुगली, गुणनिन्दा, बदनामी
- **पिष्**—रुधा° पर° <पिनष्टि>, <पिष्ट>—-—-—कूटना, पीसना, चूरा करना, कुचलना
- **पिष्**—रुधा° पर° <पिनष्टि>, <पिष्ट>—-—-—चोट पहुंचाना, क्षति पहुंचाना,नष्ट करना, मार डालना
- **उत्पिष्**—रुधा° पर°—उद्-पिष्—-—कुचलना, पीस डालना
- **निष्पि**—रुधा° पर°—निस्-पिष्—-—कूटना, चूर्ण करना, कण कण करना, (तं) निष्पिपेक्ष क्षितौ क्षिप्रं पूर्णकुंभमिवांभसि @ महा° , शिलानिष्पिष्टमुद्गरः @ रघु° १२/७३
- **निष्पि**—रुधा° पर°—निस्-पिष्—-—चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, खरोंच मारना
- **पिष्ट**—भू° क° कृ°—-—पिष् + क्त—पिसा हुआ, चूर्ण किया हुआ, कुचला हुआ
- **पिष्ट**—भू° क° कृ°—-—पिष् + क्त—रगड़ा हुआ, भींचा हुआ, (हाथ) मिलाया हुआ
- **पिष्टम्**—नपुं°—-—-—पिसी हुई कोई चीज, पिसा हुआ मसाला
- **पिष्टम्**—नपुं°—-—-—आटा, बेसन

- **पिष्टम्**—नपुं॰—————सीसा
- **पिष्टोदकम्**—नपुं॰—पिष्ट-उदकम्———आटे में मिला हुआ जल
- **पिष्टपचनम्**—नपुं॰—पिष्ट-पचनम्———आटा भूनने के लिए कड़ाही, पतीली आदि
- **पिष्टपशुः**—पुं॰—पिष्ट-पशुः———आटे का बना हुआ किसी पशु का पुतला
- **पिष्टपिण्डः**—पुं॰—पिष्ट-पिण्डः———आटे की बाटी या पेड़ी
- **पिष्टपूरः**—पुं॰—पिष्ट-पूरः———एक प्रकार की मिठाई
- **पिष्टपेषः**—पुं॰—पिष्ट-पेषः———पिसे को पीसना, व्यर्थ काम करना, बिना किसी लाभ के दोहराना
- **पिष्टपेषणम्**—नपुं॰—पिष्ट-पेषणम्———पिसे को पीसना, व्यर्थ काम करना, बिना किसी लाभ के दोहराना
- **पिष्टन्यायः**—पुं॰—पिष्ट-न्यायः———पिसे को पीसना, यह न्याय उस समय प्रयुक्त होता हैजब कोई किये हुए कार्य को ही दुबारा करने लगता है, क्योंकि पिसे को पीसना फाल्तू और व्यर्थ कार्य है
- **पिष्टमेहः**—पुं॰—पिष्ट-मेहः———एक प्रकार का मधुमेह
- **पिष्टवर्तिः**—पुं॰—पिष्ट-वर्तिः———एक प्रकार का लड्डू जो घी, दाल या चावल से बनाया जाता है
- **पिष्टसौरभम्**—नपुं॰—पिष्ट-सौरभम्———(घिसा हुआ) चन्दन
- **पिष्टकः**—पुं॰———पिष्ट + कन्—बाटी जो किसी अनाज के आटे से बनाई गई हो
- **पिष्टकः**—पुं॰———पिष्ट + कन्—सिकी हुई बाटी, रोटी, पूरी
- **पिष्टकम्**—नपुं॰———पिष्ट + कन्—बाटी जो किसी अनाज के आटे से बनाई गई हो
- **पिष्टकम्**—नपुं॰———पिष्ट + कन्—सिकी हुई बाटी, रोटी, पूरी
- **पिष्टकम्**—नपुं॰———पिष्ट + कन्—तिलकुट, तिल के लड्डू
- **पिष्टपः**—पुं॰———विशन्ति अत्र सुकृतिनः- विश् + कप् नि॰—विश्व का एक भाग
- **पिष्टपम्**—नपुं॰———विशन्ति अत्र सुकृतिनः- विश् + कप् नि॰—विश्व का एक भाग
- **पिष्टातः**—पुं॰———पिष्ट + अत् + अण्—सुगंधयुक्त या खुशबूदार चूर्ण
- **पिष्टिक**—पुं॰———पिष्ट + ठन्—चावलों के आटे की बनी टिकिया
- **पिस्**—भ्वा॰ पर॰ <पेसति>—————जाना, चलना
- **पिस्**—चुरा॰ उभ॰ <पेसयति>, <पेसयते>—————जाना
- **पिस्**—चुरा॰ उभ॰ <पेसयति>, <पेसयते>—————मजबूत बनना
- **पिस्**—चुरा॰ उभ॰ <पेसयति>, <पेसयते>—————रहना
- **पिस्**—चुरा॰ उभ॰ <पेसयति>, <पेसयते>—————चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना

- **पिस्**—चुरा० उभ० <पेसयति>, <पेसयते>—-—-—देना या लेना
- **पिहित**—भू० क० कृ०—-—अपि + धा + क्त, अपेः आकारलोपः—बन्द, अवरुद्ध, रुका हुआ, जकड़ा हुआ
- **पिहित**—भू० क० कृ०—-—अपि + धा + क्त, अपेः आकारलोपः—ढका हुआ, छिपा हुआ, गुप्त
- **पिहित**—भू० क० कृ०—-—अपि + धा + क्त, अपेः आकारलोपः—भरा हुआ, ढका हुआ
- **पी**—दिवा० आ० <पीयते>—-—-—पीना
- **पीचम्**—नपुं०—-—-—ठोडी
- **पीठम्**—नपुं०—-—पेठन्ति उपविशन्ति अत्र- पि + घञ् वा० दीर्घः पीयते अत्र पी + ठक्—आसन (तिपाई, चौकी, कुर्सी पलंग आदि)
- **पीठम्**—नपुं०—-—पेठन्ति उपविशन्ति अत्र- पि + घञ् वा० दीर्घः पीयते अत्र पी + ठक्—ब्रह्मचारी के बैठने के लिए कुशासन
- **पीठम्**—नपुं०—-—पेठन्ति उपविशन्ति अत्र- पि + घञ् वा० दीर्घः पीयते अत्र पी + ठक्—देवासन, वेदी
- **पीठम्**—नपुं०—-—पेठन्ति उपविशन्ति अत्र- पि + घञ् वा० दीर्घः पीयते अत्र पी + ठक्—पादपीठ, आधार
- **पीठम्**—नपुं०—-—पेठन्ति उपविशन्ति अत्र- पि + घञ् वा० दीर्घः पीयते अत्र पी + ठक्—बैठने की विशेष मुद्रा
- **पीठकेलिः**—पुं०—पीठम्-केलिः—-—विश्वासपात्र पुरुष परोपजीवी
- **पीठगर्भः**—पुं०—पीठम्-गर्भः—-—मूर्ति के आधार में वह गड्ढा जिसमें वह जमाई जाती है
- **पीठनायिका**—स्त्री०—पीठम्-नायिका—-—वह चौदह वर्ष की कन्या जो दुर्गा-पूजा के अवसर पर दुर्गा मान कर पूजी जाती हैं
- **पीठभूः**—स्त्री०—पीठम्-भूः—-—आधार, नींव, भूगृह, तहखाना
- **पीठमर्दः**—पुं०—पीठम्-मर्दः—-—सहचर, परोपजीवी, जो नाटक में बड़े २ कार्यों में नायक की सहायता करता है
- **पीठमर्दिका**—स्त्री०—पीठम्-मर्दिका—-—वह स्त्री है जो नायिका के प्रेमी नायक को प्राप्त कराने में उसको सहायता करती है
- **पीठमर्दिका**—स्त्री०—पीठम्-मर्दिका—-—नृत्य शिक्षक जो वेश्याओं को नृत्यकला की शिक्षा देता हैं
- **पीठसर्प**—वि०—पीठम्-सर्प—-—लंगड़ा, विकलांग
- **पीठिका**—स्त्री०—-—पीठ + ङीष् + क + टाप्, ह्रस्वः—आसन (चौकी, तिपाई)
- **पीठिका**—स्त्री०—-—पीठ + ङीष् + क + टाप्, ह्रस्वः—पीढ़ा, आधार
- **पीठिका**—स्त्री०—-—पीठ + ङीष् + क + टाप्, ह्रस्वः—पुस्तक का अनुभाग या प्रभाग
- **पीड्**—चुरा० उभ० <पीडयति>, <पीडयते>, <पीड़ित>—-—-—पीडित करना, सताना, नुक़सान पहुँचाना, घायल करना, क्षति पहुँचाना, तंग करना, छेड़ना, परेशान करना
- **पीड्**—चुरा० उभ० <पीडयति>, <पीडयते>, <पीड़ित>—-—-—विरोध करना, सामना करना
- **पीड्**—चुरा० उभ० <पीडयति>, <पीडयते>, <पीड़ित>—-—-—(नगर आदि को) घेरना
- **पीड्**—चुरा० उभ० <पीडयति>, <पीडयते>, <पीड़ित>—-—-—दबाना, भींचना, निचोड़ना, चुटकी काटना

- **पीड्**—चुरा° उभ° <पीडयति>, <पीडयते>, <पीड़ित>—-—-—दबाना, नष्ट करना
- **पीड्**—चुरा° उभ° <पीडयति>, <पीडयते>, <पीड़ित>—-—-—अवहेलना करना
- **पीड्**—चुरा° उभ° <पीडयति>, <पीडयते>, <पीड़ित>—-—-—किसी अशुभ वस्तु से ढकना
- **पीड्**—चुरा° उभ° <पीडयति>, <पीडयते>, <पीड़ित>—-—-—ग्रहण-ग्रस्त होना
- **अभिपीड्**—चुरा° उभ° —अभि-पीड्—-—दबाना, निचोड़ना, पीड़ित करना
- **अवपीड्**—चुरा° उभ° —अव-पीड्—-—दबाना, निचोड़ना, पीड़ित करना
- **आपीड्**—चुरा° उभ° —आ-पीड्—-—दबाना, भार से झुका देना
- **उत्पीड्**—चुरा° उभ° —उद्-पीड्—-—मसलना, घिसना, रगड़ना
- **उत्पीड्**—चुरा° उभ° —उद्-पीड्—-—पिचकाना, ऊपर को फेंकना, धकेलना, पेलना
- **उपपीड्**—चुरा° उभ° —उप-पीड्—-—चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, दुःखी करना, तंग करना, परेशान करना
- **उपपीड्**—चुरा° उभ° —उप-पीड्—-—अत्याचार करना, बरबाद करना
- **निपीड्**—चुरा° उभ° —नि-पीड्—-—तंग करना, पीडित करना, परेशान करना, दंड देना, कष्ट देना
- **निपीड्**—चुरा° उभ° —नि-पीड्—-—निचोड़ना, दबाना, कस कर पकड़ना, हथिया लेना, थामना
- **निष्पीड्**—चुरा° उभ° —निस्-पीड्—-—निचोड़ना
- **परिपीड्**—चुरा° उभ° —परि-पीड्—-—पीडा देना, कष्ट देना, परेशान करना
- **परिपीड्**—चुरा° उभ° —परि-पीड्—-—दबाना, भींचना
- **पीडद्र**—चुरा° उभ° —पीड्-द्र—-—अत्यधिक पीडित करना, यातना देना, सताना
- **पीडद्र**—चुरा° उभ° —पीड्-द्र—-—दबाना, भींचना
- **संपीड्**—चुरा° उभ° —सम्-पीड्—-—भींचना, चुटको काटना
- **पीडकः**—पुं°—-—पीड् + ण्वुल्—अत्याचारी
- **पीडनम्**—नपुं°—-—पीड् + ल्युट्—पीडित करना, कष्ट देना, अत्याचार करना, पीड़ा पहुँचाना
- **पीडनम्**—नपुं°—-—पीड् + ल्युट्—भींचना, दबाना
- **पीडनम्**—नपुं°—-—पीड् + ल्युट्—दवाने का उपकरण
- **पीडनम्**—नपुं°—-—पीड् + ल्युट्—लेना, थामना, पकड़ना
- **पीडनम्**—नपुं°—-—पीड् + ल्युट्—बर्बाद करना, उजाड़ना
- **पीडनम्**—नपुं°—-—पीड् + ल्युट्—अनाज गाहना
- **पीडनम्**—नपुं°—-—पीड् + ल्युट्—ग्रहण

- **पीडनम्**—नपुं०—-—पीड् + ल्युट्—ध्वनि निरोध, स्वरोच्चारण का एक दोष
- **पीडा**—स्त्री०—-—पीड् + अङ् + टाप्—दर्द, कष्ट, भोगना, सताना, परेशानी, वेदना
- **पीडा**—स्त्री०—-—पीड् + अङ् + टाप्—क्षति पहुँचाना, हानि पहुँचाना, नुकसान पहुँचाना
- **पीडा**—स्त्री०—-—पीड् + अङ् + टाप्—उजाड़ना, बर्बाद करना
- **पीडा**—स्त्री०—-—पीड् + अङ् + टाप्—उल्लंघन, अतिक्रमण
- **पीडा**—स्त्री०—-—पीड् + अङ् + टाप्—प्रतिबंध
- **पीडा**—स्त्री०—-—पीड् + अङ् + टाप्—दया, करुणा
- **पीडा**—स्त्री०—-—पीड् + अङ् + टाप्—ग्रहण
- **पीडा**—स्त्री०—-—पीड् + अङ् + टाप्—सुमिरनी, शिरोमाल्य
- **पीडा**—स्त्री०—-—पीड् + अङ् + टाप्—सरलवृक्ष
- **पीडाकर**—वि०—-—-—कष्टकर, पीड़ामय
- **पीडित**—भू० क० कृ०—-—पीड् + क्त— पीडा से युक्त, तंग किया हुआ, सताया हुआ, अत्याचारग्रस्त, नोचा गया
- **पीडित**—भू० क० कृ०—-—पीड् + क्त—निचोड़ा हुआ, दबाया हुआ
- **पीडित**—भू० क० कृ०—-—पीड् + क्त—विवाहित पाणिगृहीत
- **पीडित**—भू० क० कृ०—-—पीड् + क्त—अतिक्रान्त, तोड़ा हुआ
- **पीडित**—भू० क० कृ०—-—पीड् + क्त—उजाड़ा हुआ, बर्बाद किया हुआ
- **पीडित**—भू० क० कृ०—-—पीड् + क्त—ग्रहणग्रस्त
- **पीडित**—भू० क० कृ०—-—पीड् + क्त—बाँधा हुआ, बंधनग्रस्त
- **पीडितम्**—नपुं०—-—पीड् + क्त—दर्द करना, क्षति पहुँचाना, तंग करना
- **पीडितम्**—नपुं०—-—पीड् + क्त—मैथुन का विशेष प्रकार, रतिबंध
- **पीडितम्**—अव्य०—-—पीड् + क्त—मजबूती से, सटा कर, दृढ़ता पूर्वक
- **पीत**—वि०—-—पा + क्त—पीया हुआ, चढ़ाया हुआ
- **पीत**—वि०—-—पा + क्त—परिव्याप्त, सिक्त, भरा हुआ, संतृप्त
- **पीत**—वि०—-—पा + क्त—पीला
- **पीतः**—पुं०—-—पा + क्त—पीला रंग
- **पीतः**—पुं०—-—पा + क्त—पुखराज
- **पीतः**—पुं०—-—पा + क्त—कुसुम्भ

- **पीतम्**—नपुं°—-—पा + क्त—सोना
- **पीतम्**—नपुं°—-—पा + क्त—हरताल
- **पीताब्धिः**—पुं°—पीत-अब्धिः—-—अगस्त्य का विशेषण
- **पीताम्बरः**—पुं°—पीत-अम्बरः—-—विष्णु का विशेषण
- **पीताम्बरः**—पुं°—पीत-अम्बरः—-—अभिनेता
- **पीताम्बरः**—पुं°—पीत-अम्बरः—-—पीले वस्त्र पहने हुए साधु सन्यासी
- **पीतारुण**—वि°—पीत-अरुण—-—पीताभरक्त, पीलेपन से युक्त लाल
- **पीताश्मन्**—पुं°—पीत-अश्मन्—-—पुखराज
- **पीतकदली**—स्त्री°—पीत-कदली—-—केले का एक भेद, सुनहरी केला
- **पीतकंदम्**—नपुं°—पीत-कंदम्—-—गाजर
- **पीतकाबेरम्**—नपुं°—पीत-काबेरम्—-—केसर
- **पीतकाबेरम्**—नपुं°—पीत-काबेरम्—-—पीतल
- **पीतकाष्ठम्**—नपुं°—पीत-काष्ठम्—-—पीला चंदन
- **पीतगन्धम्**—नपुं°—पीत-गन्धम्—-—पीला चंदन
- **पीतचन्दनम्**—नपुं°—पीत-चन्दनम्—-—एक प्रकार का चंदन
- **पीतचन्दनम्**—नपुं°—पीत-चन्दनम्—-—केसर
- **पीतचन्दनम्**—नपुं°—पीत-चन्दनम्—-—हल्दी
- **पीतचम्पकः**—पुं°—पीत-चम्पकः—-—दीपक
- **पीततुण्डः**—पुं°—पीत-तुण्डः—-—कारंडव पक्षी
- **पीतदारु**—नपुं°—पीत-दारु—-—एक प्रकार की चीड का पेड़, या सरल वृक्ष
- **पीतदुग्धा**—स्त्री°—पीत-दुग्धा—-—दुधारु गाय
- **पीतद्रुः**—पुं°—पीत-द्रुः—-—सरल वृक्ष
- **पीतपादा**—स्त्री°—पीत-पादा—-—एक प्रकार का पक्षी, मैना
- **पीतमणिः**—पुं°—पीत-मणिः—-—पुखराज
- **पीतमाक्षिकम्**—नपुं°—पीत-माक्षिकम्—-—एक प्रकार का क्षनिज द्रव्य, सोनामाखी
- **पीतमूलकम्**—नपुं°—पीत-मूलकम्—-—गाजर
- **पीतरक्त**—वि°—पीत-रक्त—-—पीलेपन से युक्त लाल रंग का, संतरे के रंग का

- **पीतरक्तम्**—नपुं°—पीत-रक्तम्—-—एक प्रकार का पीले रंग का रत्न, पुखराज
- **पीतरागः**—पुं°—पीत-रागः—-—पीला रंग
- **पीतरागः**—पुं°—पीत-रागः—-—मोम
- **पीतरागः**—पुं°—पीत-रागः—-—पद्मकेसर
- **पीतबालुका**—स्त्री°—पीत-बालुका—-—हल्दी
- **पीतवासस्**—पुं°—पीत-वासस्—-—कृष्ण का विशेषण
- **पीतसारः**—पुं°—पीत-सारः—-—पुखराज
- **पीतसारः**—पुं°—पीत-सारः—-—चन्दन का वृक्ष
- **पीतसारम्**—नपुं°—पीत-सारम्—-—पीली चंदन की लकड़ी
- **पीतसारि**—नपुं°—पीत-सारि—-—अंजन, सुर्मा
- **पीतस्कन्धः**—पुं°—पीत-स्कन्धः—-—सूअर
- **पीतस्फटिकः**—पुं°—पीत-स्फटिकः—-—पुखराज
- **पीतहरित**—पुं°—पीत-हरित—-—पीलापन लिये हुए हरा
- **पीतकम्**—नपुं°—-—पीत + कन्—हरताल
- **पीतकम्**—नपुं°—-—पीत + कन्—पीतल
- **पीतकम्**—नपुं°—-—पीत + कन्—केसर
- **पीतकम्**—नपुं°—-—पीत + कन्—शहद
- **पीतकम्**—नपुं°—-—पीत + कन्—अगर की लकड़ी
- **पीतकम्**—नपुं°—-—पीत + कन्—चन्दन की लकड़ी
- **पीतनः**—पुं°—-—पीत करोति इति- पीत + णिच् + ल्युट् वा पीतं नयति इति पीत + नी + ड—गूलर की जाति का वृक्ष
- **पीतनम्**—नपुं°—-—पीत करोति इति- पीत + णिच् + ल्युट् वा पीतं नयति इति पीत + नी + ड—हरताल
- **पीतनम्**—नपुं°—-—पीत करोति इति- पीत + णिच् + ल्युट् वा पीतं नयति इति पीत + नी + ड—केसर
- **पीतल**—वि°—-—पीत + ला + क—पीले रंग का
- **पीतलः**—पुं°—-—पीत + ला + क—पीला रंग
- **पीतलम्**—नपुं°—-—पीत + ला + क—पीतल
- **पीतिः**—पुं°—-—पा + क्तिच्—घोड़ा
- **पीतिः**—स्त्री°—-—पा + क्तिन्—घूँट, पीना

- **पीतिः**—स्त्री°—-—पा + क्तिन्—मदिरालय
- **पीतिः**—स्त्री°—-—पा + क्तिन्—हाथी की सूँड
- **पीतिका**—स्त्री°—-—पीत + ठन् + टाप्, इत्वम्—केसर
- **पीतिका**—स्त्री°—-—पीत + ठन् + टाप्, इत्वम्—हल्दी
- **पीतिका**—स्त्री°—-—पीत + ठन् + टाप्, इत्वम्—पीली चमेली, या सोनजही
- **पीतुः**—पुं°—-—पा + कुन्—सूर्य
- **पीतुः**—पुं°—-—पा + कुन्—काल
- **पीतुः**—पुं°—-—पा + कुन्—अग्नि
- **पीतुः**—पुं°—-—पा + कुन्—पेय
- **पीतुः**—पुं°—-—पा + कुन्—जल
- **पीथिः**—पुं°—-—पीति, पृषो° तस्य थः—घोड़ा
- **पीन**—वि°—-—प्याय + क्त, संप्रसारणे दीर्घः—स्थूल, मांसल, हृष्टपुष्ट
- **पीन**—वि°—-—प्याय + क्त, संप्रसारणे दीर्घः—भरापूरा, विशाल, मोटा
- **पीनोध्नी**—स्त्री°—पीन-ऊधस्—-—भरे पूरे ऐन (औड़ी) वाली गाय
- **पीनवक्षस्**—वि°—पीन-वक्षस्—-—विशालवक्षःस्थल वाला, भरी पूरी छाती वाला
- **पीनसः**—पुं°—-—पीनं स्थूलमपि जनं स्यति नाशयति-पीन + सो + क—नाक परदुष्प्रभाव डालने वाला जुकाम
- **पीनसः**—पुं°—-—पीनं स्थूलमपि जनं स्यति नाशयति-पीन + सो + क—खांसी, जुकाम
- **पीयुः**—पुं°—-—पा + कु नि° युक्, ईत्वम्—कौवा
- **पीयुः**—पुं°—-—पा + कु नि° युक्, ईत्वम्—सूर्य
- **पीयुः**—पुं°—-—पा + कु नि° युक्, ईत्वम्—अग्नि
- **पीयुः**—पुं°—-—पा + कु नि° युक्, ईत्वम्—उल्लू
- **पीयुः**—पुं°—-—पा + कु नि° युक्, ईत्वम्—काल
- **पीयुः**—पुं°—-—पा + कु नि° युक्, ईत्वम्—सोना
- **पीयूषः**—पुं°—-—पीय् + ऊषन्—सुधा
- **पीयूषः**—पुं°—-—पीय् + ऊषन्—दूध
- **पीयूषः**—पुं°—-—पीय् + ऊषन्—ब्याने के बाद पहले सात दिन का गाय का दूध
- **पीयूषम्**—नपुं°—-—पीय् + ऊषन्—सुधा

- **पीयूषम्**—नपुं°—-—पीय् + ऊषन्—दूध
- **पीयूषम्**—नपुं°—-—पीय् + ऊषन्—ब्याने के बाद पहले सात दिन का गाय का दूध
- **पीयूषमहस्**—पुं°—पीयूषः-महस्—-—चन्द्रमा
- **पीयूषमहस्**—पुं°—पीयूषः-महस्—-—कपूर
- **पीयूषरुचिः**—पुं°—पीयूषः-रुचिः—-—चन्द्रमा
- **पीयूषरुचिः**—पुं°—पीयूषः-रुचिः—-—कपूर
- **पीयूषवर्षः**—पुं°—पीयूषः-वर्षः—-—अमृतवर्षा
- **पीयूषवर्षः**—पुं°—पीयूषः-वर्षः—-—चन्द्रमा
- **पीयूषवर्षः**—पुं°—पीयूषः-वर्षः—-—कपूर
- **पीलकः**—पुं°—-—पील् + ण्वुल्—मकौड़ा
- **पीलुः**—पुं°—-—पील् + उ—बाण
- **पीलुः**—पुं°—-—पील् + उ—अणु
- **पीलुः**—पुं°—-—पील् + उ—कीड़ा
- **पीलुः**—पुं°—-—पील् + उ—हाथी
- **पीलुः**—पुं°—-—पील् + उ—ताड का तना
- **पीलुः**—पुं°—-—पील् + उ—फूल
- **पीलुः**—पुं°—-—पील् + उ—ताड के वृक्षों का समूह
- **पीलुः**—पुं°—-—पील् + उ—'पीलु' नाम का एक वृक्ष
- **पीलुकः**—पुं°—-—पीलु + कन्—चींटा
- **पीव्**—भ्वा° पर° <पिवति>—-—-—मोटा- ताजा या हृष्ट पुष्ट होना
- **पीवन्**—वि°—-—प्यै + क्वनिप्, संप्र° दीर्घः—भरापूरा, स्थूल, मोटा
- **पीवन्**—वि°—-—प्यै + क्वनिप्, संप्र° दीर्घः—हृष्ट पुष्ट, बलवान्
- **पीवन्**—पुं°—-—-—पवन
- **पीवर**—वि°—-—प्यै + ष्वरच्, सं प्र° दीर्घः—स्थूल, विशाल, हृष्टपुष्ट, मांसल, मोटाताजा
- **पीवर**—वि°—-—प्यै + ष्वरच्, सं प्र° दीर्घः—फूला हुआ मोटा
- **पीवरः**—पुं°—-—-—कछुवा
- **पीवरी**—स्त्री°—-—-—तरुणी

- **पीवरी**—स्त्री°—-—-—गाय
- **पीवा**—स्त्री°—-—पीयते- पी + व + टाप्—जल
- **पुंस्**—चुरा° उभ°<पुंसयति>,<पुंसयते> —-—-—कुचलना, पीसना
- **पुंस्**—चुरा° उभ°<पुंसयति>,<पुंसयते> —-—-—पीडा देना, कष्ट देना, दण्ड देना
- **पुंस्**—पुं°—-—या + डुयसुन्—पुरुष
- **पुंस्**—पुं°—-—या + डुयसुन्—नर
- **पुंस्**—पुं°—-—या + डुयसुन्—इंसान, मानव
- **पुंस्**—पुं°—-—या + डुयसुन्—मनुष्य, मनुष्य जाति, क़ौम, राष्ट्र
- **पुंस्**—पुं°—-—या + डुयसुन्—टहलुआ, सेवक
- **पुंस्**—पुं°—-—या + डुयसुन्—पुंल्लिंग शब्द
- **पुंस्**—पुं°—-—या + डुयसुन्—पुंल्लिग
- **पुंस्**—पुं°—-—या + डुयसुन्—आत्मा
- **पुंसानुज**—वि°—पुंस्-अनुज—-—वह जिसका बड़ा भाई भी हो
- **पुंसानुजा**—स्त्री°—पुंस्-अनुजा—-—लकड़ा होने के बाद जन्म लेने वाली लड़की अर्थात् बड़े भाई वाली लड़की
- **पुमपत्यम्**—नपुं°—पुंस्-अपत्यम्—-—लड़का
- **प्रमर्थः**—पुं°—पुंस्-अर्थः—-—पुरुष या मनुष्य का उद्देश्य
- **प्रमर्थः**—पुं°—पुंस्-अर्थः—-—मानव-जीवन के चार ध्येयों में से कोई सा एक, अर्थात् धर्म, अर्थ, काम या मोक्ष
- **प्रमाख्या**—स्त्री°—पुंस्-आख्या—-—नर की संज्ञा
- **पुमाचार**—पुं°—पुंस्-आचारः—-—पुरुष का आचार, चालचलन
- **पुंस्कटिः**—स्त्री°—पुंस्-कटिः—-—पुरुष की कमर
- **पुंस्कामा**—स्त्री°—पुंस्-कामा—-—पति की कामना करने वाली स्त्री
- **पुंस्कोकिलः**—पुं°—पुंस्-कोकिलः—-—नर-कोयल
- **पुंखैटः**—पुं°—पुंस्-खैटः—-—नरग्रह
- **पुंगवः**—पुं°—पुंस्-गवः—-—बैल, सांड
- **पुंगवः**—पुं°—पुंस्-गवः—-—मुख्य, सर्वोत्तम, श्रेष्ठतम, पूज्य या किसी भी श्रेणी का प्रमुख व्यक्ति
- **पुंस्केतुः**—पुं°—पुंस्-केतुः—-—शिव का विशेषण
- **पुंश्चली**—पुं°—पुंस्-चली—-—रंडी का बेटा

- **पुंश्चिह्नम्**—नपुं°—पुंस्-चिह्नम्—–—शिश्न, पुरुष की जननेन्द्रिय
- **पुंजन्मन्**—नपुं°—पुंस्-जन्यन्—–—लड़के का पैदा होना, नर-सन्तान का जन्म लेना
- **पुंयोगः**—पुं°—पुंस्-योगः—–—वह नक्षत्रपुंज जिसमें कि लड़कों या नरसन्तान का जन्म होता है
- **पुंदासः**—पुं°—पुंस्-दासः—–—पुरुष-दास
- **पुंध्वजः**—पुं°—पुंस्-ध्वजः—–—प्राणिमात्र में किसी भी जाति का नर
- **पुंध्वजः**—पुं°—पुंस्-ध्वजः—–—चूहा
- **पुन्नक्षत्रम्**—नपुं°—पुंस्-नक्षत्रम्—–—नर जाति का नक्षत्र
- **पुन्नागः**—पुं°—पुंस्-नागः—–—पुरुषों में हाथी, पूज्य या आदरणीय पुरुष
- **पुन्नागः**—पुं°—पुंस्-नागः—–—सफेद हाथी
- **पुन्नागः**—पुं°—पुंस्-नागः—–—सफ़ेद कमल
- **पुन्नागः**—पुं°—पुंस्-नागः—–—जायफल
- **पुन्नागः**—पुं°—पुंस्-नागः—–—नाग केशर नाम का वृक्ष
- **पुन्नाटः**—पुं°—पुंस्-नाटः—–—इस नाम का वृक्ष
- **पुन्नाडः**—पुं°—पुंस्-नाडः—–—इस नाम का वृक्ष
- **पुन्नामधेयः**—पुं°—पुंस्-नामधेयः—–—नर, पुरुषवाची
- **पुन्नामन्**—वि°—पुंस्-नामन्—–—पुंलिग नामधारी
- **पुन्नामन्**—पुं°—पुंस्-नामन्—–—पुंनाग नामक वृक्ष
- **पुंपुत्रः**—पुं°—पुंस्-पुत्रः—–—नर-सन्तान, लड़का
- **पुंप्रजननम्**—नपुं°—पुंस्-प्रजननम्—–—पुरुष की जननेन्द्रिय, लिङ्ग
- **पुंभूमन्**—पुं°—पुंस्-भूमन्—–—वह शब्द ज़ो केवल पुंल्लिंग बहुबचनांत ही होता है
- **पुंयोगः**—पुं°—पुंस्-योगः—–—पुरुष के साथ सहवास या संबंध
- **पुंयोगः**—पुं°—पुंस्-योगः—–—किसी पुरुष या पति का संकेत
- **पुंरत्नम्**—नपुं°—पुंस्-रत्नम्—–—श्रेष्ठ
- **पुंराशिः**—पुं°—पुंस्-राशिः—–—नरराशि
- **पुंरूपम्**—नपुं°—पुंस्-रूपम्—–—नर का रूप
- **पुंल्लिङ्ग**—वि°—पुंस्-लिंग—–—पुरुषवाचक शब्द, पुरुष वाचक
- **पुंल्लिङ्गम्**—वि°—पुंस्-लिंगम्—–—पुरुष वाचक चिह्न

- **पुंल्लिङ्गम्**—वि°—पुंस्-लिंगम्—-—वीर्य, पौरुष
- **पुंल्लिङ्गम्**—वि°—पुंस्-लिंगम्—-—पुरुष की जननेन्द्रिय
- **पुंवत्सः**—पुं°—पुंस्-वत्सः—-—बछड़ा
- **पुंवृषः**—पुं°—पुंस्-वृषः—-—छछूँदर
- **पुंवेष**—वि°—पुंस्-वेष—-—पुरुष की वेश भूषा में, मर्दानी पोशाक पहने हुए
- **पुंसवन**—वि°—पुंस्-सवन—-—पुत्रोत्पत्ति करने वाला
- **पुंसवनम्**—नपुं°—पुंस्-सवनम्—-—सर्व प्रथम परिष्कारात्मक या शुद्धीकरण संबंधी संस्कार, स्त्री के गर्भाधान के प्रथम चिह्न प्रकट होने पर पुत्रोत्पत्ति के उद्देश्य से यह संस्कार किया जाता है
- **पुंसवनम्**—नपुं°—पुंस्-सवनम्—-—भ्रूण, गर्भ
- **पुंसवनम्**—नपुं°—पुंस्-सवनम्—-—दूध
- **पुंस्त्वम्**—नपुं°—-—पुंस् + त्व—पुरुष का लक्षण, वीर्य, पुरुषत्व, मर्दानगी
- **पुंस्त्वम्**—नपुं°—-—पुंस् + त्व—शुक्र, वीर्य
- **पुंस्त्वम्**—नपुं°—-—पुंस् + त्व—पुंलिंग
- **पुंवत्**—अव्य°—-—पुंस् + वति—पुरुष की भांति
- **पुंवत्**—अव्य°—-—पुंस् + वति—पुंलिंग में
- **पुक्कश**—वि°—-—पुक् कुत्सितं कशति गच्छति- पुक् + कश् + अच्—अधम, नीच
- **पुक्कस**—वि°—-—पुक् कुत्सितं कशति गच्छति- पुक् + कस् + अच्—अधम, नीच
- **पुक्कशः**—पुं°—-—पुक् कुत्सितं कशति गच्छति- पुक् + कस् + अच्—एक पतित वर्णसंकर जाति, शूद्र स्त्री में उत्पन्न निषाद की सन्तान
- **पुक्कसः**—पुं°—-—पुक् कुत्सितं कशति गच्छति- पुक् + कस् + अच्—एक पतित वर्णसंकर जाति, शूद्र स्त्री में उत्पन्न निषाद की सन्तान
- **पुक्कशी**—स्त्री°—-—-—कलो नील का पौधा
- **पुक्कशी**—स्त्री°—-—-—पुक्कस जाति की स्त्री
- **पुक्कसी**—स्त्री°—-—-—कलो नील का पौधा
- **पुक्कसी**—स्त्री°—-—-—पुक्कस जाति की स्त्री
- **पुङ्खः**—पुं°—-—पुमांसं खनति-पुम् + खन् + ड—बाण का पंख वाला भाग
- **पुङ्खः**—पुं°—-—पुमांसं खनति-पुम् + खन् + ड—बाज, श्येन
- **पुङ्खम्**—नपुं°—-—पुमांसं खनति-पुम् + खन् + ड—बाण का पंख वाला भाग
- **पुङ्खम्**—नपुं°—-—पुमांसं खनति-पुम् + खन् + ड—बाज, श्येन

- **पुङ्खितः**—वि°—-—पुंख + इतच्—पंखों से युक्त
- **पुङ्गः**—पुं°—-—पुञ्ज, पृषो°—ढेर, संग्रह, समुच्चय
- **पुङ्गम्**—नपुं°—-—पुञ्ज, पृषो°—ढेर, संग्रह, समुच्चय
- **पुङ्गलः**—पुं°—-—पुंग + ला + क—आत्मा
- **पुच्छः**—पुं°—-—पुच्छ् + अच्—पूँछ
- **पुच्छः**—पुं°—-—पुच्छ् + अच्—वालों वाली पूँछ
- **पुच्छः**—पुं°—-—पुच्छ् + अच्—मोर की पूँछ
- **पुच्छः**—पुं°—-—पुच्छ् + अच्—पिछला भाग
- **पुच्छः**—पुं°—-—पुच्छ् + अच्—किसी वस्तु का किनारा
- **पुच्छम्**—नपुं°—-—पुच्छ् + अच्—पूँछ
- **पुच्छम्**—नपुं°—-—पुच्छ् + अच्—वालों वाली पूँछ
- **पुच्छम्**—नपुं°—-—पुच्छ् + अच्—मोर की पूँछ
- **पुच्छम्**—नपुं°—-—पुच्छ् + अच्—पिछला भाग
- **पुच्छम्**—नपुं°—-—पुच्छ् + अच्—किसी वस्तु का किनारा
- **पुच्छाग्रम्**—नपुं°—पुच्छ-अग्रम्—-—पूँछ का सिरा
- **पुच्छमूलम्**—नपुं°—पुच्छ-मूलम्—-—पूँछ का सिरा
- **पुच्छकण्टकः**—पुं°—पुच्छ-कण्टकः—-—बिच्छू
- **पुच्छजाहम्**—नपुं°—पुच्छ-जाहम्—-—पूंछ की जड़
- **पुच्छटिः**—स्त्री°—-—पुच्छ् + अट् + इन्—अंगुलियाँ चटकाना
- **पुच्छटी**—स्त्री°—-—पुच्छटि + ङीष्—अंगुलियाँ चटकाना
- **पुच्छिन्**—पुं°—-—पुच्छ + इनि—मुर्गा
- **पुञ्जः**—पुं°—-—पुंस् + जि + ड—ढेर, समुच्चय, मात्रा, राशि, संग्रह
- **पुञ्जि**—स्त्री°—-—पिञ्ज् + इनि, पृषो°—ढेर, मात्रा, राशि
- **पुञ्जिकः**—पुं°—-—पुंजि + कन्—ओला
- **पुञ्जित**—वि°—-—पुंज + इतच्—ढेरी, संगृहीत, एक जगह लगाया हुआ ढेर
- **पुञ्जित**—वि°—-—पुंज + इतच्—मिलाकर भींचा हुआ, दबाया हुआ
- **पुट्**—तुदा° पर° <पुटति>—-—-—आलिंगन करना, लिपटना

- **पुट्**—तुदा॰ पर॰ <पुटति>—-—-—अन्तर्जटित करना, बटना, गूथना
- **पुट्**—चुरा॰ उभ॰ <पुटयति>,<पुटयते>—-—-—मिलना
- **पुट्**—चुरा॰ उभ॰ <पुटयति>,<पुटयते>—-—-—बांधना, जकड़ना
- **पुट्**—चुरा॰ उभ॰ <पोटयति>, <पोटयते>—-—-—पीसना, चूर्ण करना
- **पुट्**—चुरा॰ उभ॰ <पोटयति>, <पोटयते>—-—-—बोलना
- **पुट्**—चुरा॰ उभ॰ <पोटयति>, <पोटयते>—-—-—चमकना
- **पुट्**—भ्वा॰ पर॰ <पोटति>—-—-—पीसना
- **पुट्**—भ्वा॰ पर॰ <पोटति>—-—-—मलना
- **पुटः**—पुं॰—-—पुट्क—तह
- **पुटः**—पुं॰—-—पुट्क—खोखली जगह, विवर, खोखलापन
- **पुटः**—पुं॰—-—पुट्क—दोना, पत्तों की तहकरके बनाया गया, पुस्तड़ा
- **पुटः**—पुं॰—-—पुट्क—कोई उथला पात्र
- **पुटः**—पुं॰—-—पुट्क—फली, छीमी
- **पुटः**—पुं॰—-—पुट्क—म्यान, ढकना, आच्छादन
- **पुटः**—पुं॰—-—पुट्क—पलक
- **पुटः**—पुं॰—-—पुट्क—घोड़े का सुम
- **पुटः**—पुं॰—-—पुट्क—रत्नपेटी
- **पुटम्**—नपुं॰—-—-—तह
- **पुटम्**—नपुं॰—-—-—खोखली जगह, विवर, खोखलापन
- **पुटम्**—नपुं॰—-—-—दोना, पत्तों की तहकरके बनाया गया, पुस्तड़ा
- **पुटम्**—नपुं॰—-—-—कोई उथला पात्र
- **पुटम्**—नपुं॰—-—-—फली, छीमी
- **पुटम्**—नपुं॰—-—-—म्यान, ढकना, आच्छादन
- **पुटम्**—नपुं॰—-—-—पलक
- **पुटम्**—नपुं॰—-—-—घोड़े का सुम
- **पुटम्**—नपुं॰—-—-—जायफल
- **पुटोजम्**—नपुं॰—पुटः-उटजम्—-—सफेद छतरी

- **पुटोदकः**—पुं°—पुटः-उदकः—-—नारियल
- **पुटग्रीवः**—पुं°—पुटः-ग्रीवः——-—बर्तन, कलसा, घड़ा
- **पुटग्रीवः**—पुं°—पुटः-ग्रीवः——-—तांबे का पात्र
- **पुटपाकः**—पुं°—पुटः-पाकः—-—औषधियाँ तैयार करने की विशेष पद्धति
- **पुटभेदः**—पुं°—पुटः-भेदः—-—पुर, नगर
- **पुटभेदः**—पुं°—पुटः-भेदः—-—एक प्रकार का वाद्ययंत्र, आतोद्य
- **पुटभेदः**—पुं°—पुटः-भेदः—-—जलावर्त या भंवर
- **पुटभेदनम्**—नपुं°—पुट-भेदनम्——-—कस्बा या नगर
- **पुटकम्**—नपुं°—-—पुट + कन्—तह
- **पुटकम्**—नपुं°—-—पुट + कन्—उथला या कम गहरा प्याला
- **पुटकम्**—नपुं°—-—पुट + कन्—दोना या पुस्तड़ा
- **पुटकम्**—नपुं°—-—पुट + कन्—कमल
- **पुटकम्**—नपुं°—-—पुट + कन्—जायफल
- **पुटकिनी**—स्त्री°—-—पुटक + इनि + ङीप्—कमल
- **पुटकिनी**—स्त्री°—-—पुटक + इनि + ङीप्—कमल समूह
- **पुटिका**—स्त्री°—-—पुट् +ण्वुल् + टाप्, इत्वम्—इलायची
- **पुटित**—वि°—-—पुट् + क्त—रगड़ा हुआ, पीसा हुआ
- **पुटित**—वि°—-—पुट् + क्त—सिकुड़ा हुआ
- **पुटित**—वि°—-—पुट् + क्त—टाँका लगाया हुआ, सीया हुआ
- **पुटित**—वि°—-—पुट् + क्त—खण्डित
- **पुटी**—स्त्री°—-—पुट + ङीप्—
- **पुड्**—तुदा° पर° —-—-—छोड़ना, त्याग देना, तिलांजलि दे देना
- **पुड्**—तुदा° पर° —-—-—पदच्युत करना
- **पुड्**—तुदा° पर° —-—-—निकालना, बिदा करना, खोजना
- **पुण्ड्**—भ्वा° पर° <पुण्डति>—-—-—पीसना, चूरा करना, चूर्ण बना देना या पीस डालना
- **पुण्डः**—पुं°—-—पुण्ड् + घञ्—चिह्न, निशान
- **पुण्डरीकम्**—नपुं°—-—पुंड् + ईकन्, नि°—श्वेतकमल

- **पुण्डरीकम्**—नपुं°—-—पुंड् + ईकन्, नि°—सफ़ेद छाता
- **पुण्डरीकः**—पुं°—-—-—सफ़ेद रंग
- **पुण्डरीकः**—पुं°—-—-—दक्षिणपूर्व या आग्नेयी दिशा का अधिष्ठातृदिक्पाल
- **पुण्डरीकः**—पुं°—-—-—व्याघ्र
- **पुण्डरीकः**—पुं°—-—-—एक प्रकार का साँप
- **पुण्डरीकः**—पुं°—-—-—एक प्रकार का चावल
- **पुण्डरीकः**—पुं°—-—-—एक प्रकार का कोढ़
- **पुण्डरीकः**—पुं°—-—-—हाथी का बुख़ार
- **पुण्डरीकः**—पुं°—-—-—एक प्रकार का आम वृक्ष
- **पुण्डरीकः**—पुं°—-—-—घड़ा, जलपात्र
- **पुण्डरीकः**—पुं°—-—-—आग
- **पुण्डरीकः**—पुं°—-—-—मस्तक पर सम्प्रदाय द्योतक तिलक
- **पुण्डरीकाक्षः**—पुं°—पुण्डरीकः-अक्षः—-—विष्णु का विशेषण
- **पुण्डरीकप्लवः**—पुं°—पुण्डरीकः-प्लवः—-—एक तरह का पक्षी
- **पुण्डरीकमुखी**—पुं°—पुण्डरीकः-मुखी—-—एक तरह की जोक
- **पुण्ड्रः**—पुं°—-—पुंड् + रक्—एक प्रकार का गन्ना (लाल रंग का) पौंधा
- **पुण्ड्रः**—पुं°—-—पुंड् + रक्—कमल
- **पुण्ड्रः**—पुं°—-—पुंड् + रक्—श्वेत कमल
- **पुण्ड्रः**—पुं°—-—पुंड् + रक्—(मस्तक पर) सम्प्रदायद्योतक तिलक (चन्दनादिक का)
- **पुण्ड्रः**—पुं°—-—पुंड् + रक्—कीड़ा
- **पुण्ड्रा**—पुं°,ब° व°—-—पुंड् + रक्—एक देश तथा उसके निवासियों का नाम
- **पुण्ड्रकेलिः**—पुं°—पुण्ड्र-केलिः—-—हाथी
- **पुण्ड्रकः**—पुं°—-—पुंड्र + कन्—एक प्रकार का ईख (लाल रंग का) पौंधा
- **पुण्ड्रकः**—पुं°—-—पुंड्र + कन्—सम्प्रदाय द्योतक तिलक
- **पुण्य**—वि°—-—पू° + यण्, णुक्, ह्रस्वः—पवित्र, पुनीत, शुचि
- **पुण्य**—वि°—-—पू° + यण्, णुक्, ह्रस्वः—अच्छा, भला, गुणी, सच्चा, न्याय
- **पुण्य**—वि°—-—पू° + यण्, णुक्, ह्रस्वः—शुभ, कल्याणकारी, भाग्यशाली, अनुकूल (दिन आदि)

- **पुण्य**—वि॰—-—पू॰ + यण्, णुक्, ह्रस्वः—रुचिकर, सुहावना, प्रिय, सुन्दर
- **पुण्य**—वि॰—-—पू॰ + यण्, णुक्, ह्रस्वः—मधुर, गंधयुक्त
- **पुण्य**—वि॰—-—पू॰ + यण्, णुक्, ह्रस्वः—औपचारिक, उत्सव या संस्कार संबंधी
- **पुण्यम्**—नपुं॰—-—-—सद्गुण, धार्मिक या नैतिक गुण
- **पुण्यम्**—नपुं॰—-—-—सद्गुणसंपन्न कृत्य, प्रशस्य कार्य
- **पुण्यम्**—नपुं॰—-—-—पवित्रता, पवित्रीकरण
- **पुण्यम्**—नपुं॰—-—-—पशुओं को पानी पिलाने के लिए कूँड
- **पुण्या**—स्त्री॰—-—-—पवित्र तुलसी
- **पुण्याहम्**—नपुं॰—पुण्य-अहम्—-—मंगलमय या शुभ दिवस
- **पुण्यवाचनम्**—नपुं॰—पुण्य-वाचनम्—-—बहुत से धार्मिक संस्कारो के आरंभ में तीन बार उच्चारण करना 'यह शुभदिवस है'
- **पुण्योदयः**—पुं॰—पुण्य-उदयः—-—सौभाग्य का प्रभात
- **पुण्योद्यान**—वि॰—पुण्य-उद्यान—-—सुन्दर उद्यान रखने वाला
- **पुण्यकर्तृ**—पुं॰—पुण्य-कर्तृ—-—स्तुत्य या गुणवान् पुरुष
- **पुण्योकर्मन्**—वि॰—पुण्य-कर्मन्—-—स्तुत्य कार्यों के करने वाला, खरा, ईमानदार
- **पुण्योकर्मन्**—नपुं॰—पुण्य-कर्मन्—-—स्तुत्य कार्य
- **पुण्यकालः**—पुं॰—पुण्य-कालः—-—शुभ समय
- **पुण्यकीर्ति**—वि॰—पुण्य-कीर्ति—-—अच्छे नाम वाला, यशस्वी, विख्यात
- **पुण्यकृत्**—वि॰—पुण्य-कृत्—-—सद्गुणसंपन्न, प्रशंसनीय, स्तुत्य
- **पुण्यकृत्या**—स्त्री॰—पुण्य-कृत्या—-—धर्मकार्य, ऐसा काम जिसके करने से पुण्य हो
- **पुण्यक्षेत्रम्**—नपुं॰—पुण्य-क्षेत्रम्—-—पवित्रस्थान, तीर्थस्थान
- **पुण्यक्षेत्रम्**—नपुं॰—पुण्य-क्षेत्रम्—-—'पुण्यभूमि' अर्थात् आर्यावर्त
- **पुण्यगंध**—वि॰—पुण्य-गंध—-—मधुर गंध से युक्त
- **पुण्यगृहम्**—नपुं॰—पुण्य-गृहम्—-—बह स्थान जहाँ अन्न आदि ख़ैरात बाँटी जाय
- **पुण्यगृहम्**—नपुं॰—पुण्य-गृहम्—-—देवालय
- **पुण्यजनः**—पुं॰—पुण्य-जनः—-—सद्गुणी
- **पुण्यजनः**—पुं॰—पुण्य-जनः—-—राक्षस, पिशाच
- **पुण्यजनः**—पुं॰—पुण्य-जनः—-—यक्ष

- **पुण्यीश्वरः**—पुं°—पुण्य-ईश्वरः—-—कुबेर का विशेषण
- **पुण्यजित**—वि°—पुण्य-जित—-—पुण्यद्वारा प्राप्त किया हुआ
- **पुण्यतीर्थम्**—नपुं°—पुण्य-तीर्थम्—-—तीर्थयात्रा का शुभस्थान
- **पुण्यदर्शन**—वि°—पुण्य-दर्शन—-—सुन्दर
- **पुण्यदर्शनः**—पुं°—पुण्य-दर्शनः—-—नीलकंठपक्षी
- **पुण्यदर्शनम्**—नपुं°—पुण्य-दर्शनम्—-—पवित्रस्थान, मन्दिर आदि का दर्शन
- **पुण्यपुरुष**—वि°—पुण्य-पुरुष—-—धर्मात्मा या पुण्यात्मा
- **पुण्यप्रतापः**—पुं°—पुण्य-प्रतापः—-—अच्छे गुणों या नैतिक कार्यों का प्रभाव
- **पुण्यफलम्**—नपुं°—पुण्य-फलम्—-—सत्कर्मों का पुरस्कार
- **पुण्यफलः**—पुं°—पुण्य-फलः—-—वह उद्यान जहाँ पुण्यरूपी फलों की प्राप्ति होती है
- **पुण्यभाज्**—वि°—पुण्य-भाज्—-—सौभाग्यशाली, धर्मात्मा, अच्छे गुणों वाला
- **पुण्यभूः**—स्त्री°—पुण्य-भूः—-—पुण्यभूमि अर्थात् आर्यावर्त
- **पुण्यभूमिः**—स्त्री°—पुण्य-भूमिः—-—पुण्यभूमि अर्थात् आर्यावर्त
- **पुण्यरात्रः**—पुं°—पुण्य-रात्रः—-—शुभरात्रि
- **पुण्यलोकः**—पुं°—पुण्य-लोकः—-—स्वर्ग, वैकुण्ठ
- **पुण्यशकुनम्**—नपुं°—पुण्य-शकुनम्—-—शुभशकुन
- **पुण्यशकुनः**—पुं°—पुण्य-शकुनः—-—शुभशकुनसूचक पक्षी
- **पुण्यशील**—वि°—पुण्य-शील—-—अच्छ स्वभाव वाला, सत्कर्मों में रुचि रखने वाला, धर्मपरायण, ईमानदार
- **पुण्यश्लोक**—वि°—पुण्य-श्लोक—-—सुविख्यात, जिसका नामोच्चारण ही शुभ समझा जाय, उत्तम यशवाला, पावनचरित्र वाला
- **पुण्यश्लोकः**—पुं°—पुण्य-श्लोकः—-—(निषध देश के राजा) नल का विशेषण, युधिष्ठिर और जनार्दन का विशेषण
- **पुण्यश्लोका**—स्त्री°—पुण्य-श्लोका—-—सीता और द्रौपदी का विशेषण
- **पुण्यस्थानम्**—नपुं°—पुण्य-स्थानम्—-—पुण्यभूमि, पवित्रस्थान, तीर्थस्थान
- **पुण्यवत्**—वि°—-—पुण्य + मतुप्, मस्यवः —सत्कर्म करने वाला, सद्गुणी
- **पुण्यवत्**—वि°—-—पुण्य + मतुप्, मस्यवः —भाग्यशाली, मंगलमय, अच्छी किस्मत वाला
- **पुण्यवत्**—वि°—-—पुण्य + मतुप्, मस्यवः —सुखी, भाग्यवान्
- **पुत्**—नपुं°—-—पृ + डुति-पृषो°—नरक का एक विशेष प्रभाग जहाँ पुत्रहीन व्यक्ति डाले जाते है
- **पुत्नामन्**—वि°—पुत्-नामन्—-—पुत् नाम वाला

- **पुत्तलः**—पुं°—-—पुत्त् + घञ्= पुत्तं गमनं लाति- पुत्त + ला + क—प्रतिमा, मूर्ति, बुत, पुतला
- **पुत्तलः**—पुं°—-—पुत्त् + घञ्= पुत्तं गमनं लाति- पुत्त + ला + क—गुड़िया कठपुतली
- **पुत्तली**—स्त्री°—-—पुत्त् + घञ्= पुत्तं गमनं लाति- पुत्त + ला + क, स्त्रियाँ ङीष्—प्रतिमा, मूर्ति, बुत, पुतला
- **पुत्तली**—स्त्री°—-—पुत्त् + घञ्= पुत्तं गमनं लाति- पुत्त + ला + क, स्त्रियाँ ङीष्—गुड़िया कठपुतली
- **पुत्तलदहनम्**—नपुं°—पुत्तलः-दहनम्—-—विदेश में जिसका प्राणांत हुआ हो अथवा अप्राप्त शव के बदले उसका पुतला बना कर जलाना
- **पुत्तलविधिः**—पुं°—पुत्तलः-विधिः—-—विदेश में जिसका प्राणांत हुआ हो अथवा अप्राप्त शव के बदले उसका पुतला बना कर जलाना
- **पुत्तलकः**—पुं°—-—पुत्तल + कन्—गुड़िया, मूर्ति आदि
- **पुत्तलिका**—स्त्री°—-—पुत्तली + कन् + टाप्, ह्रस्यः—गुड़िया मूर्ति आदि
- **पुत्तिका**—स्त्री°—-—पुत्त + ठन् + टाप्—एक प्रकार की मधुमक्खी
- **पुत्तिका**—स्त्री°—-—पुत्त + ठन् + टाप्—दीमक
- **पुत्रः**—पुं°—-—युत् + त्रै + क—बेटा
- **पुत्रः**—पुं°—-—युत् + त्रै + क—बच्चा, किसी जानवर का बच्चा
- **पुत्रः**—पुं°—-—युत् + त्रै + क—प्रिय वत्स (छोटे बच्चों को प्यार से संबोधित करने का शब्द
- **पुत्रः**—पुं°—-—युत् + त्रै + क—कोई भी छोटी वस्तु यथा- असिपुत्र, शिलापुत्र आदि
- **पुत्रौ**—पुं°,द्वि° व°—-—-—पुत्र और पुत्री
- **पुत्रीकृ**—-—-—-—पुत्र के रूप में गोद लेना
- **पुत्रान्नादः**—पुं°—पुत्रः-अन्नादः—-—जो पुत्र को कमाई पर निर्वाह करता है, या जिसके निर्वाह की व्यवस्था पुत्र द्वारा की जाय
- **पुत्रान्नादः**—पुं°—पुत्रः-अन्नादः—-—एक विशेष प्रकार का साधु
- **पुत्रार्थिन्**—वि°—पुत्रः-अर्थिन्—-—पुत्र चाहने वाला
- **पुत्रेष्टिः**—स्त्री°—पुत्रः-इष्टिः—-—पुत्र लाभ की इच्छा से किया जाने वाला यज्ञ विशेष
- **पुत्रेष्टिका**—स्त्री°—पुत्रः-इष्टिका—-—पुत्र लाभ की इच्छा से किया जाने वाला यज्ञ विशेष
- **पुत्रकाम**—वि°—पुत्रः-काम—-—पुत्र की कामना करने वाला
- **पुत्रकार्यम्**—नपुं°—पुत्रः-कार्यम्—-—पुत्र संबंधी संस्कारादि
- **पुत्रकृतकः**—पुं°—पुत्रः-कृतकः—-—जो पुत्र की भांति माना गया हो, गोद लिया हुआ पुत्र
- **पुत्रजात**—वि°—पुत्रः-जात—-—जिसे पुत्र उत्पन्न हुआ हो
- **पुत्रदारम्**—नपुं°—पुत्रः-दारम्—-—पुत्र और पत्नी
- **पुत्रधर्मः**—पुं°—पुत्रः-धर्मः—-—पुत्र का पिता के प्रति अपेक्षित कर्तव्य

- **पुत्रपौत्रम्**—नपुं°—पुत्रः-पौत्रम्—–—बेटे और पोते
- **पुत्रपौत्राः**—पुं°—पुत्रः-पौत्राः—–—बेटे और पोते
- **पुत्रपौत्रीण**—वि°—पुत्रः-पौत्रीण—–—पुत्र से पौत्र को प्राप्त होने वाला, आनुवंशिक
- **पुत्रप्रतिनिधिः**—पुं°—पुत्रः-प्रतिनिधिः—–—पुत्र के स्थान पर अपनाया हुआ
- **पुत्रलाभः**—पुं°—पुत्रः-लाभः—–—पुत्र की प्राप्ति
- **पुत्रवधूः**—स्त्री°—पुत्र-वधूः—–—पुत्र की पत्नी, स्नुषा
- **पुत्रसखः**—पुं°—पुत्रः-सखः—–—बच्चों से प्रेम करने वाला, बच्चों का प्रेमी
- **पुत्रहीन**—वि°—पुत्रः-हीन—–—जिसके पुत्र न हो, निस्सन्तान
- **पुत्रकः**—पुं°—–—पुत्र + कन्—छोटा पुत्र, बालक, बच्चा, तात, वत्स (वात्सल्य को प्रकट करने वाला शब्द)
- **पुत्रकः**—पुं°—–—पुत्र + कन्—गुड़िया, कठपुतली
- **पुत्रकः**—पुं°—–—पुत्र + कन्—धूर्त, ठग
- **पुत्रकः**—पुं°—–—पुत्र + कन्—टिड्डी, टिड्डा
- **पुत्रकः**—पुं°—–—पुत्र + कन्—शरभ या परवाना, पतंग
- **पुत्रकः**—पुं°—–—पुत्र + कन्—बाल
- **पुत्रका**—स्त्री°—–—पुत्रक् + टाप्—बेटी
- **पुत्रका**—स्त्री°—–—पुत्रक् + टाप्—गुड़िया, पुतली
- **पुत्रका**—स्त्री°—–—पुत्रक् + टाप्—कोई भी छोटी वस्तु यथा- असिपत्रिका, खड्ग पुत्रिका आदि
- **पुत्रिका**—स्त्री°—–—पुत्री + कन् + टाप्, ह्रस्वः—बेटी
- **पुत्रिका**—स्त्री°—–—पुत्री + कन् + टाप्, ह्रस्वः—गुड़िया, पुतली
- **पुत्रिका**—स्त्री°—–—पुत्री + कन् + टाप्, ह्रस्वः—कोई भी छोटी वस्तु यथा- असिपत्रिका, खड्ग पुत्रिका आदि
- **पुत्री** —स्त्री°—–—पुत्र + ङीष्—बेटी
- **पुत्री** —स्त्री°—–—पुत्र + ङीष्—गुड़िया, पुतली
- **पुत्री** —स्त्री°—–—पुत्र + ङीष्—कोई भी छोटी वस्तु यथा- असिपत्रिका, खड्ग पुत्रिका आदि
- **पुत्रकापुत्रः**—पुं°—पुत्रका-पुत्रः—–—बेटी का बेटा, दौहित्र, नाना के द्वारा पुत्र के स्थान पर माना हुआ
- **पुत्रकापुत्रः**—पुं°—पुत्रका-पुत्रः—–—बेटी जो पुत्रवत् मानी जाती है, तथा पिता के घर रहती है
- **पुत्रकापुत्रः**—पुं°—पुत्रका-पुत्रः—–—पौत्र
- **पुत्रकासुतः**—पुं°—पुत्रका-सुतः—–—बेटी का बेटा, दौहित्र, नाना के द्वारा पुत्र के स्थान पर माना हुआ

- **पुत्रकासुतः**—पुं॰—पुत्रका-सुतः—-—बेटी जो पुत्रवत् मानी जाती है, तथा पिता के घर रहती है
- **पुत्रकासुतः**—पुं॰—पुत्रका-सुतः—-—पौत्र
- **पुत्रकाप्रसूः**—स्त्री॰—पुत्रका-प्रसूः—-—वह माता जिसके कन्याएँ ही हों, पुत्र न हो
- **पुत्रकाभर्तृ**—पुं॰—पुत्रका-भर्तृ—-—'बेटी का पति' जामाता, दामाद
- **पुत्रिन्**—वि॰—-—पुत्र + इनि—बेटे वाला, बेटों वाला
- **पुत्रिन्**—वि॰—-—पुत्र + इनि—पुत्र का पिता
- **पुत्रिय**—वि॰—-—पुत्र + घ—पुत्रसंबंधी, पुत्रविषयक
- **पुत्रीय**—वि॰—-—पुत्र + छ—पुत्रसंबंधी, पुत्रविषयक
- **पुत्र्य**—वि॰—-—पुत्र + यत्—पुत्रसंबंधी, पुत्रविषयक
- **पुत्रीया**—स्त्री॰—-—पुत्र + क्यच् + अ + टाप्—पुत्र प्राप्ति की इच्छा
- **पुद्गल**—वि॰—-—पुत् कुत्सितं -गलो यस्मात् ब॰ स॰—सुन्दर, प्रिय, मनोहर
- **पुद्गलः**—पुं॰—-—पुत् कुत्सितं -गलो यस्मात् ब॰ स॰—परमाणु
- **पुद्गलः**—पुं॰—-—पुत् कुत्सितं -गलो यस्मात् ब॰ स॰—शरीर, भूतद्रव्य
- **पुद्गलः**—पुं॰—-—पुत् कुत्सितं -गलो यस्मात् ब॰ स॰—आत्मा
- **पुद्गलः**—पुं॰—-—पुत् कुत्सितं -गलो यस्मात् ब॰ स॰—शिव का विशेषण
- **पुनर्**—अव्य॰—-—पन् + अर् + उत्वम्—फिर, एक बार फिर, नये सिरे से
- **पुनर्भू**—स्त्री॰—-—-—फिर पत्नी बनना
- **पुनर्**—अव्य॰—-—पन् + अर् + उत्वम्—वापिस, विपरीत दिशा में (अधिकतर क्रियाओं के साथ)
- **पुनर्दा**—-—-—-—वापिस देना, लौटाना
- **पुनर्या**—-—पुनर्+या—-—वापिस जाना, लौटना
- **पुनरि**—-—पुनर्+इ—-—वापिस जाना, लौटना
- **पुनर्गम्**—-—पुनर्+गम्—-—वापिस जाना, लौटना
- **पुनर्**—अव्य॰—-—पन् + अर् + उत्वम्—इसके विपरीत, उलटे, परन्तु, तोभी, तथापि इतना होते हुए भी
- **पुनः पुनः**—अव्य॰—-—-—'फिर- फिर', 'बार-बार', 'बहुधा'
- **किम्पुनः**—अव्य॰—-—-—कितना अधिक, कितना कम
- **पुनरपि**—अव्य॰—-—-—फिर, एक बार और, इसके विपरीत
- **पुनरर्थिता**—स्त्री॰—पुनर्-अर्थिता—-—बार बार की हुई प्रार्थना

- **पुनरागत**—वि०—पुनर्-आगत—–—फिर आया हुआ, लौटा हुआ
- **पुनराधानम्**—नपुं०—पुनर्-आधानम्—–—अभिमंत्रित अग्नि का पुनः स्थापन
- **पुनराधेयम्**—नपुं०—पुनर्-आधेयम्—–—अभिमंत्रित अग्नि का पुनः स्थापन
- **पुनरावर्तः**—पुं०—पुनर्-आवर्तः—–—वापसी
- **पुनरावर्तः**—पुं०—पुनर्-आवर्तः—–—बार बार जन्म होना
- **पुनरावर्तिन्**—वि०—पुनर्-आवर्तिन्—–—फिर से संसार में जन्म लेने वाला
- **पुनरावृत्**—स्त्री०—पुनर्-आवृत्—–—दोहराना
- **पुनरावृत्**—स्त्री०—पुनर्-आवृत्—–—फिर से संसार में आना, बार बार जन्म लेना
- **पुनरावृत्**—स्त्री०—पुनर्-आवृत्—–—दोहराना, (पुस्तक आदि का) दूसरा संस्करण
- **पुनरावृत्तिः**—स्त्री०—पुनर्-आवृत्तिः—–—दोहराना
- **पुनरावृत्तिः**—स्त्री०—पुनर्-आवृत्तिः—–—फिर से संसार में आना, बार बार जन्म लेना
- **पुनरावृत्तिः**—स्त्री०—पुनर्-आवृत्तिः—–—दोहराना, (पुस्तक आदि का) दूसरा संस्करण
- **पुनरुक्त**—वि०—पुनर्-उक्त—–—फिर कहा हुआ, दोहराया गया, दुबारा कहा गया
- **पुनरुक्त**—वि०—पुनर्-उक्त—–—फालतू, अनावश्यक
- **पुनरुक्तम्**—नपुं०—पुनर्-उक्तम्—–—दोहराना
- **पुनरुक्तम्**—नपुं०—पुनर्-उक्तम्—–—बाहुल्य, आधिक्य, निरर्थकता, द्विरुक्ति या पुनरूक्ति
- **पुनरुक्तता**—स्त्री०—पुनर्-उक्तता—–—दोहराना
- **पुनरुक्तता**—स्त्री०—पुनर्-उक्तता—–—बाहुल्य, आधिक्य, निरर्थकता, द्विरुक्ति या पुनरूक्ति
- **पुनर्जन्मन्**—पुं०—पुनर्-जन्मन्—–—द्विजन्मा, ब्राह्मण
- **पुनरुक्तवदाभासः**—पुं०—पुनर्-उक्तवदाभासः—–—प्रतीयमान पुनरुक्ति, पुनरुक्ति का आभास होना, एक अलंकार
- **पुनरुक्तिः**—स्त्री०—पुनर्-उक्तिः—–—दोहराना
- **पुनरुक्तिः**—स्त्री०—पुनर्-उक्तिः—–—बाहुल्य, निरर्थकता, द्विरुक्ति
- **पुनरुत्थानम्**—नपुं०—पुनर्-उत्थानम्—–—फिर उठना, पुनर्जीवित करना
- **पुनरुत्पत्तिः**—स्त्री०—पुनर्-उत्पत्तिः—–—पुनरुत्पादन
- **पुनरुत्पत्तिः**—स्त्री०—पुनर्-उत्पत्तिः—–—फिर जन्म होना, देहान्तरागमन
- **पुनरुपगमः**—पुं०—पुनर्-उपगमः—–—वापसी
- **पुनरूपोढा**—स्त्री०—पुनर्-ऊपोढा—–—दुबारा ब्याही हुई स्त्री

- **पुनरूढा**—स्त्री°—पुनर्-ऊढा—-—दुबारा ब्याही हुई स्त्री
- **पुनरगमनम्**—नपुं°—पुनर्-गमनम्—-—वापसी, फिर जाना
- **पुनर्जन्मन्**—नपुं°—पुनर्-जन्मन्—-—बार बार जन्म होना, देहान्तरागमन
- **पुनर्जात**—वि°—पुनर्-जात—-—फिर उत्पन्न हुआ
- **पुनर्णवः**—पुं°—पुनर्-णवः—-—वार वार उगना, नाखून
- **पुनर्नवः**—पुं°—पुनर्-नवः—-—वार वार उगना, नाखून
- **पुनर्दारक्रिया**—स्त्री°—पुनर्-दारक्रिया—-—पुनर्विवाह करना (पुरुष का) दूसरी पत्नी लाना
- **पुनर्प्रत्युपकारः**—पुं°—पुनर्-प्रत्युपकारः—-—किसी के उपकार का बदला चुकाना, वार वार जन्म होना, देहान्तरागमन
- **पुनर्प्रत्युपकारः**—पुं°—पुनर्-प्रत्युपकारः—-—नाखून
- **पुनर्भावः**—पुं°—पुनर्-भावः—-—नया जन्म, पुनर्जन्म
- **पुनर्धूः**—स्त्री°—पुनर्-धूः—-—विधवा जिसका पुनर्विवाह हो गया हो
- **पुनर्धूः**—स्त्री°—पुनर्-धूः—-—पुनर्जन्म
- **पुनर्यात्रा**—स्त्री°—पुनर्-यात्रा—-—फिर जाना
- **पुनर्यात्रा**—स्त्री°—पुनर्-यात्रा—-—वार वार प्रगति करना (जलूस निकलना)
- **पुनर्वचनम्**—नपुं°—पुनर्-वचनम्—-—फिर कहना
- **पुनर्वसुः**—पुं°—पुनर्-वसुः—-—सातवाँ नक्षत्र (दो या तीन तारों का पुंज)
- **पुनर्वसुः**—पुं°—पुनर्-वसुः—-—विष्णु का विशेषण
- **पुनर्वसुः**—पुं°—पुनर्-वसुः—-—शिव का विशेषण
- **पुनर्विवाह**—पुं°—पुनर्-विवाह—-—फिर विवाह होना
- **पुनःसंस्कारः**—पुं°—पुनर्-संस्कारः—-—किसी संस्कार या शुद्धिकारक कृत्य का दोहराना
- **पुनःसङ्गमः**—पुं°—पुनर्-सङ्गमः—-—फिर से मिलना
- **पुनःसन्धानम्**—नपुं°—पुनर्-सन्धानम्—-—फिर से मिलना
- **पुनःसम्भवः**—पुं°—पुनर्-सम्भवः—-—(संसार में) फिर जन्म लेना, देहान्तरागमन
- **पुप्फुलः**—पुं°—-—पुप्फुसः, पृषो° सस्य लत्वम्—उदरवायु, अफारा
- **पुप्फुसः**—पुं°—-—पुप्फुस् + अच्—फेफड़ा
- **पुप्फुसः**—पुं°—-—पुप्फुस् + अच्—कमल का बीज कोष
- **पुर्**—स्त्री°—-—पृ + क्विप्—नगर, शहर जिसके चारो ओर सुरक्षादीवार हो

- **पुर्**—स्त्री°—-—पृ + क्वित्—दुर्ग, किला, गढ़
- **पुर्**—स्त्री°—-—पृ + क्वित्—दीवार, दुर्गप्राचीर
- **पुर्**—स्त्री°—-—पृ + क्वित्—शरीर
- **पुर्**—स्त्री°—-—पृ + क्वित्—बुद्धि
- **पुर्द्वार्**—स्त्री°—पुर्-द्वार्—-—नगर का फाटक
- **पुर्द्वारम्**—नपुं°—पुर्-द्वारम्—-—नगर का फाटक
- **पुरम्**—नपुं°—-—पृ + क—नगर, शहर (बड़े बड़े विशाल भवनों से युक्त, चारों ओर परिखा से घिरा हुआ, तथा विस्तार में जो एक कोस से कम न हो)
- **पुरम्**—नपुं°—-—पृ + क—किला, दुर्ग, गढ़
- **पुरम्**—नपुं°—-—पृ + क—घर, निवास, आवास
- **पुरम्**—नपुं°—-—पृ + क—शरीर
- **पुरम्**—नपुं°—-—पृ + क—अन्तःपुर, रनिवास
- **पुरम्**—नपुं°—-—पृ + क—पाटलिपुत्र
- **पुरम्**—नपुं°—-—पृ + क—पुष्पकोश, पत्तों की बनी फूलकटोरी
- **पुरम्**—नपुं°—-—पृ + क—चमड़ा
- **पुरम्**—नपुं°—-—पृ + क—गुग्गुल
- **पुराट्टः**—पुं°—पुरम्-अट्टः—-—नगरभित्ति पर बना कंगूरा या मीनार
- **पुराधिपः**—पुं°—पुरम्-अधिपः—-—नगरपाल
- **पुराध्यक्षः**—पुं°—पुरम्-अध्यक्षः—-—नगरपाल
- **पुरारातिः**—पुं°—पुरम्-अरातिः—-—असुहृद
- **पुरारिः**—पुं°—पुरम्-अरिः—-—असुहृद
- **पुररिपुः**—पुं°—पुरम्-रिपुः—-—शिव का विशेषण
- **पुरोत्सवः**—पुं°—पुरम्-उत्सवः—-—नगर में मनाया जाने वाला उत्सव
- **पुरोद्यानम्**—नपुं°—पुरम्-उद्यानम्—-—नगरोद्यान, उपवन
- **पुरौकस्**—पुं°—पुरम्-ओकस्—-—नगर में रहने वाला
- **पुरकोट्टम्**—नपुं°—पुरम्-कोट्टम्—-—नगररक्षक दुर्ग
- **पुरग**—वि°—पुरम्-ग—-—नगर को जाने वाला
- **पुरग**—वि°—पुरम्-ग—-—अनुकूल

- **पुरजित्**—पुं॰—पुरम्-जित्—-—शिव का विशेषण
- **पुरद्विष्**—पुं॰—पुरम्-द्विष्—-—शिव का विशेषण
- **पुरभिद्**—पुं॰—पुरम्-भिद्—-—शिव का विशेषण
- **पुरज्योतिस्**—पुं॰—पुरम्-ज्योतिस्—-—अग्नि का विशेषण
- **पुरज्योतिस्**—पुं॰—पुरम्-ज्योतिस्—-—अग्निलोक
- **पुरतटी**—स्त्री॰—पुरम्-तटी—-—छोटी पेंठ, छोटा गाँव जहाँ पेंठ लगती हो
- **पुरतोरणम्**—नपुं॰—पुरम्-तोरणम्—-—नगर का बाहरी फाटक
- **पुरद्वारम्**—नपुं॰—पुरम्-द्वारम्—-—नगर का फाटक
- **पुरनिवेशः**—पुं॰—पुरम्-निवेशः—-—नगर की नींव डालना
- **पुरपालः**—पुं॰—पुरम्-पालः—-—नगरशासक, दुर्ग का सेनापति
- **पुरमथनः**—पुं॰—पुरम्-मथनः—-—शिव का विशेषण
- **पुरमार्गः**—पुं॰—पुरम्-मार्गः—-—नगर की गली
- **पुररक्षः**—पुं॰—पुरम्-रक्षः—-—कांस्टेबल, सिपाही, पुलिस-अधिकारी
- **पुररक्षकः**—पुं॰—पुरम्-रक्षकः—-—कांस्टेबल, सिपाही, पुलिस-अधिकारी
- **पुररक्षिन्**—पुं॰—पुरम्-रक्षिन्—-—कांस्टेबल, सिपाही, पुलिस-अधिकारी
- **पुररोधः**—पुं॰—पुरम्-रोधः—-—दुर्ग का घेरा
- **पुरवासिन्**—पुं॰—पुरम्-वासिन्—-—नागरिक, नगर का रहने वाला
- **पुरशासनः**—पुं॰—पुरम्-शासनः—-—विष्णु का विशेषण
- **पुरशासनः**—पुं॰—पुरम्-शासनः—-—शिव की उपाधि
- **पुरटम्**—नपुं॰—-—पुर् + अटन्—सोना, स्वर्ण
- **पुरणः**—पुं॰—-—पॄ + क्यु, उत्वम्, रपरः—समुद्र, महासागर
- **पुरतः**—अव्य॰—-—पुर + तस्—सामने, आगे
- **पुरतः**—अव्य॰—-—पुर + तस्—की उपस्थिति में
- **पुरतः**—अव्य॰—-—पुर + तस्—बाद में
- **पुरन्दरः**—पुं॰—-—पुरं दारयति- इति दॄ + णिच् + खच्, मुम्—इन्द्र
- **पुरन्दरः**—पुं॰—-—पुरं दारयति- इति दॄ + णिच् + खच्, मुम्—शिव का विशेषण
- **पुरन्दरः**—पुं॰—-—पुरं दारयति- इति दॄ + णिच् + खच्, मुम्—अग्नि की उपाधि

- **पुरन्दरः**—पुं°—-—पुरं दारयति- इति दृ + णिच् + खच्, मुम्—चोर, सेंध लगाने वाला
- **पुरन्दरा**—स्त्री°—-—पुरं दारयति- इति दृ + णिच् + खच्, मुम्+ टाप्—गंगा का विशेषण
- **पुरन्ध्रिः**—स्त्री°—-—पुरं गेहस्थजनं धारयति धृ + खच् + ङीप्, पृषो° वा ह्रस्वः -तारा°—प्रौढ़ विवाहिता स्त्री, मातृका, विवाहिता स्त्री
- **पुरन्ध्रिः**—स्त्री°—-—पुरं गेहस्थजनं धारयति धृ + खच् + ङीप्, पृषो° वा ह्रस्वः -तारा°—वह स्त्री जिसका पति व बच्चे जीवित हों
- **पुरला**—स्त्री°—-—पुर + ला + क + टाप्—दुर्गा का विशेषण
- **पुरस्**—अव्य°—-—पूर्व + असि, पुर् आदेशः—सामने, आगे, उपस्थिति में, आँखों के सामने (स्वतंत्र रूप से या संबंध के साथ)
- **पुरस्**—अव्य°—-—पूर्व + असि, पुर् आदेशः—पूर्व में , पूर्व से
- **पुरस्**—अव्य°—-—पूर्व + असि, पुर् आदेशः—पूर्व की ओर
- **पुरस्करणम्**—नपुं°—पुरस्-करणम्—-—सामने या आगे रखना
- **पुरस्करणम्**—नपुं°—पुरस्-करणम्—-—अधिमान
- **पुरस्करणम्**—नपुं°—पुरस्-करणम्—-—ससम्मान बर्ताव, आदर-प्रदर्शन, अनुरोध
- **पुरस्करणम्**—नपुं°—पुरस्-करणम्—-—पूजा
- **पुरस्करणम्**—नपुं°—पुरस्-करणम्—-—सहचारिता, हाजरी देना
- **पुरस्करणम्**—नपुं°—पुरस्-करणम्—-—तैयारी
- **पुरस्करणम्**—नपुं°—पुरस्-करणम्—-—व्यवस्थापन
- **पुरस्करणम्**—नपुं°—पुरस्-करणम्—-—पूर्ण करना
- **पुरस्करणम्**—नपुं°—पुरस्-करणम्—-—आक्रमण करना
- **पुरस्करणम्**—नपुं°—पुरस्-करणम्—-—दोषारोपण करना
- **पुरस्कारः**—पुं°—पुरस्-कारः—-—सामने या आगे रखना
- **पुरस्कारः**—पुं°—पुरस्-कारः—-—अधिमान
- **पुरस्कारः**—पुं°—पुरस्-कारः—-—ससम्मान बर्ताव, आदर-प्रदर्शन, अनुरोध
- **पुरस्कारः**—पुं°—पुरस्-कारः—-—पूजा
- **पुरस्कारः**—पुं°—पुरस्-कारः—-—सहचारिता, हाजरी देना
- **पुरस्कारः**—पुं°—पुरस्-कारः—-—तैयारी
- **पुरस्कारः**—पुं°—पुरस्-कारः—-—व्यवस्थापन
- **पुरस्कारः**—पुं°—पुरस्-कारः—-—पूर्ण करना
- **पुरस्कारः**—पुं°—पुरस्-कारः—-—आक्रमण करना

- **पुरस्कारः**—पुं°—पुरस्-कारः—-—दोषारोपण करना
- **पुरस्कृत**—वि°—पुरस्-कृत—-—सामने रक्खा हुआ
- **पुरस्कृत**—वि°—पुरस्-कृत—-—सम्मानित, आदर से बर्ताव किया गया, पूज्य
- **पुरस्कृत**—वि°—पुरस्-कृत—-—छांटा गया, मानागया, अनुगमन किया
- **पुरस्कृत**—वि°—पुरस्-कृत—-—आराधित, पूजित
- **पुरस्कृत**—वि°—पुरस्-कृत—-—सेवा में प्रस्तुत, संलग्न, संयुक्त
- **पुरस्कृत**—वि°—पुरस्-कृत—-—तैयार, तत्पर
- **पुरस्कृत**—वि°—पुरस्-कृत—-—अभिमंत्रित
- **पुरस्कृत**—वि°—पुरस्-कृत—-—दोषारोपित, कलंकित
- **पुरस्कृत**—वि°—पुरस्-कृत—-—पूरा किया हुआ
- **पुरस्कृत**—वि°—पुरस्-कृत—-—प्रत्याशित
- **पुरस्क्रिया**—स्त्री°—पुरस्-क्रिया—-—आदर प्रदर्शित करना, सम्मानित बर्ताव
- **पुरस्क्रिया**—स्त्री°—पुरस्-क्रिया—-—आरम्भिक या दीक्षासंबंधी कृत्य
- **पुरोग**—वि°—पुरस्-ग—-—मुख्य, अग्रणी, सर्व प्रथम, प्रमुख, प्रायः संज्ञा के बल सहित
- **पुरोग**—वि°—पुरस्-ग—-—अधिष्ठित
- **पुरोगम**—वि°—पुरस्-गम—-—मुख्य, अग्रणी, सर्व प्रथम, प्रमुख, प्रायः संज्ञा के बल सहित
- **पुरोगम**—वि°—पुरस्-गम—-—अधिष्ठित
- **पुरोगतिः**—स्त्री°—पुरस्-गतिः—-—पूर्ववर्तिता
- **पुरोगतिः**—स्त्री°—पुरस्-गतिः—-—कुत्ता
- **पुरोगंतृ**—वि°—पुरस्-गंतृ—-—पहले या आगे जाने वाला
- **पुरोगंतृ**—वि°—पुरस्-गंतृ—-—मुख्य, नृतृत्व करने वाला, नेता
- **पुरोगंतृ**—पुं°—पुरस्-गंतृ—-—कुत्ता
- **पुरोगामिन्**—वि°—पुरस्-गामिन्—-—पहले या आगे जाने वाला
- **पुरोगामिन्**—वि°—पुरस्-गामिन्—-—मुख्य, नृतृत्व करने वाला, नेता
- **पुरोगामिन्**—पुं°—पुरस्-गामिन्—-—कुत्ता
- **पुरोचरणम्**—नपुं°—पुरस्-चरणम्—-—आरंभिक या दीक्षा विषयक कृत्य
- **पुरोचरणम्**—नपुं°—पुरस्-चरणम्—-—तैयारी, दीक्षा

- **पुरोचरणम्**—नपुं°—पुरस्-चरणम्—-—किसी देवता के नाम का जप तथा हवन में आहुति
- **पुरोछदः**—पुं°—पुरस्-छदः—-—चूचुक
- **पुरोजन्मन्**—वि°—पुरस्-जन्मन्—-—पहले पैदा हुआ
- **पुरोडाश्**—पुं°—पुरस्-डाश्—-—चावलों को पीस कर बनाई गई तथा कपाल में रख कर प्रस्तुत की गई यज्ञ की आहुति
- **पुरोडाशः**—पुं°—पुरस्-डाशः—-—चावलों को पीस कर बनाई गई तथा कपाल में रख कर प्रस्तुत की गई यज्ञ की आहुति
- **पुरोधस्**—पुं°—पुरस्-धस्—-—कुलपुरोहित, विशेषकर किसी राजा का
- **पुरोधानम्**—नपुं°—पुरस्-धानम्—-—सामने रखना, पुरोहित द्वारा कराया गया उपचार
- **पुरोधिका**—स्त्री°—पुरस्-धिका—-—(और अव अन्य स्त्रियों की अपेक्षा मनचहेती पत्नी
- **पुरोपाक**—वि°—पुरस्-पाक—-—पूरा होने के निकट, पूरा होने वाला
- **पुरोप्रहर्तृ**—पुं°—पुरस्-प्रहर्तृ—-—पहली पंक्ति में जाकर लड़ने वाला सैनिक
- **पुरोफल**—वि°—पुरस्-फल—-—जिसका फल निकट ही हो, (निकट भविष्य में) फल देने वाला
- **पुरोभाग**—वि°—पुरस्-भाग—-—बलात् प्रवेशी, अनधिकार प्रवेशी
- **पुरोभाग**—वि°—पुरस्-भाग—-—छिद्रान्वेषण करने वाला
- **पुरोभाग**—वि°—पुरस्-भाग—-—स्पृहाशील, ईर्ष्यालु
- **पुरोभागः**—पुं°—पुरस्-भागः—-—आगे का भाग, अगला भाग, गाड़ी
- **पुरोभागः**—पुं°—पुरस्-भागः—-—बलात् प्रवेश, अनधिकार प्रवेश
- **पुरोभागः**—पुं°—पुरस्-भागः—-—डाह, स्पर्धा
- **पुरोभागिन्**—वि°—पुरस्-भागिन्—-—आगे रहने वाला, स्वेच्छावान्, नटखट
- **पुरोभागिन्**—वि°—पुरस्-भागिन्—-—बलात् प्रवेशी, अनधिकार प्रवेशी
- **पुरोमारुतः**—पुं°—पुरस्-मारुतः—-—आगे की हवा, सामने चलने वाली हवा
- **पुरोवातः**—पुं°—पुरस्-वातः—-—आगे की हवा, सामने चलने वाली हवा
- **पुरःसर**—वि°—पुरस्-सर—-—अग्रेसर
- **पुरःसरः**—पुं°—पुरस्-सरः—-—आगे चलने वाला, अग्रदूत
- **पुरःसरः**—पुं°—पुरस्-सरः—-—अनुचर, टहलुआ, सेवक
- **पुरःसरः**—पुं°—पुरस्-सरः—-—नेता, जो नेतृत्व करे, सर्वप्रथम, प्रमुख
- **पुरःसरः**—पुं°—पुरस्-सरः—-—अनुचरों सहित, परिचरों सहित, के साथ
- **पुरःस्थायिन्**—वि°—पुरस्-स्थायिन्—-—सामने खड़े रहने वाला

- **पुरोहित**—वि॰—पुरस्-हित—-—सामने रक्खा हुआ
- **पुरोहित**—वि॰—पुरस्-हित—-—नियुक्त, दूत, आयुक्त
- **पुरोहितः**—पुं॰—पुरस्-हितः—-—कार्यभार संभालने वाला, अभिकर्ता, दूत
- **पुरोहितः**—पुं॰—पुरस्-हितः—-—कुलपुरोहित, जो कुल में होने वाले सभी कर्मकाण्ड या संस्कारों का संचालन करता है
- **पुरस्तात्**—अव्य॰—-—पूर्व + अस्ताति, पुर् आदेशः—आगे, सामने
- **पुरस्तात्**—अव्य॰—-—पूर्व + अस्ताति, पुर् आदेशः—सिर पर, सर्व प्रथम
- **पुरस्तात्**—अव्य॰—-—पूर्व + अस्ताति, पुर् आदेशः—पहले स्थान पर, आरंभ में
- **पुरस्तात्**—अव्य॰—-—पूर्व + अस्ताति, पुर् आदेशः—पहले, पूर्वतः
- **पुरस्तात्**—अव्य॰—-—पूर्व + अस्ताति, पुर् आदेशः—पूर्व की ओर, पूर्व में, या पूर्व की तरफ
- **पुरस्तात्**—अव्य॰—-—पूर्व + अस्ताति, पुर् आदेशः—बाद में, आगे, अन्त में
- **पुरा**—अव्य॰—-—पुर् + का—पूर्व काल में, पहले, प्राचीन काल में
- **पुरा**—अव्य॰—-—पुर् + का—पहले अव तक, इस समय तक
- **पुरा**—अव्य॰—-—पुर् + का—पहले पहले, सबसे पहले
- **पुरा**—अव्य॰—-—पुर् + का—थोड़े समय में, शीघ्र, अचिरात् थोड़ी देर में
- **पुरोपनीत**—वि॰—पुरा-उपनीत—-—जिस पुर पहले अधिकार किया हुआ था, जो पहले आधिवत्य में था
- **पुराकथा**—स्त्री॰—पुरा-कथा—-—पुराना उपाख्यान
- **पुराकल्पः**—पुं॰—पुरा-कल्पः—-—पूर्व सृष्टि
- **पुराकल्पः**—पुं॰—पुरा-कल्पः—-—अतीत की कहानी
- **पुराकल्पः**—पुं॰—पुरा-कल्पः—-—पहला युग
- **पुराकृत**—वि॰—पुरा-कृत—-—पहले किया हुआ
- **पुरायोनि**—वि॰—पुरा-योनि—-—प्राचीन मूल (उत्पत्ति)
- **पुरावसुः**—पुं॰—पुरा-वसुः—-—भीष्म का विशेषण
- **पुराविद्**—वि॰—पुरा-विद्—-—अतीत से परिचित, पूर्व घटित बातों का जानकार
- **पुरावृत्त**—वि॰—पुरा-वृत्त—-—प्राचीन काल में होने वाला या उससे संवद्ध
- **पुरावृत्त**—वि॰—पुरा-वृत्त—-—पुराना, प्राचीन
- **पुराकथा**—स्त्री॰—पुरा-कथा—-—पुराना उपाख्यान
- **पुरावृत्तम्**—नपुं॰—पुरा-वृत्तम्—-—इतिहास

- **पुरावृत्तम्**—नपुं॰—पुरा-वृत्तम्—-—पुरानी या काल्पनिक घटना
- **पुरा**—स्त्री॰—-—पुर + टाप्—गंगा का विशेषण
- **पुरा**—स्त्री॰—-—पुर + टाप्—एक प्रकार का गंधद्रव्य
- **पुरा**—स्त्री॰—-—पुर + टाप्—पूर्व दिशा
- **पुरा**—स्त्री॰—-—पुर + टाप्—किला
- **पुराण**—वि॰—-—पुरा नवम्- निरु॰—पुराना, प्राचीन, पूर्वकाल संबंधी
- **पुराण**—वि॰—-—पुरा नवम्- निरु॰—वयोवृद्ध, पुरातन
- **पुराण**—वि॰—-—पुरा नवम्- निरु॰—क्षीण, घिसाघिसाया
- **पुराणम्**—नपुं॰—-—-—अतीत घटना, या वृत्तान्त
- **पुराणम्**—नपुं॰—-—-—अतीत की कहानी, उपाख्यान, प्राचीन या पौराणिक इतिहास
- **पुराणम्**—नपुं॰—-—-—कुछ विख्यात धार्मिक पुस्तकें जो गिनती में १८ हैं व्यास द्वारा प्रणीत मानी जाती हैं
- **पुराणः**—पुं॰—-—-—८० कौड़ियों के बराबर मूल्य का एक सिक्का
- **पुराणान्तः**—पुं॰—पुराण-अन्तः—-—यम का विशेषण
- **पुराणोक्त**—वि॰—पुराण-उक्त—-—पुराणों में निर्दिष्ट या विहित
- **पुराणगः**—पुं॰—पुराण-गः—-—ब्राह्मण का विशेषण
- **पुराणगः**—पुं॰—पुराण-गः—-—पुराण पाठक, पुराण की कथा करने वाला
- **पुराणपुरुषः**—पुं॰—पुराण-पुरुषः—-—विष्णु का विशेषण
- **पुरातन**—वि॰—-—पुरा + ट्यु, तुट्—पुराना, प्राचीन
- **पुरातन**—वि॰—-—पुरा + ट्यु, तुट्—वयोवृद्ध, प्राक्कालीन
- **पुरातन**—वि॰—-—पुरा + ट्यु, तुट्—घिसाघिसाया, क्षीण
- **पुरातनः**—पुं॰—-—-—विष्णु का विशेषण
- **पुरिः**—स्त्री॰—-—पृ + इ—नगर, शहर
- **पुरिः**—स्त्री॰—-—पृ + इ—नदी
- **पुरिशय**—वि॰—-—पुरि + शी + अच्—शरीर में विश्राम करने वाला
- **पुरी**—स्त्री॰—-—पुरि + ङीष्—शहर, नगर
- **पुरी**—स्त्री॰—-—पुरि + ङीष्—गढ़
- **पुरी**—स्त्री॰—-—पुरि + ङीष्—शरीर

- **पुरीमोहः**—पुं॰—पुरी-मोहः—-—धतूरे का पौधा
- **पुरीतत्**—पुं॰—-—पुरीं देहं तनोति- तन् + क्विप्—हृदय के पास की एक विशेष अंतड़ी
- **पुरीतत्**—पुं॰—-—पुरीं देहं तनोति- तन् + क्विप्—अंतड़ियाँ
- **पुरीषम्**—नपुं॰—-—पृ + ईषन्, किच्च—मल, विष्ठा, गूथ (गोबर)
- **पुरीषम्**—नपुं॰—-—पृ + ईषन्, किच्च—कूड़ाकरकट, गंदगी
- **पुरीषोत्सर्गः**—पुं॰—पुरीषम्-उत्सर्गः—-—मलत्याग
- **पुरीषनिग्रहणम्**—नपुं॰—पुरीषम्-निग्रहणम्—-—कोष्ठबद्धता
- **पुरीषणः**—पुं॰—-—पुरी + इष् + ल्युट्—मल, विष्ठा
- **पुरीषणम्**—नपुं॰—-—पुरी + इष् + ल्युट्—मलोत्सर्ग करना, मलत्याग करना
- **पुरीषमः**—पुं॰—-—पुरीषं मिमीतें - पुरीष + मा + क—उड़द, माष
- **पुरु**—वि॰—-—पृ पालनपोषणयोः - कु—अति, प्रचुर, अधिक, बहूत से
- **पुरुः**—वि॰—-—पृ पालनपोषणयोः - कु—‘फुलों का पराग
- **पुरुः**—वि॰—-—पृ पालनपोषणयोः - कु—स्वर्ग, देवलोक
- **पुरुः**—वि॰—-—पृ पालनपोषणयोः - कु—एक राजकुमार का नाम, चन्द्रवंशी राजाओं में छठा राजा
- **पुरुजित्**—पुं॰—पुरु-जित्—-—विष्णु का विशेषण
- **पुरुजित्**—पुं॰—पुरु-जित्—-—राजा कुन्तीभोज या उसके भाई का नाम
- **पुरुदम्**—नपुं॰—पुरु-दम्—-—सोना, स्वर्ण
- **पुरुदंशकः**—पुं॰—पुरु-दंशकः—-—हंस
- **पुरुलम्पट**—वि॰—पुरु-लम्पट—-—बहुत विषयी, या कामातुर
- **पुरुह**—वि॰—पुरु-ह—-—बहुत, बहुत से
- **पुरुहु**—वि॰—पुरु-हु—-—बहुत, बहुत से
- **पुरुहूत**—वि॰—पुरु-हूत—-—बहुतों से आवाहन किया गया
- **पुरुहूतः**—पुं॰—पुरु-हूतः—-—इन्द्र का विशेषण
- **पुरुद्विष्**—पुं॰—पुरु-द्विष्—-—इन्द्रजित का विशेषण
- **पुरुषः**—पुं॰—-—पुरि देहे शेते- शी + ड पृषो॰ तारा॰, पुर् + कुषन्—नर, मनुष्य, मर्द
- **पुरुषः**—पुं॰—-—पुरि देहे शेते- शी + ड पृषो॰ तारा॰, पुर् + कुषन्—मनुष्य, मनुष्य जाति
- **पुरुषः**—पुं॰—-—पुरि देहे शेते- शी + ड पृषो॰ तारा॰, पुर् + कुषन्—किसी पीढ़ी का प्रतिनिधि या सदस्य

- **पुरुषः**—पुं°—-—पुरि देहे शेते- शी + ड पृषो° तारा°, पुर् + कुषन्—अधिकारी, कार्यकर्ता, अभिकर्ता, अनुचर, सेवक
- **पुरुषः**—पुं°—-—पुरि देहे शेते- शी + ड पृषो° तारा°, पुर् + कुषन्—मनुष्य की ऊँचाई या माप, दोनों हाथ फैला कर लम्बाई की माप
- **पुरुषः**—पुं°—-—पुरि देहे शेते- शी + ड पृषो° तारा°, पुर् + कुषन्—आत्मा
- **पुरुषः**—पुं°—-—पुरि देहे शेते- शी + ड पृषो° तारा°, पुर् + कुषन्—परमात्मा, ईश्वर (विश्व की आत्मा)
- **पुरुषः**—पुं°—-—पुरि देहे शेते- शी + ड पृषो° तारा°, पुर् + कुषन्—पुरुष (व्या° में) प्रथम पुरुष, मध्यम पुरुष और उत्तम पुरुष
- **पुरुषः**—पुं°—-—पुरि देहे शेते- शी + ड पृषो° तारा°, पुर् + कुषन्—आँख की पुतली
- **पुरुषः**—पुं°—-—पुरि देहे शेते- शी + ड पृषो° तारा°, पुर् + कुषन्—आत्मा (विप° प्रकृति) सांख्यमतानुसार यह न उत्पन्न होता है, न उत्पादक है, यह निष्क्रिय है, तथा प्रकृति का दर्शक है
- **पुरुषम्**—नपुं°—-—-—मेरु पर्वत का विशेषण
- **पुरुषाङ्गम्**—नपुं°—पुरुषः-अङ्गम्—-—पुरुष को जननेन्द्रिय, लिंग
- **पुरुषादः**—पुं°—पुरुषः-अदः—-—नरभक्षक, मनुष्य का मांस खाने वाला, पिशाच
- **पुरुषाधमः**—पुं°—पुरुषः-अधमः—-—अत्यंत नीच पुरुष, बहुत ही जघन्य और घृणित व्यक्ति
- **पुरुषाधिकारः**—पुं°—पुरुषः-अधिकारः—-—पुरुष का पद या कर्तव्य
- **पुरुषाधिकारः**—पुं°—पुरुषः-अधिकारः—-—मनुष्य का मूल्यांकन या प्राक्कलन
- **पुरुषान्तरम्**—नपुं°—पुरुषः-अन्तरम्—-—दूसरा मनुष्य
- **पुरुषार्थः**—पुं°—पुरुषः-अर्थः—-—मानवजीवन के चार मुख्य पदार्थों (अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) में से एक
- **पुरुषार्थः**—पुं°—पुरुषः-अर्थः—-—मानवप्रयत्न या चेष्टा, पुरुषकार
- **पुरुषास्थिमालिन्**—पुं°—पुरुषः-अस्थिमालिन्—-—शिव का विशेषण
- **पुरुषाद्यः**—पुं°—पुरुषः-आद्यः—-—विष्णु का विशेषण
- **पुरुषायुषम्**—नपुं°—पुरुषः-आयुषम्—-—मानव-जीवन की अवधि
- **पुरुषायुस्**—नपुं°—पुरुषः-आयुस्—-—मानव-जीवन की अवधि
- **पुरुषाशिन्**—पुं°—पुरुषः-आशिन्—-—नरभक्षी, राक्षस, पिशाच
- **पुरुषेन्द्रः**—पुं°—पुरुषः-इन्द्रः—-—राजा
- **पुरुषोत्तमः**—पुं°—पुरुषः-उत्तमः—-—श्रेष्ठ पुरुष
- **पुरुषोत्तमः**—पुं°—पुरुषः-उत्तमः—-—परमात्मा, विष्णु या कृष्ण का विशेषण
- **पुरुषकारः**—पुं°—पुरुषः-कारः—-—मानवप्रयत्न, मनुष्यचेष्टा, मर्दाना काम, मर्दानगी, पराक्रम
- **पुरुषकारः**—पुं°—पुरुषः-कारः—-—पौरुष, वीर्य

- **पुरुषकुणपः**—पुं°—पुरुषः-कुणपः—-—मानवशव
- **पुरुषकुणपम्**—नपुं°—पुरुषः-कुणपम्—-—मानवशव
- **पुरुषकेसरिन्**—पुं°—पुरुषः-केसरिन्—-—'नरसिंह' विष्णु का चौथा अवतार
- **पुरुषज्ञानम्**—नपुं°—पुरुषः-ज्ञानम्—-—मानवजाति का ज्ञान
- **पुरुषदघ्न**—वि°—पुरुषः-दघ्न—-—मनुष्य की ऊँचाई के बराबर लंबा
- **पुरुषद्वयस्**—वि°—पुरुषः-द्वयस्—-—मनुष्य की ऊँचाई के बराबर लंबा
- **पुरुषद्विष्**—पुं°—पुरुषः-द्विष्—-—विष्णु का शत्रु
- **पुरुषनाथः**—पुं°—पुरुषः-नाथः—-—चमूपति, सेनापति
- **पुरुषनाथः**—पुं°—पुरुषः-नाथः—-—राजा
- **पुरुषपशुः**—पुं°—पुरुषः-पशुः—-—नरपशु, क्रूरव्यक्ति
- **पुरुषपुङ्गवः**—पुं°—पुरुषः-पुङ्गवः—-—श्रेष्ठपुरुष, प्रमुख व्यक्ति
- **पुरुषपुण्डरीकः**—पुं°—पुरुषः-पुण्डरीकः—-—श्रेष्ठपुरुष, प्रमुख व्यक्ति
- **पुरुषवहुमानः**—पुं°—पुरुषः-वहुमानः—-—मनुष्यजाति की प्रतिष्ठा
- **पुरुषमेघः**—पुं°—पुरुषः-मेघः—-—नरमेध, पुरुषयज्ञ
- **पुरुषवरः**—पुं°—पुरुषः-वरः—-—विष्णु का विशेषण
- **पुरुषवाहः**—पुं°—पुरुषः-वाहः—-—गरुड़ का विशेषण
- **पुरुषवाहः**—पुं°—पुरुषः-वाहः—-—कुबेर की उपाधि
- **पुरुषव्याघ्रः**—पुं°—पुरुषः-व्याघ्रः—-—'मनुष्यों में शेर' पूज्य या प्रमुख व्यक्ति
- **पुरुषव्याघ्रः**—पुं°—पुरुषः-व्याघ्रः—-—शूरवीर, बहादुर आदमी
- **पुरुषशार्दूलः**—पुं°—पुरुषः-शार्दूलः—-—'मनुष्यों में शेर' पूज्य या प्रमुख व्यक्ति
- **पुरुषशार्दूलः**—पुं°—पुरुषः-शार्दूलः—-—शूरवीर, बहादुर आदमी
- **पुरुषसिंहः**—पुं°—पुरुषः-सिंहः—-—'मनुष्यों में शेर' पूज्य या प्रमुख व्यक्ति
- **पुरुषसिंहः**—पुं°—पुरुषः-सिंहः—-—शूरवीर, बहादुर आदमी
- **पुरुषसमवायः**—पुं°—पुरुषः-समवायः—-—मनुष्यों का समूह
- **पुरुषसूक्तम्**—नपुं°—पुरुषः-सूक्तम्—-—ऋग्वेद के दसवें मण्डल का ९०वाँ सूक्त
- **पुरुषकः**—पुं°—-—पुरुष + कन्—मनुष्य की भांति दो पैरों पर खड़ा होने वाला, घोड़े का पालना
- **पुरुषकम्**—नपुं°—-—पुरुष + कन्—मनुष्य की भांति दो पैरों पर खड़ा होने वाला, घोड़े का पालना

- **पुरुषता**—स्त्री°—-—पुरुष + तल् + टाप्—पुरुषत्व, मर्दानगी, पराक्रम
- **पुरुषता**—स्त्री°—-—पुरुष + तल् + टाप्—वीर्य
- **पुरुषत्वम्**—नपुं°—-—पुरुष + तल् + त्व—पुरुषत्व, मर्दानगी, पराक्रम
- **पुरुषत्वम्**—नपुं°—-—पुरुष + तल् + त्व—वीर्य
- **पुरुषायित**—वि°—-—पुरुष + क्यङ् + क्त—मनुष्य की भांति आचरण करने वाला
- **पुरुषायितम्**—नपुं°—-—पुरुष + क्यङ् + क्त—मनुष्य का अभिनय करना, मनुष्यपात्र का अभिनय, संचालन
- **पुरुषायितम्**—नपुं°—-—पुरुष + क्यङ् + क्त—एक प्रकार का स्त्रीमैथुन जिससें स्त्री पुरुषवत् आचरण करती है
- **पुरूरवस्**—पुं°—-—पुरु प्रवुरं यथास्यात्तथा रौति-पुरु + रु + असि नि° साधुः—बुध और इला का पुत्र, चन्द्रवंशी राजकुल का प्रवर्तक
- **पुरोटिः**—पुं°—-—पुरस् + अट् + इन्—नदी का प्रवाह
- **पुरोटिः**—पुं°—-—पुरस् + अट् + इन्—पत्तों की सरसराहट या मर्मरध्वनि, पत्र शब्द
- **पुरोडास**—पुं°—-—-—चावलों को पीस कर बनाई गई तथा कपाल में रख कर प्रस्तुत की गई यज्ञ की आहुति
- **पुरोधस्**—पुं°—-—-—कुलुपुरोहित, विशेषकर किसी राजा का
- **पुर्व्**—भ्वा° पर° <पुर्वति>—-—-—भरना
- **पुर्व्**—भ्वा° पर° <पुर्वति>—-—-—बसना, रहना
- **पुर्व्**—भ्वा° पर° <पुर्वति>—-—-—निमंत्रित करना
- **पुल**—वि°—-—पुल् + क—महान्, विशाल, व्यापक विस्तृत
- **पुलः**—पुं°—-—पुल् + क—रोमाञ्च होना
- **पुलकः**—पुं°—-—तुल + कन्—शरीर के बालों का सीधा खड़ा होना, (भय या हर्ष से) शिहरन, रोमाचं
- **पुलकः**—पुं°—-—तुल + कन्—एक प्रकार का पत्थर या रत्न
- **पुलकः**—पुं°—-—तुल + कन्—रत्न में दोष
- **पुलकः**—पुं°—-—तुल + कन्—एक प्रकार का खनिज पदार्थ
- **पुलकः**—पुं°—-—तुल + कन्—अन्नपिंड जिससे हाथी पलते हैं
- **पुलकः**—पुं°—-—तुल + कन्—हरताल
- **पुलकः**—पुं°—-—तुल + कन्—शराब पीने का गिलास
- **पुलकः**—पुं°—-—तुल + कन्—एक प्रकार की सरसों, राई
- **पुलकाङ्गः**—पुं°—पुलकः-अङ्गः—-—वरुण का जाल
- **पुलकालयः**—पुं°—पुलकः-आलयः—-—कुबेर का विशेषण

- **पुलकोद्गमः**—पुं°—पुलकः-उद्गमः———शरीर के रोंगटों का खड़ा होना, रोमांच होना
- **पुलकित**—वि°———पुलक + इतच्—जिसके रोंगटे खड़े हो गये हैं, रोमांचित, गद्गद, आनन्दित, हर्षोत्फुल्ल
- **पुलकिन्**—वि°———पुलक + इनि—रोमांचित, जिसके शरीर के रोंगटे खड़े हो गये है
- **पुलकिन्**—पुं°—————कलम्ब वृक्ष का एक प्रकार
- **पुलस्तिः**—पुं°———पुल् + क्विप्= पुल् + अस् + ति—एक ऋषि का नाम, ब्रह्मा का एक मानस पुत्र
- **पुलस्त्यः**—पुं°———पुलस्ति + यत्—एक ऋषि का नाम, ब्रह्मा का एक मानस पुत्र
- **पुला**—स्त्री°———पुल + टाप्—मृदु तालु, गले का कौव्वा, तालु जिह्वा
- **पुलाकः**—पुं°———पुल् + आक् नि°—थोथा या मुरझाया हुआ अन्न, कदन्न
- **पुलाकः**—पुं°———पुल् + आक् नि°—भात का पिंड
- **पुलाकः**—पुं°———पुल् + आक् नि°—संक्षेप, संग्रह
- **पुलाकः**—पुं°———पुल् + आक् नि°—संक्षिप्तता, संहृति
- **पुलाकः**—पुं°———पुल् + आक् नि°—चावलों का मांड
- **पुलाकः**—पुं°———पुल् + आक् नि°—क्षिप्रता, द्रुतता, त्वरा
- **पुलाकिन्**—पुं°———पुलाक + इनि—वृक्ष
- **पुलायितम्**—नपुं°———पलायित, पृषो°—घोड़े की सरपट चाल
- **पुलिनः**—पुं°———पुल् + इनन् किच्च—रेतीला किनारा, रेतीला समुद्रतट
- **पुलिनः**—पुं°———पुल् + इनन् किच्च—नदी का प्रवाह हट जाने से तट पर बना छोटा टापू, लघुद्वीप
- **पुलिनः**—पुं°———पुल् + इनन् किच्च—नदीतट
- **पुलिनवती**—स्त्री°———पुलिन + मतुप्, वत्वम्, डीप्—नदी
- **पुलिंदकः**—पुं°———पुल् + किंदच्, कन्—एक असभ्य जाति का नाम
- **पुलिंदकः**—पुं°———पुल् + किंदच्, कन्—इस जाति का एक मनुष्य, बर्बर, अशिष्ट, जंगली, पहाड़ी
- **पुलिरिकः**—पुं°—————साँप
- **पुलोमन्**—पुं°—————एक राक्षस का नाम, इन्द्र का श्वसुर
- **पुलोमारिः**—पुं°—पुलोमन्-अरिः———इन्द्र के विशेषण
- **पुलोमजित्**—पुं°—पुलोमन्-जित्———इन्द्र के विशेषण
- **पुलोमभिद्**—पुं°—पुलोमन्-भिद्———इन्द्र के विशेषण
- **पुलोमद्विष्**—पुं°—पुलोमन्-द्विष्———इन्द्र के विशेषण

- **पुलोमजा**—स्त्री०—पुलोमन्-जा———शची, पुलोमा की पुत्री तथा इन्द्र की पत्नी
- **पुलोमपुत्री**—स्त्री०—पुलोमन्-पुत्री———शची, पुलोमा की पुत्री तथा इन्द्र की पत्नी
- **पुष्**—भ्वा० <पोषति>, दिवा० पर० <पुष्यति>,क्र्या० पर०<पुष्णाति>————पोषण करना, (छाती से लगाकर) दूध पिलाना, पालना, पोसना, शिक्षित करना
- **पुष्**—भ्वा० <पोषति>, दिवा० पर० <पुष्यति>,क्र्या० पर०<पुष्णाति>————सहारा देना, भरण पोषण करना, परवरिश करना
- **पुष्**—भ्वा० <पोषति>, दिवा० पर० <पुष्यति>,क्र्या० पर०<पुष्णाति>————बढ़ने देना, खिलना, विकसित होना, राहत मिलना
- **पुष्**—भ्वा० <पोषति>, दिवा० पर० <पुष्यति>,क्र्या० पर०<पुष्णाति>————बढ़ाना वृद्धि करना, आगे बढ़ाना, वर्धन (मूल्यादि)
- **पुष्**—भ्वा० <पोषति>, दिवा० पर० <पुष्यति>,क्र्या० पर०<पुष्णाति>————प्राप्त करना, अधिकार में करना, रखना, उपभोग करना
- **पुष्**—भ्वा० <पोषति>, दिवा० पर० <पुष्यति>,क्र्या० पर०<पुष्णाति>————बतलाना, दिखलाना, धारण करना, प्रदर्शन करना
- **पुष्**—भ्वा० <पोषति>, दिवा० पर० <पुष्यति>,क्र्या० पर०<पुष्णाति>————बढ़ना, पुष्ट होना, फलना-फूलना, समृद्ध होना
- **पुष्**—भ्वा० <पोषति>, दिवा० पर० <पुष्यति>,क्र्या० पर०<पुष्णाति>————प्रशंसा करना, स्तुति करना
- **पुष्**—भ्वा०प्रेर०————पालन-पोषण करना, परवरिश करना, भरणपोषण करना आदि
- **पुष्**—भ्वा०प्रेर०————बढ़ाना, उन्नति करना
- **पुष्**—चुरा० उभ० <पोषयति>, <पोषयते>————पालन-पोषण करना, परवरिश करना, भरणपोषण करना आदि
- **पुष्**—चुरा० उभ० <पोषयति>, <पोषयते>————बढ़ाना, उन्नति करना
- **पुष्करम्**—नपुं०———पुष्कं पुष्टि राति- रा + क—नीला कमल
- **पुष्करम्**—नपुं०———पुष्कं पुष्टि राति- रा + क—हाथी की जिह्वा की नोक
- **पुष्करम्**—नपुं०———पुष्कं पुष्टि राति- रा + क—ढोल की चमड़ा अर्थात् वह स्थान जहाँ उस पर चोट मारी जाती है
- **पुष्करम्**—नपुं०———पुष्कं पुष्टि राति- रा + क—तलवार का फल
- **पुष्करम्**—नपुं०———पुष्कं पुष्टि राति- रा + क—तलवार का म्यान
- **पुष्करम्**—नपुं०———पुष्कं पुष्टि राति- रा + क—बाण
- **पुष्करम्**—नपुं०———पुष्कं पुष्टि राति- रा + क—वायु, आकाश, अन्तरिक्ष
- **पुष्करम्**—नपुं०———पुष्कं पुष्टि राति- रा + क—पिंजड़ा
- **पुष्करम्**—नपुं०———पुष्कं पुष्टि राति- रा + क—जल
- **पुष्करम्**—नपुं०———पुष्कं पुष्टि राति- रा + क—मादकता
- **पुष्करम्**—नपुं०———पुष्कं पुष्टि राति- रा + क—नृत्यकला
- **पुष्करम्**—नपुं०———पुष्कं पुष्टि राति- रा + क—युद्ध, संग्राम

- **पुष्करम्**—नपुं°—-—पुष्कं पुष्टि राति- रा + क—एकता
- **पुष्करम्**—नपुं°—-—पुष्कं पुष्टि राति- रा + क—अजमेर के निकट एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान
- **पुष्करः**—पुं°—-—पुष्कं पुष्टि राति- रा + क—सरोवर, तालाब
- **पुष्करः**—पुं°—-—पुष्कं पुष्टि राति- रा + क—एक प्रकार का ढोल, धौंसा, ताशा
- **पुष्करः**—पुं°—-—पुष्कं पुष्टि राति- रा + क—सूर्य
- **पुष्करः**—पुं°—-—पुष्कं पुष्टि राति- रा + क—अनावृष्टि या दुर्भिक्ष पैदा करने वाले बादलों का समूह
- **पुष्करः**—पुं°—-—पुष्कं पुष्टि राति- रा + क—शिव का विशेषण
- **पुष्करः**—पुं°—-—पुष्कं पुष्टि राति- रा + क—शिव के सात विशाल प्रभागों में से एक
- **पुष्करम्**—नपुं°—-—पुष्कं पुष्टि राति- रा + क—शिव के सात विशाल प्रभागों में से एक
- **पुष्कराक्षः**—पुं°—पुष्करम्-अक्षः—-—विष्णु का विशेषण
- **पुष्कराख्यः**—पुं°—पुष्करम्-आख्यः—-—सारस
- **पुष्कराह्वः**—पुं°—पुष्करम्-आह्वः—-—सारस
- **पुष्करतीर्थः**—पुं°—पुष्करम्-तीर्थः—-—स्नान करने का एक प्रसिद्ध स्थान
- **पुष्करपत्रम्**—नपुं°—पुष्करम्-पत्रम्—-—कमल का पत्ता
- **पुष्करप्रियः**—पुं°—पुष्करम-प्रियः—-—मोम
- **पुष्करबीजम्**—नपुं°—पुष्करम्-बीजम्—-—कमलगट्टा
- **पुष्करव्याघ्रः**—पुं°—पुष्करम्-व्याघ्रः—-—घड़ियाल
- **पुष्करशिखा**—स्त्री°—पुष्करम्-शिखा—-—कमल की जड़
- **पुष्करस्थपतिः**—पुं°—पुष्करम्-स्थपतिः—-—शिव का विशेषण
- **पुष्करसृज्**—स्त्री°—पुष्करम्-सृज्—-—कमलों की माला
- **पुष्करिणी**—स्त्री°—-—पुष्करिन् + ङीप्—हथिनी
- **पुष्करिणी**—स्त्री°—-—पुष्करिन् + ङीप्—कमलसरोवर
- **पुष्करिणी**—स्त्री°—-—पुष्करिन् + ङीप्—सरोवर, जलाशय
- **पुष्करिणी**—स्त्री°—-—पुष्करिन् + ङीप्—कमल का पोधा
- **पुष्करिन्**—वि°—-—पुष्कर + इनि—कमलों से भरी स्थली
- **पुष्करिन्**—पुं°—-—पुष्कर + इनि—हाथी
- **पुष्कल**—वि°—-—पुष् + कलच्, किच्च, पुष्कसिध्मा° लच् वा - तारा°—बहुत, काफ़ी, प्रचुर

- **पुष्कल**—वि०—–—पुष् + कलच्, किच्च, पुष्कसिध्मा० लच् वा - तारा०—पूरा, समस्त
- **पुष्कल**—वि०—–—पुष् + कलच्, किच्च, पुष्कसिध्मा० लच् वा - तारा०—समृद्ध, उज्ज्वल, शानदार
- **पुष्कल**—वि०—–—पुष् + कलच्, किच्च, पुष्कसिध्मा० लच् वा - तारा०—श्रेष्ठ, सर्वोत्तम, प्रमुख
- **पुष्कल**—वि०—–—पुष् + कलच्, किच्च, पुष्कसिध्मा० लच् वा - तारा०—निकटवर्ती
- **पुष्कल**—वि०—–—पुष् + कलच्, किच्च, पुष्कसिध्मा० लच् वा - तारा०—निर्घोषमय, गूँजने वाला, प्रतिध्वनि करने वाला
- **पुष्कलः**—पुं०—–—–—एक प्रकार का ढोल
- **पुष्कलः**—पुं०—–—–—मेरु पर्वत का विशेषण
- **पुष्कलम्**—नपुं०—–—–—६४ मुट्ठियों के बराबर एक विशेष तोल या माप
- **पुष्कलम्**—नपुं०—–—–—चार ग्रास की भिक्षा
- **पुष्कलकः**—पुं०—–—पुष्कल + कन्—कस्तूरी-मृग
- **पुष्कलकः**—पुं०—–—पुष्कल + कन्—कुंडी, चटख़नी, फन्नी
- **पुष्ट**—भू० क०कृ०—–—पुष् + क्त—पाला-पोसा, खिलाया-पिलाया, परवरिश किया गया, शिक्षित किया गया
- **पुष्ट**—भू० क०कृ०—–—पुष् + क्त—फलता-फूलता हुआ, बढ़ता हुआ, बलवान्, हृष्टपुष्ट
- **पुष्ट**—भू० क०कृ०—–—पुष् + क्त—टहल किया गया, देखभाल किया हुआ
- **पुष्ट**—भू० क०कृ०—–—पुष् + क्त—समृद्ध, पूरी तरह सम्पन्न
- **पुष्ट**—भू० क०कृ०—–—पुष् + क्त—पूर्ण, पूरा
- **पुष्ट**—भू० क०कृ०—–—पुष् + क्त—पूरीध्वनि वाला, ऊँची आबाज़ वाला
- **पुष्ट**—भू० क०कृ०—–—पुष् + क्त—प्रमुख
- **पुष्टि**—स्त्री०—–—पुष्ट + क्तिन्—पालन-पोषण कला, पालना परवरिश, करना
- **पुष्टि**—स्त्री०—–—पुष्ट + क्तिन्—पालन-पोषण, संवर्धन, वृद्धि, प्रगति
- **पुष्टि**—स्त्री०—–—पुष्ट + क्तिन्—पराक्रम शालिता, स्थूलता
- **पुष्टि**—स्त्री०—–—पुष्ट + क्तिन्—धन-दौलत, सम्पत्ति, सुख का साधन
- **पुष्टि**—स्त्री०—–—पुष्ट + क्तिन्—समृद्धि, सम्पन्नता
- **पुष्टि**—स्त्री०—–—पुष्ट + क्तिन्—विकास, पूर्णता
- **पुष्टिकर**—वि०—पुष्टि-कर—–—पौष्टिक, पुष्टि कारक
- **पुष्टिकर्मन्**—नपुं०—पुष्टि-कर्मन्—–—सांसारिक सम्पन्नता प्राप्त करने के लिए किया जाने वाला धार्मिक अनुष्ठान
- **पुष्टिद**—वि०—पुष्टि-द—–—संवर्धनकारी, समृद्धिकर

- **पुष्टिवर्धन**—वि°—पुष्टि-वर्धन—-—कल्याणकारी, समृद्धि कारक
- **पुष्टिवर्धनः**—वि°—पुष्टि-वर्धनः—-—मुर्ग़ा
- **पुष्**—दिवा° पर° <पुष्यति>—-—-—खुलना, धौंकना या फूंकना, विस्तार करना, खिलना
- **पुष्पम्**—नपुं°—-—पुष् + अच्—फूल, कुसुम
- **पुष्पम्**—नपुं°—-—पुष् + अच्—रजः स्राव, रजोधर्म
- **पुष्पम्**—नपुं°—-—पुष् + अच्—पुखराज
- **पुष्पम्**—नपुं°—-—पुष् + अच्—आंखों का रोग विशेष, श्वेतक
- **पुष्पम्**—नपुं°—-—पुष् + अच्—कुबेर का रथ
- **पुष्पम्**—नपुं°—-—पुष् + अच्—शौर्य, (प्रेमकी भाषा में) नम्रता
- **पुष्पम्**—नपुं°—-—पुष् + अच्—विस्तार होना, खिलना, प्रफूल्ल होना
- **पुष्पाञ्जनम्**—नपुं°—पुष्पम्-अञ्जनम्—-—पीतल की भस्म जो अंजन की भांति प्रयुक्त होती है
- **पुष्पाञ्जलिः**—स्त्री°—पुष्पम्-अञ्जलिः—-—फूलों की अंजलि
- **पुष्पाभिषेक**—पुं°—पुष्पम्-अभिषेक—-—पुष्पस्नान
- **पुष्पाम्बुजम्**—नपुं°—पुष्पम्-अम्बुजम्—-—पुष्प रस या मकरन्द
- **पुष्पाचयः**—पुं°—पुष्पम्-अवचयः—-—फूलों का चुनना, फूल एकत्र करना
- **पुष्पास्त्रः**—पुं°—पुष्पम्-अस्त्रः—-—कामदेव का विशेषण
- **पुष्पाकार**—वि°—पुष्पम्-आकार—-—फूलों से समृद्ध
- **पुष्पागमः**—पुं°—पुष्पम्-आगमः—-—बसन्त ऋतु
- **पुष्पाजीवः**—पुं°—पुष्पम्-आजीवः—-—माली, मालाकार
- **पुष्पापीडः**—पुं°—पुष्पम्-आपीडः—-—फूलों का गजरा
- **पुष्पायुधः**—पुं°—पुष्पम्-आयुधः—-—कामदेव
- **पुष्पिषुः**—पुं°—पुष्पम्-इषुः—-—कामदेव
- **पुष्पासवम्**—नपुं°—पुष्पम्-आसवम्—-—मधु
- **पुष्पासारः**—पुं°—पुष्पम्-आसारः—-—फूलों की बौछार
- **पुष्पोद्गमः**—पुं°—पुष्पम्-उद्गमः—-—फूलों का निकलना
- **पुष्पोद्यानम्**—नपुं°—पुष्पम्-उद्यानम्—-—पुष्प वाटिका
- **पुष्पोजीविन्**—पुं°—पुष्पम्-उपजीविन्—-—माली, बागवान, मालाकार

- **पुष्पकालः**—पुं°—पुष्पम्-कालः—-—फुलों का समय, बसन्त ऋतु
- **पुष्पकालः**—पुं°—पुष्पम्-कालः—-—मासिक रजोधर्म का समय
- **पुष्पकासीसम्**—नपुं°—पुष्पम्-कासीसम्—-—एक प्रकार का कसीस
- **पुष्पकीटः**—पुं°—पुष्पम्-कीटः—-—भौंरा
- **पुष्पकेतनः**—पुं°—पुष्पम्-केतनः—-—कामदेव
- **पुष्पकेतुः**—पुं°—पुष्पम्-केतुः—-—कामदेव
- **पुष्पकेतुः**—नपुं°—पुष्पम्-केतुः—-—पुष्परस, मकरंद
- **पुष्पकेतुः**—नपुं°—पुष्पम्-केतुः—-—पुष्पांजन
- **पुष्पगृहम्**—नपुं°—पुष्पम्-गृहम्—-—फूलों का घर, पुष्प संधारक
- **पुष्पघातकः**—पुं°—पुष्पम्-घातकः—-—बाँस
- **पुष्पचयः**—पुं°—पुष्पम्-चयः—-—फूल चुनना
- **पुष्पचयः**—पुं°—पुष्पम्-चयः—-—फूलों का संग्रह
- **पुष्पचापः**—पुं°—पुष्पम्-चापः—-—कामदेव
- **पुष्पचामरः**—पुं°—पुष्पम्-चामरः—-—एक प्रकार की बेंत
- **पुष्पजम्**—नपुं°—पुष्पम्-जम्—-—फूलों का रस
- **पुष्पदः**—पुं°—पुष्पम्-दः—-—वृक्ष
- **पुष्पदन्तः**—पुं°—पुष्पम्-दन्तः—-—शिव के एक गण का नाम
- **पुष्पदन्तः**—पुं°—पुष्पम्-दन्तः—-—महिम्नस्तोत्र के रचयिता का नाम वायव्य कोण में अधिष्ठित दिग्गज
- **पुष्पदामन**—नपुं°—पुष्पम्-दामन—-—फूलमाला
- **पुष्पद्रवः**—पुं°—पुष्पम्-द्रवः—-—फूलों का रस मकरंद
- **पुष्पद्रवः**—पुं°—पुष्पम्-द्रवः—-—फूलों का आसव
- **पुष्पद्रुमः**—पुं°—पुष्पम्-द्रुमः—-—पुष्पप्रयान वृक्ष
- **पुष्पधः**—पुं°—पुष्पम्-धः—-—व्रात्य ब्राह्मण की सन्तान
- **पुष्पधनुस्**—पुं°—पुष्पम्-धनुस्—-—कामदेव
- **पुष्पधन्वन्**—पुं°—पुष्पम्-धन्वन्—-—कामदेव
- **पुष्पधारणः**—पुं°—पुष्पम्-धारणः—-—विष्णु का विशेषण
- **पुष्पध्वजः**—पुं°—पुष्पम्-ध्वजः—-—कामदेव

- **पुष्पनिक्षः**—पुं°—पुष्पम्-निक्षः—-—भौंरा
- **पुष्पनिर्यासः**—पुं°—पुष्पम्-निर्यासः—-—पुष्परस, मकरंद, फूलों का रस
- **पुष्पनेत्रम्**—नपुं°—पुष्पम्-नेत्रम्—-—फूलनली
- **पुष्पपत्रिन्**—पुं°—पुष्पम्-पत्रिन्—-—कामदेव
- **पुष्पपथः**—पुं°—पुष्पम्-पथः—-—योनि
- **पुष्पपुरम्**—नपुं°—पुष्पम्-पुरम्—-—पाटलिपुत्र
- **पुष्पप्रचयः**—पुं°—पुष्पम्-प्रचयः—-—फूल तोड़ना, फूलचुनना
- **पुष्पप्रचायः**—पुं°—पुष्पम्-प्रचायः—-—फूल तोड़ना, फूलचुनना
- **पुष्पप्रचायिका**—स्त्री°—पुष्पम्-प्रचयिका—-—फूलों का चुनना
- **पुष्पप्रस्तारः**—पुं°—पुष्पम्-प्रस्तारः—-—पुष्पशय्या, फूलों का बिछौना
- **पुष्पबलिः**—पुं°—पुष्पम्-बलिः—-—फूलों की भेंट या चढ़ावा
- **पुष्पबाणः**—पुं°—पुष्पम्-बाणः—-—कामदेव
- **पुष्पवाणः**—पुं°—पुष्पम्-वाणः—-—कामदेव
- **पुष्पभवः**—पुं°—पुष्पम्-भवः—-—पुष्परस, मकरंद
- **पुष्पमञ्जरिका**—स्त्री°—पुष्पम्-मञ्जरिका—-—नीला कमल
- **पुष्पमाला**—स्त्री°—पुष्पम्-माला—-—फूलमाला
- **पुष्पमासः**—पुं°—पुष्पम्-मासः—-—चैत्र का महीना
- **पुष्पमासः**—पुं°—पुष्पम्-मासः—-—वसंत ऋतु
- **पुष्परजस्**—नपुं°—पुष्पम्-रजस्—-—पराग
- **पुष्परथः**—पुं°—पुष्पम्-रथः—-—हवा खोरी के काम आनेवाला रथ (जो युद्ध के लिए न हो)
- **पुष्परसः**—पुं°—पुष्पम्-रसः—-—फूलों का रस, मकरंद
- **पुष्पाह्वयम्**—नपुं°—पुष्पम्-आह्वयम्—-—मधु
- **पुष्परागः**—पुं°—पुष्पम्-रागः—-—पुखराज
- **पुष्पराजः**—पुं°—पुष्पम्-राजः—-—पुखराज
- **पुष्परेणुः**—पुं°—पुष्पम्-रेणुः—-—पराग
- **पुष्परोचनः**—पुं°—पुष्पम्-रोचनः—-—नागकेसर का वृक्ष
- **पुष्पलावः**—पुं°—पुष्पम्-लावः—-—फुल चुनने वाला

- **पुष्पलावी**—स्त्री°—पुष्पम्-लावी—-—फूल चुनने वाली, मालिन
- **पुष्पलिक्षः**—पुं°—पुष्पम्-लिक्षः—-—भौंरा
- **पुष्पलिह**—पुं°—पुष्पम्-लिह—-—भौंरा
- **पुष्पवटुकः**—पुं°—पुष्पम्-वटुकः—-—रसिया, बाँका, छैल-छबीला
- **पुष्पवर्षः**—पुं°—पुष्पम्-वर्षः—-—फूलों की बौछार
- **पुष्पवर्षणम्**—नपुं°—पुष्पम्-वर्षणम्—-—फूलों की बौछार
- **पुष्पवाटिका**—स्त्री°—पुष्पम्-वाटिका—-—फुलवाटी
- **पुष्पवाटी**—स्त्री°—पुष्पम्-वाटी—-—फुलवाटी
- **पुष्पवृक्षः**—पुं°—पुष्पम्-वृक्षः—-—पुष्पप्रधान वृक्ष
- **पुष्पवेणी**—स्त्री°—पुष्पम्-वेणी—-—चोटी में लगाया हुआ फूलों का गजरा, फूलों की माला
- **पुष्पशकटी**—स्त्री°—पुष्पम्-शकटी—-—आकाशवाणी
- **पुष्पशय्या**—स्त्री°—पुष्पम्-शय्या—-—फूलों की सेज, फूलों का बिछौना
- **पुष्पशरः**—पुं°—पुष्पम्-शरः—-—कामदेव
- **पुष्पशरासनः**—पुं°—पुष्पम्-शरासनः—-—कामदेव
- **पुष्पसायकः**—पुं°—पुष्पम्-सायकः—-—कामदेव
- **पुष्पसमयः**—पुं°—पुष्पम्-समयः—-—बसन्त
- **पुष्पसारः**—पुं°—पुष्पम्-सारः—-—फूलों का रस, मकरंद
- **पुष्पहासा**—स्त्री°—पुष्पम्-हासा—-—रजस्वला स्त्री
- **पुष्पहीना**—स्त्री°—पुष्पम्-हीना—-—गतार्तवा स्त्री, जिसकी बच्चे पैदा करने कों आयु बीत चुकी है
- **पुष्पकम्**—नपुं°—-—पुष्प + कन्—फूल
- **पुष्पकम्**—नपुं°—-—पुष्प + कन्—पीतल की भस्म
- **पुष्पकम्**—नपुं°—-—पुष्प + कन्—लोहे का प्याला
- **पुष्पकम्**—नपुं°—-—पुष्प + कन्—कुबेर का रथ (जिसे कुबेर से रावण ने छीन लिया था, तथा जो फिर राम ने ले लिया था
- **पुष्पकम्**—नपुं°—-—पुष्प + कन्—कंकण
- **पुष्पकम्**—नपुं°—-—पुष्प + कन्—एक प्रकार का पुष्पाजंन
- **पुष्पकम्**—नपुं°—-—पुष्प + कन्—आंखों का एक विशेष रोग
- **पुष्पन्धयः**—पुं°—-—पुष्प + धे + खश्, मुम्—भौंरा

- **पुष्पलकः**—पुं°—-—पुष्प + लक् + अच्—स्थाणु, खूँटा, फन्नी, कील
- **पुष्पवत्**—वि°—-—पुष्प + मतुप्, वत्वम्—प्रफुल्ल, फूलों से युक्त
- **पुष्पवत्**—वि°—-—पुष्प + मतुप्, वत्वम्—फूलों से जड़ा हुआ
- **पुष्पवत्**—पुं°—-—-—सूर्य और चन्द्रमा
- **पुष्पवती**—स्त्री°—-—-—रजस्वला स्त्री
- **पुष्पा**—स्त्री°—-—पुष्प् + अच् + टाप्—चम्पा नाम की नगरी
- **पुष्पिका**—स्त्री°—-—पुष्प् + ण्वुल् + टाप्, इत्वम्—दांतो पर जमी हुई मैल
- **पुष्पिका**—स्त्री°—-—पुष्प् + ण्वुल् + टाप्, इत्वम्—लिंगच्छद में जमी हुई मैल
- **पुष्पिका**—स्त्री°—-—पुष्प् + ण्वुल् + टाप्, इत्वम्—अध्याय के अन्तिम शब्द जिनमें वर्णित विषय की सूचना दी जाती है
- **पुष्पिणी**—स्त्री°—-—पुष्पिन् + ङीप्—रजस्वला स्त्री
- **पुष्पित**—वि°—-—पुष्प् + क्त—फूलों से युक्त, विकसित फूलों से भरा हुआ, खिला हुआ
- **पुष्पित**—वि°—-—पुष्प् + क्त—फूलों से अलंकृत, (भाषण) भड़कीला
- **पुष्पित**—वि°—-—पुष्प् + क्त—फूलों से लदा हुआ, फूलों से सम्पन्न
- **पुष्पित**—वि°—-—पुष्प् + क्त—पूर्ण विकसित, पूरी तरह खिला हुआ
- **पुष्पिता**—स्त्री°—-—पुष्प् + क्त+टाप्—रजस्वला स्त्री
- **पुष्पिन्**—वि°—-—पुष्प + इनि—फूल धारण करने वाला, प्रफुल्ल
- **पुष्पिन्**—वि°—-—पुष्प + इनि—फूलों से भरा हुआ, फूलों से समद्ध
- **पुष्यः**—पुं°—-—पुष् + क्यप्—कलियुग
- **पुष्यः**—पुं°—-—पुष् + क्यप्—पौष का महीना
- **पुष्यः**—पुं°—-—पुष् + क्यप्—आठवाँ नक्षत्र (तीन तारों का पुँज)
- **पुष्यरथः**—पुं°—पुष्यः-रथः—-—पुष्प रथ
- **पुष्यलकः**—पुं°—-—पुष्य + लक् + अच्—
- **पुस्तम्**—नपुं°—-—पुस्त् + घञ्—पलस्तर करना, लेप करना, रेखाचित्र बनाना
- **पुस्तम्**—नपुं°—-—पुस्त् + घञ्—मिट्टी का शिल्पकार्य, मिट्टी के खिलौना बनाना
- **पुस्तम्**—नपुं°—-—पुस्त् + घञ्—मिट्टी, काष्ठ या किसी धातु की बनी कोई वस्तु
- **पुस्तम्**—नपुं°—-—पुस्त् + घञ्—पुस्तक, हाथ से लिखी पुस्तक
- **पुस्तकर्मनु**—नपुं°—-—-—लीपना-पोतना, चित्रकारी करना

- **पुस्तक**—पुं°—–—पुस्त + कन्—पोथी, हाथ की लिखी पुस्तक
- **पुस्तकम्**—नपुं°—–—पुस्त + कन्—पोथी, हाथ की लिखी पुस्तक
- **पुस्ती**—स्त्री°—–—पुस्त + ङीप्—पोथी, हाथ की लिखी पुस्तक
- **पू**—भ्वा° आ° <पवते>, दिवा° आ° <पुनाति>, क्या° उभ° <पुनीते>, <पूत>, प्रेर° <पावयति>, इच्छा° <पुपूषति>, <पिपविषते>—–—–—पवित्र करना, छानना, शुद्ध करना
- **पू**—भ्वा° आ° <पवते>, दिवा° आ° <पुनाति>, क्या° उभ° <पुनीते>, <पूत>, प्रेर° <पावयति>, इच्छा° <पुपूषति>, <पिपविषते>—–—–—निथारना
- **पू**—भ्वा° आ° <पवते>, दिवा° आ° <पुनाति>, क्या° उभ° <पुनीते>, <पूत>, प्रेर° <पावयति>, इच्छा° <पुपूषति>, <पिपविषते>—–—–—भूसी साफ करना, फटकना
- **पू**—भ्वा° आ° <पवते>, दिवा° आ° <पुनाति>, क्या° उभ° <पुनीते>, <पूत>, प्रेर° <पावयति>, इच्छा° <पुपूषति>, <पिपविषते>—–—–—प्रायश्चित करना, परिमार्जन करना
- **पू**—भ्वा° आ° <पवते>, दिवा° आ° <पुनाति>, क्या° उभ° <पुनीते>, <पूत>, प्रेर° <पावयति>, इच्छा° <पुपूषति>, <पिपविषते>—–—–—पहचानना, विवेक करना
- **पू**—भ्वा° आ° <पवते>, दिवा° आ° <पुनाति>, क्या° उभ° <पुनीते>, <पूत>, प्रेर° <पावयति>, इच्छा° <पुपूषति>, <पिपविषते>—–—–—सोचना, उपाय ढूंढना, आविष्कार करना
- **पूगः**—पुं°—–—पू + गन्, कित्—समुच्चय, ढेर, संग्रह, मात्रा
- **पूगः**—पुं°—–—पू + गन्, कित्—समाज, निगम, संघ
- **पूगः**—पुं°—–—पू + गन्, कित्—सुपारी, पूगी
- **पूगः**—पुं°—–—पू + गन्, कित्—प्रकृति, गुण, स्वभाव
- **पूगम्**—नपुं°—–—पू + गन्, कित्—सुपारी
- **पूगपात्रम्**—नपुं°—पूगः-पात्रम्—–—थूकने का बर्तन, पीकदान
- **पूगपात्रम्**—नपुं°—पूगः-पात्रम्—–—पान-दान
- **पूगपीटम्**—नपुं°—पूगः-पीटम्—–—थूकने का बर्तन
- **पूगपीडम्**—नपुं°—पूगः-पीडम्—–—थूकने का बर्तन
- **पूगफलम्**—नपुं°—पूगः-फलम्—–—सुपारी
- **पूगवैरम्**—नपुं°—पूगः-वैरम्—–—अनेक लोगों से शत्रुता
- **पूज्**—चुरा° उभ° <पूजयति>,<पूजयते>,<पूजित>—–—–—आराधना करना, पूजा करना, अर्चना करना, सम्मान करना, सादर स्वागत करना
- **पूज्**—चुरा° उभ° <पूजयति>,<पूजयते>,<पूजित>—–—–—उपहार देना, भेंट चढ़ाना
- **संपूज्**—चुरा° उभ°—सम्-पूज्—–—पूजना, अर्चना करना, सम्मान करना

- **संपूज्**—चुरा° उभ°—सम्-पूज्———उपहार देना, (दक्षिणादि से) सम्मानित करना
- **पूजक**—वि°———पूज् + ण्वुल्—सम्मान करने वाला, आराधक, पूजा करने वाला, आदर करने वाला आदि
- **पूजनम्**—नपुं°———पूज् + ल्युट्—पूजना, सम्मान करना, आराधना करना
- **पूजा**—स्त्री°———पूज् + अ + टाप्—पूजा, सम्मान, आराधना, आदर, श्रद्धांजलि
- **पूजार्ह**—वि°—पूजा + अर्ह———श्रद्धेय, आदरणीय, पूज्य, श्रद्धास्पद
- **पूजित**—भू° क°कृ°———पूज् + क्त—सम्मानित, आदृत
- **पूजित**—भू° क°कृ°———पूज् + क्त—आराधित, प्रतिष्ठित
- **पूजित**—भू° क°कृ°———पूज् + क्त—स्वीकृत
- **पूजित**—भू° क°कृ°———पूज् + क्त—संपन्न
- **पूजित**—भू° क°कृ°———पूज् + क्त—अनुशंसित, सिफारिश किया हुआ
- **पूजिल**—वि°———पूज् + इलच्—श्रद्धेय, आदरणीय
- **पूजिलः**—पुं°———पूज् + इलच्—देव
- **पूज्य**—वि°———पूज् + ण्यच्—आदर का अधिकारी, सम्मान के योग्य, आदरणीय श्रद्धेय
- **पूज्यः**—पुं°———पूज् + ण्यच्—श्वसुर
- **पूण्**—चुरा° उभ° <पूणयति>, <पूणयते>—————एक जगह ढेर लगाना, संचय करना, राशि लगाना
- **पूत्**—अव्य°—————फूंक मारने की अनुकृति का सूचक शब्द
- **पूत**—भू° क° कृ°———पू + क्त—शुद्ध किया हुआ, छाना हुआ, धोया हुआ
- **पूत**—भू° क° कृ°———पू + क्त—पिछोड़ा हुआ, फटका हुआ
- **पूत**—भू° क° कृ°———पू + क्त—प्रायश्चित किया हुआ
- **पूत**—भू° क° कृ°———पू + क्त—योजनाकृत, आविष्कृत
- **पूत**—भू° क° कृ°———पू + क्त—सड़ने वाला, गला-सड़ा, दुर्गन्धमय, बदबूदार
- **पूतः**—पुं°———पू + क्त—शंख
- **पूतः**—पुं°———पू + क्त—सफेद कुश घास
- **पूतम्**—नपुं°———पू + क्त—सचाई
- **पूतात्मन्**—वि°—पूत-आत्मन्———पवित्र मन वाला
- **पूतात्मन्**—पुं°—पूत-आत्मन्———विष्णु का विशेषण
- **पूतक्रतायी**—स्त्री°—पूत-क्रतायी———इन्द्र की पत्नी शची

- **पूर्ततुः**—पुं°—पूत-ऋतुः—-—इन्द्र का विशेषण
- **पूततृणम्**—नपुं°—पूत-तृणम्—-—सफ़ेद कुश घास
- **पूतद्रुः**—पुं°—पूत-द्रुः—-—पलाश वृक्ष
- **पूतधान्यम्**—नपुं°—पूत-धान्यम्—-—तिल
- **पूतपाप**—वि°—पूत-पाप—-—निष्पाप, पाप से रहित
- **पूतपाप्यन्**—वि°—पूत-पाप्यन्—-—निष्पाप, पाप से रहित
- **पूतफलः**—पुं°—पूत-फलः—-—कटहल का वृक्ष
- **पूतना**—स्त्री°—-—पू + णिच् + युच् + टाप्—एक राक्षसी जो कृष्ण को जव वह अबोध बालक था, मारने का प्रयत्न करती हुई, स्वयं उनके द्वारा मृत्यु को प्राप्त हुई
- **पूतना**—स्त्री°—-—पू + णिच् + युच् + टाप्—राक्षसी
- **पूतनारिः**—पुं°—पूतना-अरिः—-—कृष्ण के विशेषण
- **पूतनासूदनः**—पुं°—पूतना-सूदनः—-—कृष्ण के विशेषण
- **पूतनाहन्**—पुं°—पूतना-हन्—-—कृष्ण के विशेषण
- **पूति**—वि°—-—पूय् + क्तिच्—बदबूदार, सड़ा हुआ, दुर्गंधयुक्त, दुर्गंध देनेवाला
- **पूतिः**—स्त्री°—-—पूय् + क्तिच्—पवित्रीकरण
- **पूतिः**—स्त्री°—-—पूय् + क्तिच्—दुर्गंध, सड़ांद
- **पूतिः**—स्त्री°—-—पूय् + क्तिच्—बदबू
- **पूति**—नपुं°—-—पूय् + क्तिच्—गंदा पानी
- **पूति**—नपुं°—-—पूय् + क्तिच्—पीप, मवाद
- **पूत्यण्डः**—पुं°—पूति-अण्डः—-—कस्तूरी-मृग
- **पूतिकाष्ठम्**—नपुं°—पूति-काष्ठम्—-—देव दारु वृक्ष
- **पूतिकाष्ठकः**—पुं°—पूति-काष्ठकः—-—सरल वृक्ष
- **पूतिगन्ध**—वि°—पूति-गन्ध—-—बदबुदार, दुर्गंधयुक्त, दुर्गंध देने वाला, सड़ा हुआ
- **पूतिगन्धः**—पुं°—पूति-गन्धः—-—सड़ांद, दुर्गंध, बदबू
- **पूतिगन्धः**—पुं°—पूति-गन्धः—-—गंधक
- **पूतिगन्धम्**—नपुं°—पूति-गन्धम्—-—जस्ता, रांगा
- **पूतिगन्धम्**—नपुं°—पूति-गन्धम्—-—गंधक

- **पूतिगन्धि**—वि°—पूति-गन्धि—-—बदबूदार, दुर्गंध देनेवाला
- **पूतिनासिक**—वि°—पूति-नासिक—-—दुर्गंधमय नाक वाला
- **पूतिवक्तृ**—वि°—पूति-वक्तृ—-—जिसके मुँह से बदबू आती हो
- **पूतिव्रणम्**—नपुं°—पूति-व्रणम्—-—दूषित फोड़ा (जिसमें से पीप निकले)
- **पूकित**—वि°—-—पूति + कै + क—सड़ा हुआ, बदबूदार, सड़ागला
- **पूकितकम्**—नपुं°—-—पूति + कै + क—लीद, मल, विष्ठा
- **पूतिका**—स्त्री°—-—पूतिक + टाप्—एक प्रकार की जड़ी
- **पूतिकामुखः**—पुं°—पूतिका-मुखः—-—दो कोष वाला शंख
- **पून**—वि°—-—पू + क्त तस्य नः—नष्ट किया गया
- **पूपः**—पुं°—-—पू + किप्, पा + क—पूआ
- **पूपला**—स्त्री°—-—पूप + ला + क + टाप्—एक प्रकार का मीठा पुआ, मालपुआ
- **पूपली**—स्त्री°—-—पूप + ला + क + ङीप्—एक प्रकार का मीठा पुआ, मालपुआ
- **पूपलिका**—स्त्री°—-—पूपाय अलति-पूप + अल् + अच् + ङीष् + कन् + टाप्, ह्रस्वः—एक प्रकार का मीठा पुआ, मालपुआ
- **पूपाली**—स्त्री°—-—पूप + अल् + पच्, ङीष्—एक प्रकार का मीठा पुआ, मालपुआ
- **पूपिका**—स्त्री°—-—पूप् + ठन् + टाप्—एक प्रकार का मीठा पुआ, मालपुआ
- **पूयः**—नपुं°—-—पूय् + अच्—पीप, फोड़ या घाव से निकलने वाला मवाद, पीप आना, मवाद निकलना
- **पूयम्**—पुं°—-—पूय् + अच्—पीप, फोड़ या घाव से निकलने वाला मवाद, पीप आना, मवाद निकलना
- **पूयरक्तः**—पुं°—पूयः-रक्तः—-—नाक का एक रोग विशेष (इसमें पीप से युक्त रक्त, या मवाद नाक से बहता है)
- **पूयरक्तम्**—नपुं°—पूयः-रक्तम्—-—कचलोहू, मवाद
- **पूयरक्तम्**—नपुं°—पूयः-रक्तम्—-—नथनों से मवाद का वहना
- **पूयनम्**—नपुं°—-—पूय् + ल्युट्—
- **पूर्**—दिवा° आ° <पूर्यते>, <पूर्ण>—-—भरना, पूर्ण करना
- **पूर्**—दिवा° आ° <पूर्यते>, <पूर्ण>—-—प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना
- **पूर्**—चुरा° उभ° <पूरयति>, <पूरयते>, <पूरितः>, पृ° का प्रेर° रूप—-—भरना
- **पूर्**—चुरा° उभ° <पूरयति>, <पूरयते>, <पूरितः>, पृ° का प्रेर° रूप—-—हवा से भर जाना, (शंख आदि में) फूंक मारना
- **पूर्**—चुरा° उभ° <पूरयति>, <पूरयते>, <पूरितः>, पृ° का प्रेर° रूप—-—ढकना, घेरना
- **पूर्**—चुरा° उभ° <पूरयति>, <पूरयते>, <पूरितः>, पृ° का प्रेर° रूप—-—पूरा करना, संतुष्ट करना

- **पूर्**—चुरा० उभ० <पूरयति>, <पूरयते>, <पूरितः>, पृ० का प्रेर० रूप—-——-—तीव्र करना, (ध्वनि आदि) सबल करना
- **पूर्**—चुरा० उभ० <पूरयति>, <पूरयते>, <पूरितः>, पृ० का प्रेर० रूप—-——-—गुंजायमान करना
- **पूर्**—चुरा० उभ० <पूरयति>, <पूरयते>, <पूरितः>, पृ० का प्रेर० रूप—-——-—बोझ लादना, समृद्ध करना
- **आपूर्**—चुरा० उभ० —आ-पूर्—-—भरना, पूर्ण करना, पूरा करना, ऊपर तक भरना
- **आपूर्**—चुरा० उभ० —आ-पूर्—-—हवा से भरना, (शंख आदि) बजाना
- **आपूर्**—चुरा० उभ० —आ-पूर्—-—अन्तर्ग्रथित करना, पिरोना
- **परिपूर्**—चुरा० उभ० —परि-पूर्—-—भरना, पूरी तरह से भर लेना
- **प्रपूर्**—चुरा० उभ० —प्र-पूर्—-—भरना, उपहारों से भरना, समृद्ध करना
- **संपूर्**—चुरा० उभ० —सम्-पूर्—-—पूरा करना, भरना
- **पूरः**—पुं०—-—पूर् + क—भरना, पूरा करना
- **पूरः**—पुं०—-—पूर् + क—संतोष देना, प्रसन्न करना, तृप्त करना
- **पूरः**—पुं०—-—पूर् + क—उडेलना, पूर्ति करना
- **पूरः**—पुं०—-—पूर् + क—नदी का चढ़ना, समुद्र में पानी का बढ़ना, बाढ़
- **पूरः**—पुं०—-—पूर् + क—धारा या नदी का रूप होना, बाढ़ आना
- **पूरः**—पुं०—-—पूर् + क—जलखण्ड, सरोवर, तालाव
- **पूरः**—पुं०—-—पूर् + क—घाव का साफ़ होना या भरना
- **पूरः**—पुं०—-—पूर् + क—एक प्रकार की रोटी या पूरी
- **पूरम्**—नपुं०—-—पूर् + क—एक प्रकार का गंधद्रव्य
- **पूरोत्पीडः**—पुं०—पूरः-उत्पीडः—-—बाढ़ या जलाधिक्य
- **पूरक**—वि०—-—पूर् + ण्वुल्—भरने वाला, पूरा करने वाला
- **पूरक**—वि०—-—पूर् + ण्वुल्—संतुष्ट करने वाला, तृप्त करने वाला
- **पूरकः**—पुं०—-—पूर् + ण्वुल्—नींबू का पौधा
- **पूरकः**—पुं०—-—पूर् + ण्वुल्—श्राद्ध की समाप्ति पर पितरों को दिया जाने वाला पिंड
- **पूरकः**—पुं०—-—पूर् + ण्वुल्—(अंकगणित में) गुणक
- **पूरण**—वि०—-—पूर् + ल्युट्—भरना, पूरा करना
- **पूरण**—वि०—-—पूर् + ल्युट्—क्रम सूचक (अंको के साथ प्रयुक्त)
- **पूरण**—वि०—-—पूर् + ल्युट्—संतुष्ट करने वाला

- **पूरणः**—पुं॰—-—पूर् + ल्युट्—पुल, बांध, सेतु
- **पूरणः**—पुं॰—-—पूर् + ल्युट्—समुद्र
- **पूरणम्**—नपुं॰—-—पूर् + ल्युट्—भरना
- **पूरणम्**—नपुं॰—-—पूर् + ल्युट्—ऊपर तक भरना, पूरा करना
- **पूरणम्**—नपुं॰—-—पूर् + ल्युट्—फूलना, सूजना
- **पूरणम्**—नपुं॰—-—पूर् + ल्युट्—पूरा करना, सम्पन्न करना
- **पूरणम्**—नपुं॰—-—पूर् + ल्युट्—एक प्रकार की पूरी या रोटी
- **पूरणम्**—नपुं॰—-—पूर् + ल्युट्—मृतक कार्य में प्रयुक्त रोटी
- **पूरणम्**—नपुं॰—-—पूर् + ल्युट्—वृष्टि, बरसना
- **पूरणम्**—नपुं॰—-—पूर् + ल्युट्—ऐंठन, मरोड़
- **पूरणम्**—नपुं॰—-—पूर् + ल्युट्—गुणा
- **पूरणप्रत्ययः**—पुं॰—पूरण-प्रत्ययः—-—क्रम सूचक संख्या बनाने वाला प्रत्यय
- **पूरिका**—स्त्री॰—-—पूर + ङीष् + कन् + टाप्, ह्रस्वः—पूरी, कचौरी
- **पूरित**—भू॰ क॰ कृ॰—-—पूर् + क्त—भरा हुआ, पूरा
- **पूरित**—भू॰ क॰ कृ॰—-—पूर् + क्त—बिछाया हुआ, आच्छादित
- **पूरित**—भू॰ क॰ कृ॰—-—पूर् + क्त—गुणा किया हुआ
- **पूरुषः**—पुं॰—-—पुर् + कुषन्, नि॰ दीर्घः—
- **पूर्ण**—भू॰ क॰ कृ॰—-—पूर् + क्त, नि॰—भरा हुआ, आपूरित, पूरा किया हुआ
- **पूर्ण**—भू॰ क॰ कृ॰—-—पूर् + क्त, नि॰—संपूर्ण, अखंड, समग्र, समूचा
- **पूर्ण**—भू॰ क॰ कृ॰—-—पूर् + क्त, नि॰—पूरा किया हुआ, सम्पन्न
- **पूर्ण**—भू॰ क॰ कृ॰—-—पूर् + क्त, नि॰—समाप्त, पूरा
- **पूर्ण**—भू॰ क॰ कृ॰—-—पूर् + क्त, नि॰—अतीत, बीता हुआ
- **पूर्ण**—भू॰ क॰ कृ॰—-—पूर् + क्त, नि॰—संतुष्ट, तृप्त
- **पूर्ण**—भू॰ क॰ कृ॰—-—पूर् + क्त, नि॰—घोष पूर्ण, गुंजायमान
- **पूर्ण**—भू॰ क॰ कृ॰—-—पूर् + क्त, नि॰—बलवान्, शक्तिशाली
- **पूर्ण**—भू॰ क॰ कृ॰—-—पूर् + क्त, नि॰—स्वार्थी, स्वलीन
- **पूर्णाङ्कः**—पुं॰—पूर्ण-अङ्कः—-—पूर्ण संख्या

- **पूर्णाभिलाष**—वि°—पूर्ण-अभिलाष—-—संतुष्ट, तृप्त
- **पूर्णानकम्**—नपुं°—पूर्ण-आनकम्—-—ढोल
- **पूर्णानकम्**—नपुं°—पूर्ण-आनकम्—-—ढोल की आवाज
- **पूर्णानकम्**—नपुं°—पूर्ण-आनकम्—-—बर्तन
- **पूर्णानकम्**—नपुं°—पूर्ण-आनकम्—-—चंद्रकिरण
- **पूर्णानकम्**—नपुं°—पूर्ण-आनकम्—-—पुर्ण पात्र
- **पूर्णेन्दुः**—पुं°—पूर्ण-इन्दुः—-—पूरा चाँद
- **पूर्णोपमा**—स्त्री°—पूर्ण-उपमा—-—पूरी या समूची उपमा अर्थात् जिसमें उपमान "उपमेय' 'साधारणधर्म' और 'उपमाप्रतिपादक शब्द' यह चारों अपेक्षित बातें अभिव्यक्त की गई हो
- **पूर्णककुद्**—वि°—पूर्ण-ककुद्—-—पूरे कोहान से युक्त
- **पूर्णकाम**—वि°—पूर्ण-काम—-—जिसकी इच्छाएँ पूरी हो गई हैं, संतुष्ट तृप्त
- **पूर्णकुम्भः**—पुं°—पूर्ण-कुम्भः—-—पूरा कलश
- **पूर्णकुम्भः**—पुं°—पूर्ण-कुम्भः—-—पानी से भरा घड़ा
- **पूर्णकुम्भः**—पुं°—पूर्ण-कुम्भः—-—युद्ध करने की विशेष रीति
- **पूर्णकुम्भः**—पुं°—पूर्ण-कुम्भः—-—(दिबार में) कलश के आकार का गर्त
- **पूर्णपात्रम्**—नपुं°—पूर्ण-पात्रम्—-—जल से भरी गागर
- **पूर्णपात्रम्**—नपुं°—पूर्ण-पात्रम्—-—कलशपूर, गागर भर
- **पूर्णपात्रम्**—नपुं°—पूर्ण-पात्रम्—-—२५६ मुट्ठी भर (अनाज का) तोल
- **पूर्णपात्रम्**—नपुं°—पूर्ण-पात्रम्—-—(वस्त्रालंकार आदि) मूल्यवान वस्तुओं से भरा हुआ (संदूक, टोकरी आदि) बर्तन जो बंधुबांधवों द्वारा किसी उत्सवादि के अवसर पर उपहार के रूप में बांटा जाय
- **पूर्णबीजः**—पुं°—पूर्ण-बीजः—-—नींबू
- **पूर्णवीजः**—पुं°—पूर्ण-वीजः—-—नींबू
- **पूर्णमासी**—स्त्री°—पूर्ण-मासी—-—पूर्णिमा, पूनो
- **पूर्णकः**—पुं°—-—पूर्ण + कन्—एक प्रकार का वृक्ष
- **पूर्णकः**—पुं°—-—पूर्ण + कन्—रसोइया
- **पूर्णकः**—पुं°—-—पूर्ण + कन्—नीलकंठ
- **पूर्णिमा**—स्त्री°—-—पृ + निङ्=पूर्णि, मा + क + टाप्—वह दिन जब चन्द्रमा पूर्ण हो जाता है,

- **पूर्णिमासी**—स्त्री°——पूर्णि + मास + ङीप्—वह दिन जब चन्द्रमा पूर्ण हो जाता है,
- **पूर्त**—वि°——पूर् + क्त—पूर्ण, पूरा
- **पूर्त**—वि°——पूर् + क्त—छिपाया हुआ, ढका हुआ
- **पूर्त**—वि°——पूर् + क्त—पालन-पोषण किया गया, रक्षा किया गया
- **पूर्तम्**—नपुं°——पूर् + क्त—पूर्ति
- **पूर्तम्**—नपुं°——पूर् + क्त—पोषण, पालन
- **पूर्तम्**—नपुं°——पूर् + क्त—पुरस्कार, पात्रता
- **पूर्तम्**—नपुं°——पूर् + क्त—पावन, उदारता का कृत्य
- **पूर्तिः**—स्त्री°——पूर् + क्तिन्—भरना
- **पूर्तिः**—स्त्री°——पूर् + क्तिन्—पूरा करना, पूर्णता, सम्पन्नता
- **पूर्तिः**—स्त्री°——पूर् + क्तिन्—तृप्ति, संतुष्टि
- **पूर्व**—वि°——पूर्व + अच्—सामने होने वाला, प्रथम, प्रमुख
- **पूर्व**—वि°——पूर्व + अच्—पूर्वी, पूर्व दिशा में स्थित, के पूर्व में
- **पूर्व**—वि°——पूर्व + अच्—पहले का, से पहला
- **पूर्व**—वि°——पूर्व + अच्—पुराना, प्राचीन
- **पूर्व**—वि°——पूर्व + अच्—पूर्वोक्त, विगत, पिछला, पहला, पूर्वगामी
- **पूर्व**—वि°——पूर्व + अच्—उपर्युक्त, पूर्वोक्त
- **पूर्व**—वि°——पूर्व + अच्—पूर्ववर्ती, से युक्त
- **अबोधपूर्वम्**—नपुं°—अबोध-पूर्वम्——अनजाने
- **अबोधपूर्वः**—पुं°—अबोध-पूर्वः——पूर्वज, पूर्व पुरुखा, बाप दादा
- **पूर्वम्**—नपुं°————अगला भाग
- **पूर्वम्**—अव्य°————से पहले
- **पूर्वम्**—अव्य°————विगत काल में, पहले, प्रारंभ में, पूर्वतः
- **पूर्वेण**—अव्य°————से पूर्व में
- **अद्य पूर्वम्**—अव्य°————'अब तक' इससे पहले
- **पूर्वःततः**—अव्य°————पहले तब
- **पूर्वःपश्चात्**—अव्य°————पहले बाद में

- **पूर्वः उपरि**—अव्य०—-—-—विगत काल में
- **पूर्वम् अधुना**—अव्य०—-—-—पहले आज
- **पूर्वम् अद्य**—अव्य०—-—-—पहले आज
- **पूर्वाचलः**—पुं०—पूर्व-अचलः—-—उदयाचल (पूर्व दिशा का पहाड़ जिसके पीछे से सूर्य और चन्द्रमा का उदय होता है)
- **पूर्वाद्रिः**—पुं०—पूर्व-अद्रिः—-—उदयाचल (पूर्व दिशा का पहाड़ जिसके पीछे से सूर्य और चन्द्रमा का उदय होता है)
- **पूर्वांतः**—पुं०—पूर्व-अंतः—-—पूर्ववर्ती शब्द की समाप्ति
- **पूर्वापर**—वि०—पूर्व-अपर—-—पूर्वी और पश्चिमी
- **पूर्वापर**—वि०—पूर्व-अपर—-—पहला और अन्तिम
- **पूर्वापर**—वि०—पूर्व-अपर—-—पहले का और बाद का, पूर्ववर्ती और परवर्ती
- **पूर्वापर**—वि०—पूर्व-अपर—-—किसी दूसरे से युक्त
- **पूर्वापरम्**—नपुं०—पूर्व-परम्—-—जो पहले और बाद में हो
- **पूर्वापरम्**—नपुं०—पूर्व-परम्—-—संबंध
- **पूर्वापरम्**—नपुं०—पूर्व-परम्—-—प्रमाण और प्रमेय
- **पूर्वविरोधः**—पुं०—पूर्व-विरोधः—-—असंगति, असंबद्धता
- **पूर्वाभिमुख**—वि०—पूर्व-अभिमुख—-—पूर्व दिशा की ओर मुख किए हुए, या मुड़े हुए
- **पूर्वाम्बुधिः**—पुं०—पूर्व-अम्बुधिः—-—पूर्वी समुद्र
- **पूर्वार्जित**—वि०—पूर्व-अर्जित—-—पूर्वकर्मों द्वारा प्राप्त
- **पूर्वार्जितम्**—नपुं०—पूर्व-अर्जितम्—-—पैतृक संपत्ति
- **पूर्वार्धः**—पुं०—पूर्व-अर्धः—-—पहला आधा भाग
- **पूर्वार्धः**—पुं०—पूर्व-अर्धः—-—(शरीर का) ऊपर का भाग
- **पूर्वार्धः**—पुं०—पूर्व-अर्धः—-—श्लोकार्ध का प्रथम भाग
- **पूर्वार्धम्**—नपुं०—पूर्व-अर्धम्—-—पहला आधा भाग
- **पूर्वार्धम्**—नपुं०—पूर्व-अर्धम्—-—(शरीर का) ऊपर का भाग
- **पूर्वार्धम्**—नपुं०—पूर्व-अर्धम्—-—श्लोकार्ध का प्रथम भाग
- **पूर्वाह्णः**—पुं०—पूर्व-अह्णः—-—मध्याह्न से पूर्व, दोपहर से पूर्व
- **पूर्वाह्णतन**—वि०—पूर्व-अह्णः-तन—-—मध्याह्न से पूर्वकाल संबंधी
- **पूर्वाह्णतेन**—वि०—पूर्व-अह्णः-तेन—-—मध्याह्न से पूर्वकाल संबंधी

- **पूर्वावेदकः**—पुं°—पूर्व-अवेदकः—-—वादी, मुद्दई
- **पूर्वाषाढ़ा**—स्त्री°—पूर्व-आषाढ़ा—-—बीसवाँ नक्षत्र, (दो नक्षत्रों का पुंज)
- **पूर्वेतर**—वि°—पूर्व-इतर—-—पश्चिमी
- **पूर्वोक्त**—वि°—पूर्व-उक्त—-—पहले कहा हुआ, उपर्युक्त
- **पूर्वोर्दित**—वि°—पूर्व-उर्दित—-—पहले कहा हुआ, उपर्युक्त
- **पूर्वोत्तर**—वि°—पूर्व-उत्तर—-—उत्तरपूर्वी
- **पूर्वोत्तरे**—द्वि° व°—पूर्व-उत्तरे—-—पूर्ववर्ती पहले का और बाद का
- **पूर्वकर्मन्**—नपुं°—पूर्व-कर्मन्—-—पहला काम या कार्य
- **पूर्वकर्मन्**—नपुं°—पूर्व-कर्मन्—-—प्रथम कार्य, पहले किया जाने वाला कार्य
- **पूर्वकर्मन्**—नपुं°—पूर्व-कर्मन्—-—पूर्व जन्म में किया गया कार्य
- **पूर्वकल्पः**—पुं°—पूर्व-कल्पः—-—विगत काल
- **पूर्वकायः**—पुं°—पूर्व-कायः—-—जानवरों के शरीर का अगला भाग
- **पूर्वकायः**—पुं°—पूर्व-कायः—-—मनुष्यों के शरीर का ऊपरी भाग
- **पूर्वकालः**—पुं°—पूर्व-कालः—-—विगत काल, प्राचीन समय
- **पूर्वकालिक**—वि°—पूर्व-कालिक—-—प्राचीन
- **पूर्वकालीन**—वि°—पूर्व-कालीन—-—प्राचीन
- **पूर्वकाष्ठा**—स्त्री°—पूर्व-काष्ठा—-—पूर्व, पूर्व दिशा
- **पूर्वकृतम्**—नपुं°—पूर्व-कृतम्—-—पूर्वजन्म में किया हुआ कार्य
- **पूर्वकोटिः**—स्त्री°—पूर्व-कोटिः—-—वाक्प्रतियोगिता की आरंभिक उक्ति, विवादविषय, पूर्वपक्ष
- **पूर्वगंगा**—स्त्री°—पूर्व-गंगा—-—नर्मदा नदी
- **पूर्वचोदित**—वि°—पूर्व-चोदित—-—उपर्युक्त, ऊपर बताया हुआ
- **पूर्वचोदित**—वि°—पूर्व-चोदित—-—पहले से कहा हुआ, या पूर्व प्रस्तुत (आक्षेप आदि)
- **पूर्वज**—वि°—पूर्व-ज—-—जिसकी उत्पत्ति पहले हुई हो, पहले जन्मा हुआ
- **पूर्वज**—वि°—पूर्व-ज—-—प्राचीन, पुराना
- **पूर्वज**—वि°—पूर्व-ज—-—पूर्वी
- **पूर्वजः**—पुं°—पूर्व-जः—-—बडा भाई
- **पूर्वजः**—पुं°—पूर्व-जः—-—बड़ी पत्नी का लड़का

- **पूर्वजः**—पुं°—पूर्व-जः—-—पूर्वपुरुष, बापदादा
- **पूर्वजन्मन्**—नपुं°—पूर्व-जन्मन्—-—पहला जन्म
- **पूर्वजन्मन्**—पुं°—पूर्व-जन्मन्—-—बड़ा भाई
- **पूर्वजा**—स्त्री°—पूर्व-जा—-—बड़ी बहन
- **पूर्वजातिः**—स्त्री°—पूर्व-जातिः—-—पूर्वजन्म
- **पूर्वज्ञानम्**—नपुं°—पूर्व-ज्ञानम्—-—पूर्वजन्म का ज्ञान
- **पूर्वदक्षिण**—वि°—पूर्व-दक्षिण—-—दक्षिणपूर्वी
- **पूर्वदक्षिणा**—स्त्री°—पूर्व-दक्षिणा—-—दक्षिण पूर्व दिशा
- **पूर्वदिक्पतिः**—पुं°—पूर्व-दिक्पतिः—-—पूर्वदिशा का अधिपति इन्द्र
- **पूर्वदिनम्**—नपुं°—पूर्व-दिनम्—-—दिन का पूर्वभाग, दोपहर से पूर्व का समय
- **पूर्वदिश्**—स्त्री°—पूर्व-दिश्—-—पूर्व दिशा
- **पूर्वदिष्टम्**—नपुं°—पूर्व-दिष्टम्—-—भाग्य में लिखा
- **पूर्वदेवः**—पुं°—पूर्व-देवः—-—प्राचीन देवता
- **पूर्वदेवः**—पुं°—पूर्व-देवः—-—राक्षस या असुर
- **पूर्वदेवः**—पुं°—पूर्व-देवः—-—प्रजनक, पिता
- **पूर्वदेशः**—पुं°—पूर्व-देशः—-—पूर्वी प्रदेश, भारत का पूर्वी भाग
- **पूर्वनिपातः**—पुं°—पूर्व-निपातः—-—समास में शब्द की अनियमित प्राथमिकता
- **पूर्वपक्षः**—पुं°—पूर्व-पक्षः—-—अगला हिस्सा या पार्श्व
- **पूर्वपक्षः**—पुं°—पूर्व-पक्षः—-—कृष्णपक्ष (चान्द्रमास का प्रथमपक्ष)
- **पूर्वपक्षः**—पुं°—पूर्व-पक्षः—-—विवाद का पूर्वपक्ष, प्रथमदर्शनाधारित तर्क या प्रश्न का दृष्टिकोण
- **पूर्वपक्षः**—पुं°—पूर्व-पक्षः—-—किसी तर्क का प्रथम आक्षेप
- **पूर्वपक्षः**—पुं°—पूर्व-पक्षः—-—वादी की प्रतिज्ञा
- **पूर्वपक्षः**—पुं°—पूर्व-पक्षः—-—अभियोग, नालिश
- **पूर्वपदम्**—नपुं°—पूर्व-पदम्—-—किसी समास या वाक्य का प्रथम पद
- **पूर्वपर्वतः**—पुं°—पूर्व-पर्वतः—-—उदयाचल जिसके पीछे सूर्य का उदय होना माना जाता है
- **पूर्वपांचालक**—वि°—पूर्व-पांचालक—-—पूर्वी पंचालों से संबंध रखने वाला
- **पूर्वपाणिनीयाः**—पुं°, ब° व°—पूर्व-पाणिनीयाः—-—पूर्व देश के रहनेवाला पाणिनि के शिष्य

- **पूर्वपितामहः**—पुं—पूर्व-पितामहः—-—बापदादा, पूर्वज
- **पूर्वपुरुषः**—पुं—पूर्व-पुरुषः—-—ब्रह्मा का विशेषण
- **पूर्वपुरुषः**—पुं—पूर्व-पुरुषः—-—पिता, पितामह या प्रपितामह में से कोई एक
- **पूर्वपुरुषः**—पुं—पूर्व-पुरुषः—-—पूर्वपुरखा
- **पूर्वपूर्व**—वि॰—पूर्व-पूर्व—-—प्रत्येक पूर्ववर्ती- फाल्गुनी ग्यारहवाँ नक्षत्र जिसमें दो तारे सम्मिलित हैं
- **पूर्वभवः**—पुं॰—पूर्व-भवः—-—बृहस्पति ग्रह का विशेषण
- **पूर्वभागः**—पुं—पूर्व-भागः—-—अगला हिस्सा
- **पूर्वभाद्रपदा**—स्त्री॰—पूर्व-भाद्रपदा—-—पच्चीसवाँ नक्षत्र जिसमें दो तारे सम्मिलित हैं
- **पूर्वभुक्तिः**—स्त्री॰—पूर्व-भुक्तिः—-—पहले से किया हुआ अधिकार
- **पूर्वभूत**—वि॰—पूर्व-भूत—-—पूर्ववर्ती, पहले का
- **पूर्वमीमांसा**—स्त्री॰—पूर्व-मीमांसा—-—प्रथम मीमांसा, वेद के अंतर्गत कर्मकाण्डविषयक पृच्छा
- **पूर्वरङ्गः**—पुं॰—पूर्व-रङ्गः—-—नाटक का उपक्रम या आरंभ, आमुख या प्रस्तावना
- **पूर्वरागः**—पुं॰—पूर्व-रागः—-—आरंभिक प्रेम, दो व्यक्तियों के मिलन से पूर्व (श्रवण दर्शन आदि के कारण) उनमें उत्पन्न होनेवाला प्रेम
- **पूर्वरात्रः**—पुं॰—पूर्व-रात्रः—-—रात का पहला भाग
- **पूर्वरूपम्**—नपुं॰—पूर्व-रूपम्—-—होने वाले परिवर्तन का संकेत
- **पूर्वरूपम्**—नपुं॰—पूर्व-रूपम्—-—रोग होने का लक्षण
- **पूर्वरूपम्**—नपुं॰—पूर्व-रूपम्—-—दो सहवर्ती स्वर या व्यंजनो में से पहला जो स्थिर रहे
- **पूर्वबयस्**—वि॰—पूर्व-बयस्—-—बच्चा
- **पूर्ववर्तिन्**—वि॰—पूर्व-वर्तिन्—-—पहले से विद्यमान, पहले का, पहले होने वाला
- **पूर्ववाद**—वि॰—पूर्व-वाद—-—बादी द्वारा प्रस्तुत अभियोग, मुद्दई द्वारा की गई नालिश
- **पूर्ववादिन्**—पुं॰—पूर्व-वादिन्—-—अभियोक्ता या मुद्दई
- **पूर्ववृत्तम्**—नपुं॰—पूर्व-वृत्तम्—-—पहली घटना
- **पूर्ववृत्तम्**—नपुं॰—पूर्व-वृत्तम्—-—पहला आचरण
- **पूर्वशारद**—वि॰—पूर्व-शारद—-—शरद् ऋतु के पूर्वार्ध से संबंध रखने वाला
- **पूर्वशैलः**—पुं॰—पूर्व-शैलः—-—
- **पूर्वसक्थम्**—नपुं॰—पूर्व-सक्थम्—-—जंघा का ऊपरी भाग
- **पूर्वसन्ध्या**—स्त्री॰—पूर्व-सन्ध्या—-—प्रभातकाल, पौ फाटना

- **पूर्वसर**—वि°—पूर्व-सर———अग्रेसर
- **पूर्वसागरः**—पुं°—पूर्व-सागरः———पूर्वी समुद्र
- **पूर्वसाहसः**—पुं°—पूर्व-साहसः———पहला या सबसे भारी अर्थदण्ड
- **पूर्वस्थितिः**—स्त्री°—पूर्व-स्थितिः———पहली या प्रथम अवस्था
- **पूर्वक**—वि°———पूर्व + कन्—पूर्ववर्ती, अनुसेवित
- **पूर्वक**—वि°———पूर्व + कन्—पूर्ववर्ती, पिछला
- **पूर्वकः**—पुं°———पूर्व + कन्—पूर्वज, वापदादा
- **पूर्वगम**—वि°———पूर्व + गम् + खच्—पहले जाने वाला, पूर्ववर्ती
- **पूर्वतः**—अव्य°———पूर्व + तस्—पूर्व में, पूर्व की ओर
- **पूर्वतः**—अव्य°———पूर्व + तस्—पहले, सामने
- **पूर्वत्र**—अव्य°———पूर्व + त्रल्—पूर्ववर्ती भाग में, पहली जगह
- **पूर्ववत्**—अव्य°———पूर्व + वर्ति—पहले की भांति
- **पूर्विन्**—वि°———पूर्व + इनि—प्राचीन
- **पूर्विन्**—वि°———पूर्व + इनि—पैतृक
- **पूर्विण**—वि°———पूर्व + ख—प्राचीन
- **पूर्विण**—वि°———पूर्व + ख—पैतृक
- **पूर्वेद्युः**—अव्य°———पूर्वस्मिन् अहनि-पूर्व + एद्युस् नि° साधु—पहले दिन
- **पूर्वेद्युः**—अव्य°———पूर्वस्मिन् अहनि-पूर्व + एद्युस् नि° साधु—गत दिवस, बीते हुए कल
- **पूर्वेद्युः**—अव्य°———पूर्वस्मिन् अहनि-पूर्व + एद्युस् नि° साधु—दिन के प्रथम भाग में, पौ फटने पर
- **पूर्वेद्युः**—अव्य°———पूर्वस्मिन् अहनि-पूर्व + एद्युस् नि° साधु—भोर में, सबेरे
- **पूल्**—भ्वा° पर° <पूलति>, चुरा° उभ° <पूलयति>, <पूलयते>—————ढेर लगाना, संचय करना, एकत्र करना
- **पूलः**—पुं°———पूल् + अच् —गठरी, पुली
- **पूलकः**—पुं°———पूल् + ण्वुल् —गठरी, पुली
- **पूलाकः**—पुं°————
- **पूलिका**—स्त्री°———पूरिका, रस्य लः—एक प्रकार की रोटी, पूरी
- **पूषः**—पुं°———पूष् + क—शहतूत का वृक्ष
- **पूषकः**—पुं°———पूष् + कन्—शहतूत का वृक्ष

- **पूषन्**—पुं°—-—पूष् + कनिन्—सूर्य
- **पूषासुहृद्**—पुं°—पूषन्-असुहृद्—-—शिव का विशेषण
- **पूषात्मजः**—पुं°—पूषन्-आत्मजः—-—बादल
- **पूषात्मजः**—पुं°—पूषन्-आत्मजः—-—इन्द्र का विशेषण
- **पूषाभासा**—स्त्री°—पूषन्-भासा—-—इन्द्र का नगर (अमरावती)
- **पृ**—तुदा° आ° <प्रियते>, <पृत>—-—-—व्यस्त होना, सक्रिय होना
- **पृ**—प्रेर° <पारयति>, <पारयते>—-—-—काम कराना, काम पर लगाना, सौंपना, नियत करना
- **पृ**—प्रेर° <पारयति>, <पारयते>—-—-—रखना, जड़ देना, निश्चित करना, निदेश देना, ढालना
- **पृ**—जुहो° पर° <पिपर्ति> ,<पूर्ण>—-—-—आगे ले जाना
- **पृ**—जुहो° पर° <पिपर्ति> ,<पूर्ण>—-—-—से मुक्त करना, प्रकाशित करना
- **पृ**—जुहो° पर° <पिपर्ति> ,<पूर्ण>—-—-—भरना
- **पृ**—जुहो° पर° <पिपर्ति> ,<पूर्ण>—-—-—रक्षा करना, जीवित रखना, जीवित रहना
- **पृ**—जुहो° पर° <पिपर्ति> ,<पूर्ण>—-—-—उन्नति करना, प्रगति करना
- **पृ**—क्र्य° पर° <पृणाति>—-—-—रक्षा करना
- **पृ**—चुरा° उभ° <पारयति>, <पारयते>—-—-—पार ले जाना, नाव से पार उतारना
- **पृ**—चुरा° उभ° <पारयति>, <पारयते>—-—-—किसी वस्तु के दूसरे पार्श्व पर पहुंचना, निष्पन्न करना, अनुष्ठान करना, सम्पन्न करना, (व्रत का) पूरा करना
- **पृ**—चुरा° उभ° <पारयति>, <पारयते>—-—-—योग्य या समर्थ होना
- **पृ**—चुरा° उभ° <पारयति>, <पारयते>—-—-—सौंपना, बचाना, उद्धार करना, निस्तार करना
- **पृ**—स्वा° पर° <पृणेति>—-—-—प्रसन्न करना, खुश करना, तृप्त करना
- **पृ**—स्वा° पर° <पृणेति>—-—-—प्रसन्न होना, खुश होना
- **पृक्त**—भू° क° कृ°—-—पृच् + क्त—मिश्रित, संपृक्त
- **पृक्त**—भू° क° कृ°—-—पृच् + क्त—स्पृष्ट, संपर्क में लाया गया, स्पर्श करने वाला, संयुक्त
- **पृक्तम्**—नपुं°—-—पृच् + क्त—संपत्ति, दौलत
- **पृक्तिः**—स्त्री°—-—पृच् + क्तिन्—स्पर्श, संपर्क, संयोग
- **पृक्थम्**—नपुं°—-—पृच् + थन्—संपत्ति, धन-दौलत, वैभव
- **पृच्**—अदा° आ° <पृक्ते>, <पृक्ण>—-—-—संपर्क में आना

- **पृच्**—रुधा॰ पर॰ <पृणक्ति>, <पृक्त>—————संपर्क में लाना, सम्मिलित होना, मिल जाना
- **पृच्**—रुधा॰ पर॰ <पृणक्ति>, <पृक्त>—————मिश्रण करना, मिलाना
- **पृच्**—रुधा॰ पर॰ <पृणक्ति>, <पृक्त>—————संपर्क में होना, स्पर्श करना
- **पृच्**—रुधा॰ पर॰ <पृणक्ति>, <पृक्त>—————संतुष्ट करना, भरना, संतृप्त करना
- **पृच्**—रुधा॰ पर॰ <पृणक्ति>, <पृक्त>—————बढाना, वृद्धि करना
- **संपृच्**—रुधा॰ पर—सम्-पृच्———मिश्रण करना, घोलना, मिलना
- **संपृच्**—भ्वा॰ पर॰ <पर्चर्ति>, चुरा॰ उभ॰ <पर्चयति>, <पर्चयते>—सम्-पृच्———स्पर्श करना, संपर्क में आना
- **संपृच्**—भ्वा॰ पर॰ <पर्चर्ति>, चुरा॰ उभ॰ <पर्चयति>, <पर्चयते>—सम्-पृच्———रोकना, विरोध करना
- **पृच्छकः**—पुं॰———प्रच्छ् + ण्वुल्—पूछताछ करने वाला, गवेषणा करने वाला
- **पृच्छनम्**—नपुं॰———प्रच्छ् + ल्युट्—पूछना, पूछ-ताछ करना
- **पृच्छा**—स्त्री॰———प्रच्छ् + अङ् + टाप्—प्रश्न करना, पूछना, पूछताछ करना
- **पृच्छा**—स्त्री॰———प्रच्छ् + अङ् + टाप्—भविष्य विपयक पूछ-ताछ
- **पृज्**—अदा॰ आ॰ <पृंक्ते>—————संपर्क में आना, स्पर्श करना
- **पृत्**—स्त्री॰———पृ + क्विप्, तुक्—सेना
- **पृतना**—स्त्री॰———पृ + तनन् + टाप्—सेना
- **पृतना**—स्त्री॰———पृ + तनन् + टाप्—सेना का एक प्रभाग जिसमें २४३ हाथी, २४३ रथ, ७२९ घोड़े और १२१५ पैदल होते हैं
- **पृतना**—स्त्री॰———पृ + तनन् + टाप्—युद्ध, संग्राम, मुठभेड़
- **पृतनासाहः**—पुं॰—पृतना-साहः———इन्द्र का विशेषण
- **पृथ्**—चुरा॰ उभ॰ <पर्थयति>, <पर्थयते>—————विस्तार करना
- **पृथ्**—चुरा॰ उभ॰ <पर्थयति>, <पर्थयते>—————फेंकना, डालना
- **पृथ्**—चुरा॰ उभ॰ <पर्थयति>, <पर्थयते>—————भेजना, निदेश देना
- **पृथक्**—अव्य॰———प्रथ् + अज्, कित्, संप्रसारण—अलग-अलग, जुदा-जुदा, एक एक करके
- **पृथक्**—अव्य॰———प्रथ् + अज्, कित्, संप्रसारण—भिन्न, अलग, भिन्नतापूर्वक
- **पृथक्**—अव्य॰———प्रथ् + अज्, कित्, संप्रसारण—जुदा, एक ओर, एकाकी
- **पृथक्**—अव्य॰———प्रथ् + अज्, कित्, संप्रसारण—छोड़ कर, सिवाय, अपवाद के साथ, बिना
- **पृथक् कृ**—————अलग २ करना, बाँटना, जुदा-जुदा करना, विश्लेषण करना
- **पृथकात्मता**—स्त्री॰—पृथक्-आत्मता———अलग-अलग होना, पृथकता

- **पृथकात्मता**—स्त्री°—पृथक्-आत्मता—-—भेद, भिन्नता
- **पृथकात्मता**—स्त्री°—पृथक्-आत्मता—-—विवेक, निर्णय
- **पृथकात्मन्**—वि°—पृथक्-आत्मन्—-—भिन्न, अलग
- **पृथकात्मिका**—स्त्री°—पृथक्-आत्मिका—-—व्यक्तिगत सत्ता, वैयक्तिकता
- **पृथककरणम्**—नपुं°—पृथक्-करणम्—-—अलग-अलग करना, भेद करना
- **पृथककरणम्**—नपुं°—पृथक्-करणम्—-—विश्लेषण करना
- **पृथकक्रिया**—स्त्री°—पृथक्-क्रिया—-—अलग-अलग करना, भेद करना
- **पृथकक्रिया**—स्त्री°—पृथक्-क्रिया—-—विश्लेषण करना
- **पृथककूल**—वि°—पृथक्-कूल—-—भिन्न कुल से संबंध रखने वाला
- **पृथकक्षेत्रः**—पुं° ब° व°—पृथक्-क्षेत्रः—-—एक पिता की विभिन्न पत्नियों से सन्तान, या भिन्न-भिन्न जातियों की पत्नियों से सन्तान
- **पृथकचर**—वि°—पृथक्-चर—-—एकाकी जाने वाला, अलग जाने वाला
- **पृथकजनः**—पुं°—पृथक्-जनः—-—नीच पुरुष, ज्ञानरहित, गँवार आदमी, प्राकृत जन, नीच लोग
- **पृथकजनः**—पुं°—पृथक्-जनः—-—मूर्ख, बुद्धू, अज्ञानी
- **पृथकजनः**—पुं°—पृथक्-जनः—-—दुष्ट आदमी, पापी
- **पृथकभावः**—पुं°—पृथक्-भावः—-—पृथक्ता, वैयक्तिकता
- **पृथकरूप**—वि°—पृथक्-रूप—-—भिन्न- भिन्न रूपों या प्रकारों का
- **पृथकविध**—वि°—पृथक्-विध—-—भिन्न भिन्न प्रकार का, नाना प्रकार विविध
- **पृथकशय्या**—स्त्री°—पृथक्-शय्या—-—अलग सोना
- **पृथकस्थितिः**—स्त्री°—पृथक्-स्थितिः—-—अलग सत्ता
- **पृथवी**—स्त्री°—-—प्रथ्+षवन्, संप्रसारण—
- **पृथा**—स्त्री°—-—-—पाण्डु की दो पत्नियों में से एक, कुन्ती का नाम
- **पृथाजः**—पुं°—पृथा-जः—-—पहले तीन पांडवों का विशेषण परन्तु प्रायः 'अर्जुन' के लिए व्यवहृत
- **पृथातनयः**—पुं°—पृथा-तनयः—-—पहले तीन पांडवों का विशेषण परन्तु प्रायः 'अर्जुन' के लिए व्यवहृत
- **पृथासुतः**—पुं°—पृथा-सुतः—-—पहले तीन पांडवों का विशेषण परन्तु प्रायः 'अर्जुन' के लिए व्यवहृत
- **पृथासूनुः**—पुं°—पृथा-सूनुः—-—पहले तीन पांडवों का विशेषण परन्तु प्रायः 'अर्जुन' के लिए व्यवहृत
- **पृथापतिः**—पुं°—पृथा-पतिः—-—पाँडु का विशेषण
- **पृथिका**—स्त्री°—-—प्रथ्+क+क+टाप् संप्रसारणम्, इत्वम् —कनखजूरा

- **पृथिवी**—स्त्री°—-—प्रथ्+षिंवन्, संप्रसारणम्—पृथ्वी
- **पृथिवीन्द्रः**—पुं°—पृथिवी-इन्द्रः—-—राजा
- **पृथिवीशः**—पुं°—पृथिवी-ईशः—-—राजा
- **पृथिवीक्षित्**—पुं°—पृथिवी-क्षित्—-—राजा
- **पृथिवीपालः**—पुं°—पृथिवी-पालः—-—राजा
- **पृथिवीपालकः**—पुं°—पृथिवी-पालकः—-—राजा
- **पृथिवीभुज्**—पुं°—पृथिवी-भुज्—-—राजा
- **पृथिवीभुजः**—पुं°—पृथिवी-भुजः—-—राजा
- **पृथिवीशक्रः**—पुं°—पृथिवी-शक्रः—-—राजा
- **पृथिवीतलम्**—नपुं°—पृथिवी-तलम्—-—धरातल
- **पृथिवीपतिः**—पुं°—पृथिवी-पतिः—-—राजा
- **पृथिवीपतिः**—पुं°—पृथिवी-पतिः—-—मृत्यु का देवता यम
- **पृथिवीमण्डलः**—पुं°—पृथिवी-मण्डलः—-—भूमंडल
- **पृथिवीमण्डलम्**—नपुं°—पृथिवी-मण्डलम्—-—भूमंडल
- **पृथिवीरुहः**—पुं°—पृथिवी-रुहः—-—वृक्ष
- **पृथिवीलोकः**—पुं°—पृथिवी-लोकः—-—मर्त्यलोक, भूलोकः
- **पृथु**—वि°—-—-—चौड़ा, विस्तृत, प्रशस्त, फैलावदार
- **पृथु**—वि°—-—प्रथ्+कु, संप्रसारणम्—यथेष्ट, बहुल, पर्याप्त
- **पृथु**—वि°—-—प्रथ्+कु, संप्रसारणम्—विस्तीर्ण, बड़ा
- **पृथु**—वि°—-—प्रथ्+कु, संप्रसारणम्—विवरणयुक्त, अतिविस्तृत
- **पृथु**—वि°—-—प्रथ्+कु, संप्रसारणम्—बहुसंख्यक
- **पृथु**—वि°—-—प्रथ्+कु, संप्रसारणम्—चुस्त, फुर्तीला, चतुर
- **पृथु**—वि°—-—प्रथ्+कु, संप्रसारणम्—महत्वपूर्ण
- **पृथुः**—पुं°—-—-—अग्नि का नाम
- **पृथुः**—पुं°—-—-—एक राजा का नाम
- **पृथुः**—स्त्री°—-—-—अफीम
- **पृथूदर**—वि°—पृथु-उदर—-—मोटे पेट वाला, हृष्ट-पुष्ट

- **पृथूदरः**—पुं°—पृथु-उदरः—–—मेंढा
- **पृथुजघन**—वि°—पृथु-जघन—–—मोटे और विस्तार युक्त कूल्हों से युक्त
- **पृथुनितम्ब**—वि°—पृथु-नितम्ब—–—मोटे और विस्तार युक्त कूल्हों से युक्त
- **पृथुपत्रः**—पुं°—पृथु-पत्रः—–—लाल लहसुन
- **पृथुपत्रम्**—नपुं°—पृथु-पत्रम्—–—लाल लहसुन
- **पृथुप्रथ**—वि°—पृथु-प्रथ—–—दूर-दूर तक प्रसिद्ध, व्यापक, यशस्वी
- **पृथुयशस्**—वि°—पृथु-यशस्—–—दूर-दूर तक प्रसिद्ध, व्यापक, यशस्वी
- **पृथुरोमन्**—पुं°—पृथु-रोमन्—–—मछली
- **पृथु युग्मः**—पुं°—–—–—मीन राशि
- **पृथुश्री**—वि°—पृथु-श्री—–—अत्यन्त समृद्ध
- **पृथुश्रोणी**—वि°—पृथु-श्रोणी—–—बड़े भारी कूल्हों वाल
- **पृथुसम्पद**—वि°—पृथु-संपद—–—धनवान्, दौलतमंद
- **पृथुस्कन्धः**—पुं°—पृथु-स्कन्धः—–—सूअर
- **पृथुकः**—पुं°—–—पृथु+कै+क—चौले, चिवड़े, बच्चा
- **पृथुकम्**—नपुं°—–—पृथु+कै+क—चौले, चिवड़े
- **पृथुका**—स्त्री°—–—पृथु+कै+क+टाप्—लड़की
- **पृथुल**—वि°—–—पृत्थु+लच्, ला+क वा—चौड़ा, प्रशस्त, विस्तृत
- **पृथ्वी**—स्त्री°—–—पृथु+ङीष्—पृथिवी, धरा
- **पृथ्वी**—स्त्री°—–—पृथु+ङीष्—पाँच मूल तत्त्वों में से एक, पृथ्वी
- **पृथ्वी**—स्त्री°—–—पृथु+ङीष्—बड़ी इलायची
- **पृथ्वी**—स्त्री°—–—पृथु+ङीष्—एक छंद
- **पृथ्वीशः**—पुं°—पृथ्वी-ईशः—–—राजा, प्रभु
- **पृथ्वीपतिः**—पुं°—पृथ्वी-पतिः—–—राजा, प्रभु
- **पृथ्वीपालः**—पुं°—पृथ्वी-पालः—–—राजा, प्रभु
- **पृथ्वीभुज्**—पुं°—पृथ्वी-भुज्—–—राजा, प्रभु
- **पृथ्वीखातम्**—नपुं°—पृथ्वी-खातम्—–—गुफा
- **पृथ्वीगर्भः**—पुं°—पृथ्वी-गर्भः—–—गणेश का विशेषण

- **पृथ्वीगृहम्**—नपुं०—पृथ्वी-गृहम्—-—गुफा, कृत्रिम खोह
- **पृथ्वीजः**—पुं०—पृथ्वी-जः—-—वृक्ष
- **पृथ्वीजः**—पुं०—पृथ्वी-जः—-—मंगल ग्रह
- **पृथ्वीका**—स्त्री०—-—पृथ्वी+कन्+टाप्—बड़ी इलायची
- **पृथ्वीका**—स्त्री०—-—पृथ्वी+कन्+टाप्—छोटी इलायची
- **पृदाकुः**—पुं०—-—पर्द्+काकु, संप्रसारणम्, प्रकारलोपः—बिच्छू
- **पृदाकुः**—पुं०—-—पर्द्+काकु, संप्रसारणम्, प्रकारलोपः—व्याघ्र
- **पृदाकुः**—पुं०—-—पर्द्+काकु, संप्रसारणम्, प्रकारलोपः—सांप, छोटा विषैला सांप
- **पृदाकुः**—पुं०—-—पर्द्+काकु, संप्रसारणम्, प्रकारलोपः—वृक्ष
- **पृदाकुः**—पुं०—-—पर्द्+काकु, संप्रसारणम्, प्रकारलोपः—हाथी
- **पृदाकुः**—पुं०—-—पर्द्+काकु, संप्रसारणम्, प्रकारलोपः—चीता
- **पृश्नि**—वि०—-—स्पृश्+नि नि० पृषो० सलोपः—छोटा, छोटे कद का बौना
- **पृश्नि**—वि०—-—स्पृश्+नि नि० पृषो० सलोपः—सुकुमार, दुबला-पतला
- **पृश्नि**—वि०—-—स्पृश्+नि नि० पृषो० सलोपः—विविध प्रकार का, चित्तीदार
- **पृष्नि**—वि०—-—स्पृश्+नि नि० पृषो० सलोपः—छोटा, छोटे कद का बौना
- **पृष्नि**—वि०—-—स्पृश्+नि नि० पृषो० सलोपः—सुकुमार, दुबला-पतला
- **पृष्नि**—वि०—-—स्पृश्+नि नि० पृषो० सलोपः—छोटा, छोटे कद का बौना
- **पृश्निः**—पुं०—-—-—प्रकाश की किरण
- **पृश्निः**—पुं०—-—-—पृथ्वी
- **पृश्निः**—पुं०—-—-—तारा समूह से युक्त आकाश
- **पृश्निः**—पुं०—-—-—कृष्ण की माता देवकी
- **पृश्निगर्भः**—पुं०—पृश्नि-गर्भः—-—कृष्ण का विशेषण
- **पृश्निधरः**—पुं०—पृश्नि-धरः—-—कृष्ण का विशेषण
- **पृश्निभद्रः**—पुं०—पृश्नि-भद्रः—-—कृष्ण का विशेषण
- **पृश्निशृङ्गः**—पुं०—पृश्नि-शृङ्गः—-—कृष्ण का विशेषण
- **पृश्निशृङ्गः**—पुं०—पृश्नि-शृङ्गः—-—गणेश का विशेषण
- **पृश्निका**—स्त्री०—-—पृश्नौ जले कायति शोभते - पृश्नि+कै+क+टाप्, पृश्नि+ङीष्—जल में पैदा होने वाला एक पौधा, जलकुंभी

- **पृष्णिका**—स्त्री°—-—पृश्नौ जले कायति शोभते - पृश्नि+कै+क+टाप्, पृश्नि+ङीष्—जल में पैदा होने वाला एक पौधा, जलकुंभी
- **पृश्नी**—स्त्री°—-—पृश्नौ जले कायति शोभते - पृश्नि+कै+क+टाप्, पृश्नि+ङीष्—जल में पैदा होने वाला एक पौधा, जलकुंभी
- **पृष्णी**—स्त्री°—-—पृश्नौ जले कायति शोभते - पृश्नि+कै+क+टाप्, पृश्नि+ङीष्—जल में पैदा होने वाला एक पौधा, जलकुंभी
- **पृषत्**—नपुं°—-—पृष्+अति—जल या कसी और तरल पदार्थ की बूँद
- **पृषतंशः**—पुं°—पृषत्-अंशः—-—वायु, हवा
- **पृषतंशः**—पुं°—पृषत्-अंशः—-—शिव का विशेषण
- **पृषतश्वः**—पुं°—पृषत्-अश्वः—-—वायु, हवा
- **पृषतश्वः**—पुं°—पृषत्-अश्वः—-—शिव का विशेषण
- **पृषदाज्यम्**—नपुं°—पृषत्-आज्यम्—-—दही में मिला हुआ घी
- **पृषत्पतिः**—पुं°—पृषत्-पतिः—-—वायु
- **पृषद्बलः**—पुं°—पृषत्-बलः—-—वायु का घोड़ा
- **पृषतः**—पुं°—-—पृष्+अतच्—चित्तीदार हरिण
- **पृषतः**—पुं°—-—पृष्+अतच्—पानी की बूँद
- **पृषतः**—पुं°—-—पृष्+अतच्—धब्बा, निशान
- **पृषताश्वः**—पुं°—पृषतः-अश्वः—-—हवा, वायु
- **पृषत्कः**—पुं°—-—पृषत्+कन्—बाण
- **पृषंतिः**—पुं°—-—पृष्+झिच्—पानी की बूँद
- **पृषभाषा**—स्त्री°—-—-—
- **पृषाकरा**—स्त्री°—-—पृष्+क्विप्, पृषे सेचनाय आकीर्यते - पृष्+आ+कृ+अप्+टाप्—छोटा पत्थर
- **पृषातकम्**—नपुं°—-—पृषत्+आ+तक्+अच्—दही और घी का संमिश्रण
- **पृषोदरः**—पुं°—-—पृषत् उदरं यस्य, पृषो° तलोपः—
- **पृष्ट**—भू° क° कृ°—-—प्रच्छ्+क्त—पूछा हुआ, पता लगया हुआ, प्रश्न किया हुआ, सवाल किया हुआ
- **पृष्ट**—भू° क° कृ°—-—प्रच्छ्+क्त—छिड़का हुआ
- **पृष्टायनः**—पुं°—पृष्ट-आयनः—-—धान्य विशेष, अनाज
- **पृष्टायनः**—पुं°—पृष्ट-आयनः—-—हाथी
- **पृष्टिः**—स्त्री°—-—प्रच्छ्+क्तिन्—पूछ-ताछ, प्रश्न वाचकता
- **पृष्ठम्**—नपुं°—-—पृष् स्पृश् वा थक्, नि° साधुः—पीठ, पिछला हिस्सा, पिछाड़ी

- **पृष्ठम्**—नपुं°—-—पृष् स्पृश् वा थक्, नि° साधुः—जानवर की पीठ
- **पृष्ठम्**—नपुं°—-—पृष् स्पृश् वा थक्, नि° साधुः—सतह या ऊपर का पार्श्व
- **पृष्ठम्**—नपुं°—-—पृष् स्पृश् वा थक्, नि° साधुः—पीठ या दूसरी तरफ
- **पृष्ठम्**—नपुं°—-—पृष् स्पृश् वा थक्, नि° साधुः—घर की चपटी छत
- **पृष्ठम्**—नपुं°—-—पृष् स्पृश् वा थक्, नि° साधुः—पुस्तक का पृष्ठ
- **पृष्ठास्थि**—नपुं°—पृष्ठम्-अस्थि—-—रीढ़ की हड्डी
- **पृष्ठगोपः**—पुं°—पृष्ठम्-गोपः—-—जो किसी लड़ते हुए योद्धा की पीठ की रक्षा करे
- **पृष्ठरक्षः**—पुं°—पृष्ठम्-रक्षः—-—जो किसी लड़ते हुए योद्धा की पीठ की रक्षा करे
- **पृष्ठग्रन्थि**—वि°—पृष्ठम्-ग्रन्थि—-—ककुद्मान, कूबड़ युक्त
- **पृष्ठचक्षुस्**—पुं°—पृष्ठम्-चक्षुस्—-—केकड़ा
- **पृष्ठतल्पनम्**—नपुं°—पृष्ठम्-तल्पनम्—-—हाथी की पीठ की बाहरी मांसपेशियाँ
- **पृष्ठदृष्टिः**—स्त्री°—पृष्ठम्-दृष्टिः—-—केकड़ा, रीक्ष
- **पृष्ठफलम्**—नपुं°—पृष्ठम्-फलम्—-—किसी आकृति का फालतू भाग
- **पृष्ठभागः**—पुं°—पृष्ठम्-भागः—-—पीठ
- **पृष्ठमांसम्**—नपुं°—पृष्ठम्-मांसम्—-—पीठ का मांस
- **पृष्ठमांसम्**—नपुं°—पृष्ठम्-मांसम्—-—पीठ पर की गूमड़ी
- **पृष्ठम् अद**—वि°—-—-—चुगलखोर, बदनाम करने वाला, कलंकित करने वाला, चुगली
- **पृष्ठम् अदन**—वि°—-—-—चुगलखोर, बदनाम करने वाला, कलंकित करने वाला, चुगली
- **पृष्ठयानम्**—नपुं°—पृष्ठम्-यानम्—-—सवारी
- **पृष्ठवंशः**—पुं°—पृष्ठम्-वंशः—-—रीढ़ की हड्डी
- **पृष्ठवास्तु**—नपुं°—पृष्ठम्-वास्तु—-—मकान की ऊपर की मंजिल
- **पृष्ठवाह्**—पुं°—पृष्ठम्-वाह्—-—लद्दू बैल
- **पृष्ठवाह्यः**—पुं°—पृष्ठम्-वाह्यः—-—लद्दू बैल
- **पृष्ठशय**—वि°—पृष्ठम्-शय—-—पीठ के बल सोने वाला
- **पृष्ठशृङ्गः**—पुं°—पृष्ठम्-शृङ्गः—-—जंगली बकरी
- **पृष्ठशृङ्गिन्**—पुं°—पृष्ठम्-श्रृंगिन्—-—मेंढा
- **पृष्ठशृङ्गिन्**—पुं°—पृष्ठम्-श्रृंगिन्—-—भैंसा

- **पृष्ठशृङ्गिन्**—पुं°—पृष्ठम्-श्रृंगिन्———हिजड़ा
- **पृष्ठशृङ्गिन्**—पुं°—पृष्ठम्-श्रृंगिन्———भीम का विशेषण
- **पृष्ठकम्**—नपुं°———पृष्ठ+कन्—पीठ
- **पृष्ठतस्**—अव्य°———पृष्ठ+तसिल्—पीछे, पीठ पीछे, पीछे से
- **पृष्ठतस्**—अव्य°———पृष्ठ+तसिल्—पीठ की ओर, पीछे की ओर
- **पृष्ठतस्**—अव्य°———पृष्ठ+तसिल्—पीठ पर
- **पृष्ठतस्**—अव्य°———पृष्ठ+तसिल्—पीठ पीछे चुपचाप, प्रच्छन रूप से
- **पृष्ठतः कृ**————पीठ पर रखना, पीछे छोड़ना
- **पृष्ठतः कृ**————उपेक्षा करना, तिलांजलि देना, छोड़ देना
- **पृष्ठतः कृ**————विरक्त होना, हाथ खींचना, त्याग देना, तिलांजलि देना
- **पृष्ठतो गम्**————अनुसरण करना
- **पृष्ठतो भू**————पीछे खड़े होना
- **पृष्ठतो भू**————उपेक्षित होना
- **पृष्ठ्य**—वि°———पृष्ठ+यत्—पीठ से संबंध रखने वाला
- **पृष्ठ्यः**—पुं°———पृष्ठ+यत्—लद्दू घोड़ा
- **पृष्णिः**—स्त्री°——— =पृश्नि पृषो°—एडी
- **पृ**—जुहो°, क्र्या°-पर° <पिपर्ति>, <पृणाति>, <पूर्ण>-कर्म° पूर्यते, प्रेर° <पूरयति>, <पूरयते>, इच्छा° <पिपरिषति>, पिपरीषति>, <पुपूर्षति>————भरना, भर देना, पूरा करना
- **पृ**—जुहो°, क्र्या°-पर° <पिपर्ति>, <पृणाति>, <पूर्ण>-कर्म° पूर्यते, प्रेर° <पूरयति>, <पूरयते>, इच्छा° <पिपरिषति>, पिपरीषति>, <पुपूर्षति>————पूरा करना, पूरी करना, तृप्त करना
- **पृ**—जुहो°, क्र्या°-पर° <पिपर्ति>, <पृणाति>, <पूर्ण>-कर्म° पूर्यते, प्रेर° <पूरयति>, <पूरयते>, इच्छा° <पिपरिषति>, पिपरीषति>, <पुपूर्षति>————हवा भरना, बजाना
- **पृ**—जुहो°, क्र्या°-पर° <पिपर्ति>, <पृणाति>, <पूर्ण>-कर्म° पूर्यते, प्रेर° <पूरयति>, <पूरयते>, इच्छा° <पिपरिषति>, पिपरीषति>, <पुपूर्षति>————संतुष्ट करना, थकावट दूर करना, प्रसन्न करना
- **पृ**—जुहो°, क्र्या°-पर° <पिपर्ति>, <पृणाति>, <पूर्ण>-कर्म° पूर्यते, प्रेर° <पूरयति>, <पूरयते>, इच्छा° <पिपरिषति>, पिपरीषति>, <पुपूर्षति>————पालना, परवरिश करना, पुष्ट करना, पालनपोषण करना, पालन करना
- **पेचकः**—पुं°———पच्+वुन्, इत्वम्—उल्लू
- **पेचकः**—पुं°———पच्+वुन्, इत्वम्—हाथी की पूँछ की जड़

- **पेचकः**—पुं॰—-—पच्+वुन्, इत्वम्—पलंग, शय्या
- **पेचकः**—पुं॰—-—पच्+वुन्, इत्वम्—बादल
- **पेचकः**—पुं॰—-—पच्+वुन्, इत्वम्—जूँ
- **पेत्रकिन्**—पुं॰—-—पेचक+इनि—हाथी
- **पेचिलः**—पुं॰—-—पच्+इलच् इत्वम्—हाथी
- **पेंजूषः**—पुं॰—-—-—कान का मैल, घूघ
- **पेटः**—पुं॰—-—पिट्+अच्—थैला, टोकरी
- **पेटः**—पुं॰—-—पिट्+अच्—पेटी, संदूक
- **पेटः**—पुं॰—-—पिट्+अच्—खुला हाथ जिसकी अंगुलियाँ फैलाई हुई हों
- **पेटम्**—नपुं॰—-—पिट्+अच्—थैला, टोकरी
- **पेटम्**—नपुं॰—-—पिट्+अच्—पेटी, संदूक
- **पेटकः**—पुं॰—-—पेट+कन्—पेटी, संदूक, थैला
- **पेटकः**—पुं॰—-—पेट+कन्—समुच्चय, गठरी
- **पेटकम्**—नपुं॰—-—पेट+कन्—पेटी, संदूक, थैला
- **पेटकम्**—नपुं॰—-—पेट+कन्—समुच्चय, गठरी
- **पेटाकः**—पुं॰—-— =पेटकः, पृषो॰—थैला, टोकरी, संदूक
- **पेटिका**—स्त्री॰—-—पिट्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्—छोटा थैला, टोकरी
- **पेटी**—स्त्री॰—-—पेट+ङीष्—छोटा थैला, टोकरी
- **पेडा**—स्त्री॰—-— =पेट, पृषो॰ —बड़ा थैला
- **पेय**—वि॰—-—पा+ण्यत्—पीने के योग्य, चढ़ा जाने के लायक
- **पेय**—वि॰—-—पा+ण्यत्—स्वादिष्ट
- **पेयम्**—नपुं॰—-—पा+ण्यत्—पानीय, मद्य या शर्बत आदि या भात का मांड, चावलों की लपसी
- **पेयुः**—पुं॰—-—-—समुद्र
- **पेयुः**—पुं॰—-—-—अग्नि
- **पेयुः**—पुं॰—-—-—सूर्य
- **पेयूषः**—पुं॰—-—पीय्+ऊषन्, बा॰ गुणः—अमृत
- **पेयूषः**—पुं॰—-—पीय्+ऊषन्, बा॰ गुणः—उस गाय का दूध जिसे ब्याये अभी एक सप्ताह से अधिक नहीं हुआ

- **पेयूषः**—पुं°—–—पीय्+ऊषन्, बा° गुणः—ताजा घी
- **पेयूषम्**—नपुं°—–—पीय्+ऊषन्, बा° गुणः—अमृत
- **पेयूषम्**—नपुं°—–—पीय्+ऊषन्, बा° गुणः—उस गाय का दूध जिसे ब्याये अभी एक सप्ताह से अधिक नहीं हुआ
- **पेयूषम्**—नपुं°—–—पीय्+ऊषन्, बा° गुणः—ताजा घी
- **पेरा**—स्त्री°—–—–—एक प्रकार का वाद्ययंत्र
- **पेल्**—भ्वा° पर°, चुरा° उभ° <पेलति>, <पेलयति>, <पेलयते>—–—–—जाना, चलना-फिरना
- **पेल्**—भ्वा° पर°, चुरा° उभ° <पेलति>, <पेलयति>, <पेलयते>—–—–—हिलना, काँपना
- **पेलम्**—नपुं°—–—पेल्+अच्—अण्डकोष
- **पेलकः**—पुं°—–—पेल्_कन्—अण्डकोष
- **पेलव**—वि°—–—पेल+वा+क—सुकुमार, सुकोमल, मृदु, मुलायम
- **पेलव**—वि°—–—पेल+वा+क—दुर्बल, पतला, क्षीण
- **पेलिः**—पुं°—–—पेल्+इन्—घोड़ा
- **पेलिन्**—पुं°—–—पेल्+इनि—घोड़ा
- **पेशल**—वि°—–—पिश्+अलच्—मृदु, मुलायम्, सुकुमार
- **पेशल**—वि°—–—पिश्+अलच्—दुबला-पतला, क्षीण
- **पेशल**—वि°—–—पिश्+अलच्—मनोहर, सुन्दर, लावण्ययुक्त, अच्छा
- **पेशल**—वि°—–—पिश्+अलच्—विशेषज्ञ, चतुर, कुशल
- **पेशल**—वि°—–—पिश्+अलच्—चालाक, छली
- **पेषल**—वि°—–—पिष्+अलच्—मृदु, मुलायम्, सुकुमार
- **पेषल**—वि°—–—पिष्+अलच्—दुबला-पतला, क्षीण
- **पेषल**—वि°—–—पिष्+अलच्—मनोहर, सुन्दर, लावण्ययुक्त, अच्छा
- **पेषल**—वि°—–—पिष्+अलच्—विशेषज्ञ, चतुर, कुशल
- **पेषल**—वि°—–—पिष्+अलच्—चालाक, छली
- **पेसल**—वि°—–—पिस्+अलच्—मृदु, मुलायम्, सुकुमार
- **पेसल**—वि°—–—पिस्+अलच्—दुबला-पतला, क्षीण
- **पेसल**—वि°—–—पिस्+अलच्—मनोहर, सुन्दर, लावण्ययुक्त, अच्छा
- **पेसल**—वि°—–—पिस्+अलच्—विशेषज्ञ, चतुर, कुशल

- **पेसल**—वि॰—-—पिस्+अलच्—चालाक, छली
- **पेशिः**—पुं॰—-—पिश्+इन्—मांस का पिंड
- **पेशिः**—पुं॰—-—पिश्+इन्—मांस राशि
- **पेशिः**—पुं॰—-—पिश्+इन्—अंडा
- **पेशिः**—पुं॰—-—पिश्+इन्—पुट्ठा
- **पेशिः**—पुं॰—-—पिश्+इन्—गर्भाधान के पश्चात् शीघ्र बाद का कच्चा गर्भ-पिण्ड
- **पेशिः**—पुं॰—-—पिश्+इन्—खिलने के लिए तैयार कली
- **पेशिः**—पुं॰—-—पिश्+इन्—इन्द्र का वज्र
- **पेशिः**—पुं॰—-—पिश्+इन्—एक प्रकार का वाद्ययंत्र
- **पेशी**—स्त्री॰—-—पेशि+ङीष्—मांस का पिंड
- **पेशी**—स्त्री॰—-—पेशि+ङीष्—मांस राशि
- **पेशी**—स्त्री॰—-—पेशि+ङीष्—अंडा
- **पेशी**—स्त्री॰—-—पेशि+ङीष्—पुट्ठा
- **पेशी**—स्त्री॰—-—पेशि+ङीष्—गर्भाधान के पश्चात् शीघ्र बाद का कच्चा गर्भ-पिण्ड
- **पेशी**—स्त्री॰—-—पेशि+ङीष्—खिलने के लिए तैयार कली
- **पेशी**—स्त्री॰—-—पेशि+ङीष्—इन्द्र का वज्र
- **पेशी**—स्त्री॰—-—पेशि+ङीष्—एक प्रकार का वाद्ययंत्र
- **पेशिकोशः**—पुं॰—पेशिः-कोशः—-—पक्षी का अंडा
- **पेशिकोषः**—पुं॰—पेशिः-कोषः—-—पक्षी का अंडा
- **पेशीकोशः**—पुं॰—पेशी-कोशः—-—पक्षी का अंडा
- **पेशीकोषः**—पुं॰—पेशी-कोषः—-—पक्षी का अंडा
- **पेषः**—पुं॰—-—पिष्+घञ्—पीसना, चूरा करना, कुचलना
- **पेषणम्**—नपुं॰—-—पिष्+ल्युट्—चूर्ण बनाना, पीसना
- **पेषणम्**—नपुं॰—-—पिष्+ल्युट्—खलिहान का वह स्थान जहाँ अनाज की बालों पर दायँ चलाई जाती है
- **पेषणम्**—नपुं॰—-—पिष्+ल्युट्—सिल और लोढी, पीसने का कोई भी उपकरण
- **पेषणिः**—स्त्री॰—-—पिष्+अनि—चक्की, सिल, खरल
- **पेषणी**—स्त्री॰—-—पेषणि+ङीष्—चक्की, सिल, खरल

- **पेषाकः**—स्त्री०—-—पेष्+आ+कन्—चक्की, सिल, खरल
- **पेस्वर**—वि०—-—पेस्+वरच्—जाने वाला, घूमने वाला
- **पेस्वर**—वि०—-—पेस्+वरच्—नाशकारी
- **पै**—भ्वा० पर० <पायति>—-—-—सूखना, मुरझाना
- **पैगिः**—पुं०—-—पिंग+इञ्—यास्क का पैतृक नाम
- **पैंजूषः**—पुं०—-—पिंजूष+अण्—कान
- **पैठर**—वि०—-—पिठर+अण्—किसी पात्र में उबाला हुआ
- **पैठीनसिः**—पुं०—-—-—एक प्राचीन ऋषि जो एक धर्मशास्त्र का प्रणेता है
- **पैंडिक्यम्**—नपुं०—-—पिंड+ठन्+ष्यञ्—भिक्षा पर जीवन निर्वाह करना, भिक्षा वृत्ति
- **पैंडिन्यम्**—नपुं०—-—पिंड+इन्+ष्यञ्—भिक्षा पर जीवन निर्वाह करना, भिक्षा वृत्ति
- **पैतामह**—वि०—-—पितामह+अण्—दादा या पितामह से संबंध रखने वाला
- **पैतामह**—वि०—-—पितामह+अण्—उत्तराधिकार में पितामह से प्राप्त
- **पैतामह**—वि०—-—पितामह+अण्—ब्रह्मा से गृहीत, ब्रह्मा से अधिष्ठित, या ब्रह्मा से सम्बन्ध रखने वाला
- **पैतामहाः**—पुं०, ब० व०—-—पितामह+अण्—पूर्वपुरखा, बाप दादा
- **पैतामहिक**—वि०—-—पितामह+ठक्—पितामह से सम्बन्ध रखने वाला
- **पैतृक**—वि०—-—पितृ+ठञ्—पिता से सम्बन्ध रखने वाला
- **पैतृक**—वि०—-—पितृ+ठञ्—पिता से प्राप्त या आगत, पुरखाओं से संबंध, पिता की परंपरा से प्राप्त
- **पैतृक**—वि०—-—पितृ+ठञ्—पितरोंके लिए पुनीत
- **पैतृकम्**—नपुं०—-—-—मृत पुर्वजों या पितरों के सम्मान में अनुष्ठित श्राद्ध
- **पैतृमत्यः**—पुं०—-—पितृमती+ण्य—अविवाहिता स्त्री का पुत्र
- **पैतृमत्यः**—पुं०—-—पितृमती+ण्य—किसी प्रसिद्ध पुरुष का पुत्र
- **पैतृष्वसेयः**—पुं०—-—पितृष्वसृ+ढक्, छण् वा—फूफी, या बुवा का बेटा
- **पैतृत्वश्रीयः**—पुं०—-—पितृष्वसृ+ढक्, छण् वा—फूफी, या बुवा का बेटा
- **पैत्त**—वि०—-—पित्त+अण्, ठञ् वा—पित्तीय, पित्तसंबंधी
- **पैत्तिक**—वि०—-—पित्त+अण्, ठञ् वा—पित्तीय, पित्तसंबंधी
- **पैत्र**—वि०—-—पितृ+अण्—पिता या पुरखाओं से संबंध रखने वाला, पैतृक, पुश्तैनी
- **पैत्र**—वि०—-—पितृ+अण्—पित्रों के लिए पुनीत

- **पैत्रम्**—नपुं०—-—पितृ+अण्—तर्जनी और अंगूठे का मध्यवर्ती हाथ का भाग
- **पैलव**—वि०—-—पीलु+अण्—पीलु वृक्ष की लकड़ी से बना हुआ
- **पैशल्यम्**—नपुं०—-—पेशल+ष्यञ्—मृदुता, सुशीलता, सुकुमारता
- **पैशाच**—वि०—-—पिशाच+अण्—राक्षसी, नारकीय
- **पैशाचः**—वि०—-—पिशाच+अण्—हिन्दु-धर्मशास्त्र में वर्णित आठ प्रकार के विवाहों में से आठवाँ या निम्नतम श्रेणी का विवाह
- **पैशाचः**—वि०—-—पिशाच+अण्—एक प्रकार का राक्षस या पिशाच
- **पैशाची**—स्त्री०—-—पिशाच+अण्+ङीप्—किसी धार्मिक संस्कार के अवसर पर तैयार किया गया नैवेद्य
- **पैशाची**—स्त्री०—-—पिशाच+अण्+ङीप्—रात
- **पैशाची**—स्त्री०—-—पिशाच+अण्+ङीप्—एक प्रकार की अंडबंड भाषा जो रंगमंच पर पिशाचों द्वारा बोली जाय, प्राकृत भाषा का एक निम्नतम रूप
- **पैशाचिक**—वि०—-—पिशाच+ठक्—नारकीय, राक्षसी
- **पैशुनम्**—नपुं०—-—पिशुनस्य भावः कर्म वा, पिशुन+ष्यञ् वा—चुगली, बदनामी, इधर की उधर लगाना, कलंक
- **पैशुनम्**—नपुं०—-—पिशुनस्य भावः कर्म वा, पिशुन+ष्यञ् वा—बदमाशी, ठग्गी
- **पैशुनम्**—नपुं०—-—पिशुनस्य भावः कर्म वा, पिशुन+ष्यञ् वा—दुष्टता, दुर्भावना
- **पैशुन्यम्**—नपुं०—-—पिशुनस्य भावः कर्म वा, पिशुन+ष्यञ् वा—चुगली, बदनामी, इधर की उधर लगाना, कलंक
- **पैशुन्यम्**—नपुं०—-—पिशुनस्य भावः कर्म वा, पिशुन+ष्यञ् वा—बदमाशी, ठग्गी
- **पैशुन्यम्**—नपुं०—-—पिशुनस्य भावः कर्म वा, पिशुन+ष्यञ् वा—दुष्टता, दुर्भावना
- **पैष्ट**—वि०—-—पिष्ट+अण्—आटे का पीठी का बना हुआ
- **पैष्टिक**—वि०—-—पिष्ट+ठञ्—आटे का पीठी का बना हुआ
- **पैष्टिकम्**—नपुं०—-—-—कचौड़ियों का ढेर
- **पैष्टिकम्**—नपुं०—-—-—अनाज से खींची हुई मदिरा
- **पैष्टी**—स्त्री०—-—पैष्ट+ङीष्—अनाज को सड़ाकर उससे तैयार की हुई मदिरा
- **पोगंड**—वि०—-—पौः शुद्धो गंड एकदेशो यस्य-तारा०—बच्चा, अवयस्क, अपूर्ण विकसित
- **पोगंड**—वि०—-—पौः शुद्धो गंड एकदेशो यस्य-तारा०—कम या विकृत अंग वाला
- **पोगंड**—वि०—-—पौः शुद्धो गंड एकदेशो यस्य-तारा०—विकृत, विरूप
- **पोगंडः**—पुं०—-—-—बालक जिसकी आयु ५ से सोलहवर्ष के भीतर की हो
- **पोटः**—पुं०—-—पुट+घञ्—घर की नींव
- **पोटदलः**—पुं०—पोटः-दलः—-—एक प्रकार का नर-कुल

- **पोटदलः**—पुं°—पोटः-दलः—–—कास
- **पोटदलः**—पुं°—पोटः-दलः—–—एक प्रकार की मछली
- **पोटक**—पुं°—–—पुट्+ण्वुल्—नौकर
- **पोटा**—स्त्री°—–—पुट्+अच्+टाप्—मरदानी स्त्री, पुरुषों की भाँति दाढ़ी वाली स्त्री
- **पोटा**—स्त्री°—–—पुट्+अच्+टाप्—हिजड़ा, उभयलिंगी
- **पोटा**—स्त्री°—–—पुट्+अच्+टाप्—नौकरानी
- **पोटी**—स्त्री°—–—पोट+ङीष्—स्थूलकाय मगरमच्छ
- **पोट्टलिका**—स्त्री°—–—पोट्टली+कन्+टाप्, ह्रस्व—पोटली, पुलिंदा, गठरी
- **पोट्टली**—स्त्री°—–—पोट+ली+ड ङीप्, पृषो°—पोटली, पुलिंदा, गठरी
- **पोतः**—पुं°—–—पू+तन्—किसी भी जानवर का बच्चा, पशु-शावक, बछड़ा, अश्वशावक आदि
- **पोतः**—पुं°—–—पू+तन्—दस बरस का हाथी
- **पोतः**—पुं°—–—पू+तन्—जहाज, बेड़ा, किश्ती
- **पोतः**—पुं°—–—पू+तन्—वस्त्र, कपड़ा
- **पोतः**—पुं°—–—पू+तन्—पौधे का अंकुर
- **पोतः**—पुं°—–—पू+तन्—घर बनाने की जगह
- **पोताच्छादनम्**—नपुं°—पोतः-आच्छादनम्—–—तंबु
- **पोताधानम्**—नपुं°—पोतः-आधानम्—–—छोटी-छोटी मछलियों का झुण्ड
- **पोतधारिन्**—पुं°—पोतः-धारिन्—–—जहाज का स्वामी
- **पोतभङ्गः**—पुं°—पोतः-भङ्गः—–—जहाज का टूट जाना
- **पोतरक्षः**—पुं°—पोतः-रक्षः—–—किश्ती या नाव का चप्पू या डांड
- **पोतवणिज्**—पुं°—पोतः-वणिज्—–—व्यापारी जो समुद्र से आ जाकर व्यापार करे
- **पोतवाहः**—पुं°—पोतः-वाहः—–—खिवैया, नाविक
- **पोतकः**—पुं°—–—पोत+कन्—पशुशावक
- **पोतकः**—पुं°—–—पोत+कन्—छोटा पौधा
- **पोतकः**—पुं°—–—पोत+कन्—घर बनाने के निमित्त भूखण्ड
- **पोतासः**—पुं°—–—पोत+अस्+अच्—एक प्रकार का कपूर
- **पोतृ**—पुं°—–—पू+तृन्—यज्ञ में कार्य कराने वाले सोलह ऋत्विजों में से एक

- **पोत्या**—स्त्री°—-—पोत+य+टाप्—नौकाओं का बेड़ा
- **पोत्रम्**—नपुं°—-—पू+ष्ट्रन्—सूअर की थूथन
- **पोत्रम्**—नपुं°—-—पू+ष्ट्रन्—नौका, जहाज
- **पोत्रम्**—नपुं°—-—पू+ष्ट्रन्—हल का फलका
- **पोत्रम्**—नपुं°—-—पू+ष्ट्रन्—बज्र
- **पोत्रम्**—नपुं°—-—पू+ष्ट्रन्—वस्त्र
- **पोत्रम्**—नपुं°—-—पू+ष्ट्रन्—पोतृ का पद
- **पोत्रायुधः**—पुं°—पोत्रम्-आयुधः—-—सूअर, वराह
- **पोत्रिन्**—पुं°—-—पोत्र+इनि—सूअर, वराह
- **पोलः**—पुं°—-—पुल्+ण—ढेर
- **पोलः**—पुं°—-—पुल्+ण—राशि, विस्तार
- **पोलिका**—स्त्री°—-—पोली+कन्+टाप्, ह्रस्वः—एक प्रकार की पूरी
- **पोली**—स्त्री°—-—पोल+ङीप्—एक प्रकार की पूरी
- **पोलिन्दः**—पुं°—-—पोतस्य अलिन्द इव-पृषो°—जहाज का मस्तूल
- **पोषः**—पुं°—-—पुष्+घञ्—पोषण, संपालन, संधारण
- **पोषः**—पुं°—-—पुष्+घञ्—पुष्टि, वृद्धि, संवर्धन, प्रगति
- **पोषः**—पुं°—-—पुष्+घञ्—समृद्धि, प्राचुर्य, बाहुल्य
- **पोषणम्**—नपुं°—-—पुष्+णिच्+ल्युट्—पोसना, दूध पिलाना, पालना, संधारण करना
- **पोषयित्नुः**—पुं°—-—पुष्+णिच+इत्वुच्—कोयल
- **पोषितृ**—वि°—-—पुष्+णीच्+तृच्—दूध पिला कर पालने वाला, पालन-पोषण करने वाला
- **पोषितृ**—पुं°—-—-—परवरिश करने वाला, दूध पिलाने वाला
- **पोषिन्**—वि°—-—पुष्+णिनि, तृच् च—दूध पिलाने वाला, पालन-पोषण करने वाला
- **पोष्टृ**—वि°—-—पुष्+णिनि, तृच् च—दूध पिलाने वाला, पालन-पोषण करने वाला
- **पोषिन्**—पुं°—-—-—पालक, पोषक, रक्षक
- **पोष्टृ**—पुं°—-—-—पालक, पोषक, रक्षक
- **पोष्य**—वि°—-—पुष्+ण्यत्—खिलाये जाने के योग्य, पालन-पोषण किये जाने योग्य, संपालनीय
- **पोष्य**—वि°—-—पुष्+ण्यत्—सुपालित, फलता-फूलता, समृद्ध

- **पोष्यपुत्रः**—पुं°—पोष्य-पुत्रः—-—गोद लोया हुआ पुत्र
- **पोष्यसुतः**—पुं°—पोष्य-सुतः—-—गोद लोया हुआ पुत्र
- **पोष्यवर्गः**—पुं°—पोष्य-वर्गः—-—ऐसे संबंधियों का समूह जो पालन पोषण तथा रक्षा किये जाने का योग्य हो
- **पौंश्चलीय**—वि°—-—पुंश्चली+छण्—वेश्याओं से संबंध रखने वाला
- **पौंश्चल्यम्**—नपुं°—-—पुंश्चली+ष्यञ्—वेश्यापन, कुलटापन
- **पौंसवनम्**—नपुं°—-—पुंसवन्+अण्—पुत्रोत्पत्ति करने वाला
- **पौंसवनम्**—नपुं°—-—पुंसवन्+अण्—सर्व प्रथम परिष्कारात्मक या शुद्धीकरण संबंधी संस्कार, स्त्री के गर्भाधान के प्रथम चिह्न प्रकट होने पर पुत्रोत्पत्ति के उद्देश्य से यह संस्कार किया जाता है
- **पौंसवनम्**—नपुं°—-—पुंसवन्+अण्—भ्रूण, गर्भ
- **पौंसवनम्**—नपुं°—-—पुंसवन्+अण्—दूध
- **पौंस्नः**—वि°—-—पुंस्+स्नञ्—पुरुषोचित
- **पौंस्नः**—वि°—-—पुंस्+स्नञ्—मर्दाना, पौरुषेय
- **पौंस्नम्**—नपुं°—-—पुंस्+स्नञ्—मर्दानगी, पौरुष
- **पौगण्ड**—वि°—-—पोडंग+अण्—बालोचित
- **पौगण्डम्**—नपुं°—-—पोडंग+अण्—बचपन, बाल्यावस्था
- **पौण्ड्रः**—पुं°—-—पुंड्र+अण्—एक देश का नाम
- **पौण्ड्रः**—पुं°—-—पुंड्र+अण्—उस देश का राजा, या निवासी
- **पौण्ड्रः**—पुं°—-—पुंड्र+अण्—र्क प्रकार का गन्ना
- **पौण्ड्रः**—पुं°—-—पुंड्र+अण्—संप्रदायबोधक तिलक
- **पौण्ड्रः**—पुं°—-—पुंड्र+अण्—भीम के शंख का नाम
- **पौण्ड्रकः**—पुं°—-—पुंड्र+कन्—गन्ने का एक भेद
- **पौण्ड्रकः**—पुं°—-—पुंड्र+कन्—वर्णसंकर जाति
- **पौण्ड्रकः**—पुं°—-—पुंड्र+ठक्—एक प्रकार का गन्ना पौंडा
- **पौन्तवम्**—नपुं°—-— = यौतव पृषो°—एक तोल
- **पौत्तिकम्**—नपुं°—-—पूतिक अण्—एक प्रकार का शहद
- **पौत्र**—वि°—-—पुत्रस्यापत्यम्-अण्—पुत्र से प्राप्त या संबद्ध
- **पौत्रः**—पुं°—-—-—पोता, पुत्र का बेटा

- **पौत्री**—स्त्री॰—-—-—पोती, पुत्र की बेटी
- **पौत्रिकेयः**—पुं॰—-—पुत्रिका+ढक्—लड़की का पुत्र जो अपने नाना का वंश चलाये
- **पौनः पुनिकः**—वि॰—-—पुनः पुनः+ठञ्, टिलोपः—बार-बार दोहराया गया, बार-बार होने वाला
- **पौनः पुन्यम्**—नपुं॰—-—पुनः पुनः+ष्यञ्—बार बार आवृत्ति, लागातार दोहराया जाना
- **पौनरुक्तम्**—नपुं॰—-—पुनरुक्त+न्, ष्यञ् च—आवृत्ति
- **पौनरुक्तम्**—नपुं॰—-—पुनरुक्त+न्, ष्यञ् च—आधिक्य, अनावश्यकता, निरर्थकता
- **पौनरुक्त्यम्**—नपुं॰—-—पुनरुक्त+न्, ष्यञ् च—आवृत्ति
- **पौनरुक्त्यम्**—नपुं॰—-—पुनरुक्त+न्, ष्यञ् च—आधिक्य, अनावश्यकता, निरर्थकता
- **पौनर्भव**—वि॰—-—पुनर्भू+अञ्—जिसने दूसरे पति से विवाह कर लिया है ऐसी विधवा से संबंध रखने वाला
- **पौनर्भव**—वि॰—-—पुनर्भू+अञ्—दोहराया हुआ
- **पौनर्भवः**—पुं॰—-—पुनर्भू+अञ्—पुनर्विवाहिता विधव का पुत्र, प्राचीन हिन्दु-धर्मशास्त्र में स्वीकृत बारह पुत्रों में से एक
- **पौनर्भवः**—पुं॰—-—-—स्त्री का दूसरा पति
- **पौर** —वि॰—-—पुर+अण्—किसी नगर या शहर से संबंध रखने वाला
- **पौरः**—पुं॰—-—पुर+अण्—शहरी, नागरिक
- **पौराङ्गना**—स्त्री॰—पौर-अङ्गना—-—नगर में रहने वाली स्त्री
- **पौरयोषित**—स्त्री॰—पौर- योषित—-—नगर में रहने वाली स्त्री
- **पौरस्त्री**—स्त्री॰—पौर- स्त्री—-—नगर में रहने वाली स्त्री
- **पौरजानपद**—वि॰—पौर- जानपद—-—शहर या नगर से संबंध रखने वाला
- **पौरदाः** —पुं॰—पौर-दाः —-—नागरिक और ग्रामीण, शहरी और देहाती
- **पौरवृद्धः**—पुं॰—पौर- वृद्धः—-—प्रमुख नागरिक, उपनगरपाल
- **पौरकम्**—नपुं॰—-—पौर+कै+क—घर के निकट बगीचा
- **पौरकम्**—नपुं॰—-—पौर+कै+क—नगर के निकट उद्यान
- **पौरंदर**—वि॰—-—पुरंदर+अण्—इन्द्र से प्राप्त, इन्द्र संबंधी, इन्द्र के लिए पुनीत
- **पौरंदरम्**—नपुं॰—-—पुरंदर+अण्—ज्येष्ठा नक्षत्र
- **पौरव**—वि॰—-—पुरु+अण्—पुरु के वंश में उत्पन्न
- **पौरवः**—पुं॰—-—पुरु+अण्—पुरु की सन्तान, पुरुवंशी
- **पौरवः**—पुं॰—-—पुरु+अण्—भारत के उत्तर में स्थित एक देश तथा उसके नागरिक

- **पौरवः**—पुं॰—-—पुरु+अण्—उस प्रदेश का निवासी या राजा
- **पौरवीय**—वि॰—-—पौरव+छ—पौरवों का भक्त
- **पौरस्त्य**—वि॰—-—पुरस्+त्यक्—पूर्वी
- **पौरस्त्य**—वि॰—-—पुरस्+त्यक्—प्रमुख
- **पौरस्त्य**—वि॰—-—पुरस्+त्यक्—पहला, प्रथम, पूर्ववर्ती
- **पौराण**—वि॰—-—पुरान+अण्—भूत काल का, प्राचीन, अतीत काल का
- **पौराण**—वि॰—-—पुरान+अण्—प्राक्कालीन
- **पौराण**—वि॰—-—पुरान+अण्—पुराणों से संबंध रखने वाला या उनसे प्राप्त
- **पौराणिक**—वि॰—-—पुराण+ठक्—भूत काल का, प्राचीन
- **पौराणिक**—वि॰—-—पुराण+ठक्—पुराणों से संबद्ध या उनसे प्राप्त
- **पौराणिक**—वि॰—-—पुराण+ठक्—अतीत काल के उपाख्यानों का ज्ञाता
- **पौराणिकः**—पुं॰—-—पुराण+ठक्—पुराणों का सुविज्ञ ब्राह्मण, पुराणों का पाठक
- **पौराणिकः**—पुं॰—-—पुराण+ठक्—पुराणविद्, पौराणिक कथा जानने वाला व्यक्ति
- **पौरुष**—वि॰—-—पुरुष+अण्—पुरुष संबंधी, मानवी
- **पौरुष**—वि॰—-—पुरुष+अण्—मर्दाना, पुरुषोचित
- **पौरुषः**—पुं॰—-—पुरुष+अण्—एक मनुष्य के द्वारा ढोये जाने योग्य बोझा
- **पौरुषी**—स्त्री॰—-—पुरुष+अण्+ङीष्—स्त्री
- **पौरुषम्**—नपुं॰—-—पुरुष+अण्—मानवी कृत्य, मनुष्य का काम, चेष्टा, प्रयत्न
- **पौरुषम्**—नपुं॰—-—पुरुष+अण्—शौर्य, विक्रम, वीरता, मर्दानगी, साहस
- **पौरुषम्**—नपुं॰—-—पुरुष+अण्—वीर्य, शुक्र
- **पौरुषम्**—नपुं॰—-—पुरुष+अण्—पुरुष की जननेन्द्रिय, लिंग
- **पौरुषम्**—नपुं॰—-—पुरुष+अण्—मनुष्य की पूरी ऊँचाई, खुली हुई अंगुलियों समेत अपने दोनों हाथ ऊपर उठाकर जितनी ऊँचाई तक मनुष्य पहुँचे
- **पौरुषम्**—नपुं॰—-—पुरुष+अण्—धूपघड़ी
- **पौरुषेय**—वि॰—-—पुरुष+ढञ्—मनुष्य से प्राप्त,मनुष्य कृत, मनुष्य द्वारा स्थापित या प्रवर्तित
- **पौरुषेय**—वि॰—-—पुरुष+ढञ्—मर्दाना, पुरुषोचित्त
- **पौरुषेय**—वि॰—-—पुरुष+ढञ्—आध्यात्मिक
- **पौरुषेयः**—पुं॰—-—पुरुष+ढञ्—मनुष्यवध

- **पौरुषेयः**—पुं०———पुरुष+ढञ्—मनुष्यों की भीड़
- **पौरुषेयः**—पुं०———पुरुष+ढञ्—रोजनदारी पर काम करने वाला श्रमिक, कमेरा
- **पौरुषेयः**—पुं०———पुरुष+ढञ्—मानवी काम, मनुष्य का कार्य
- **पौरोगवः**—पुं०———पुरोऽग्रेगौः नेत्रं यस्य पुरोगु+अण्—राज भवन का अधीक्षक, विशेषतः राजा की रसोई का
- **पौरोभाग्यम्**—नपुं०———पुरोभागिन्+ष्यञ्, अन्य लोपः, वृद्धिः—छिद्रान्वेषण, दोषदर्शन
- **पौरोभाग्यम्**—नपुं०———पुरोभागिन्+ष्यञ्, अन्य लोपः, वृद्धिः—दुर्भावना, ईर्ष्या, डाह
- **पौरोहित्यम्**—नपुं०———पुरोहित+ष्यञ्—कुलपुरोहित का पद, पुरोहिताई
- **पौर्णमास**—वि०———पूर्णमासी+अण्—पूर्णिमा से संबंध रखने वाला
- **पौर्णमासः**—पुं०———पूर्णमासी+अण्—अग्निहोत्री द्वारा पूर्णिमा के दिन अनुष्ठित संस्कार
- **पौर्णमासी**—स्त्री०———पौर्णमास+ङीप्—पूर्णिमा, पूर्णमासी
- **पौर्णमी**—स्त्री०———पूर्ण+मा+क+अण्+ङीप्—पूर्णिमा, पूर्णमासी
- **पौर्णमास्यम्**—नपुं०———पौर्णमासी+यत् बा०—पूर्णिमा के दिन किया जाने वाला यज्ञ
- **पौर्णिमा**—स्त्री०———पूर्णमा+अण्+टाप्—पूर्णमासी का दिन
- **पौर्तिक**—वि०———पूर्त+ठक्—पुण्यप्रद धर्मार्थ कार्यों से संबंध रखने वाला
- **पौर्व**—वि०———पूर्व+अण्—भूतकाल संबंधी
- **पौर्व**—वि०———पूर्व+अण्—पूर्व दिशा से संबंध रखने वाला, पौर्वी
- **पौर्वदेहिक**—वि०———पूर्वदेह+ठक्—पूर्वजन्म संबंधी, पहले जन्म में किया हुआ, पूर्वजन्म कृत
- **पौर्वदैहिक**—वि०———पूर्वदेह+ठक्—पूर्वजन्म संबंधी, पहले जन्म में किया हुआ, पूर्वजन्म कृत
- **पौर्वपदिक**—वि०———पूर्वपद+ठञ्—समास के प्रथम पद से संबंध रखने वाला
- **पौर्वापर्यम्**—नपुं०———पूर्वापरि+ष्यञ्—पहले का और बाद का संबंध, पूर्ववर्ती और पश्चवर्ती संबंध
- **पौर्वापर्यम्**—नपुं०———पूर्वापरि+ष्यञ्—उचित क्रम, अनुक्रम, सातत्य
- **पौर्वाह्णिकम्**—वि०———पूर्वाह्ण+ठञ्—दोपहर के पूर्वकाल से संबंध रखने वाला, मध्याह्न पूर्व संबंधी
- **पौर्विक**—वि०———पूर्व+ठञ्—पहला, पूर्वकालीन, पहले का
- **पौर्विक**—वि०———पूर्व+ठञ्—पैतृक
- **पौर्विक**—वि०———पूर्व+ठञ्—पुराना, प्राचीन
- **पौलस्त्यः**—पुं०———पुल्स्तेः अपत्यम्-पुलस्ति+यञ्—रावण का विशेषण
- **पौलस्त्यः**—पुं०———पुल्स्तेः अपत्यम्-पुलस्ति+यञ्—कुबेर का विशेषण

- **पौलस्त्यः**—पुं°—-—पुल्स्तेः अपत्यम्-पुलस्ति+यञ्—विभीषण का विशेषण
- **पौलस्त्यः**—पुं°—-—पुल्स्तेः अपत्यम्-पुलस्ति+यञ्—चन्द्रमा
- **पौलिः**—पुं°, स्त्री°—-—पुल्+ण, पोलेन निवृत्तः-पोल+इञ्, पौलि+ङीप्—एक प्रकार की पूरी
- **पौली**—स्त्री°—-—पुल्+ण, पोलेन निवृत्तः-पोल+इञ्, पौलि+ङीप्—एक प्रकार की पूरी
- **पौलोमी**—स्त्री°—-—पुलोमन्+अण्, अनो लोपः, पौलोम+ङीप्—शची, पुलोमा को पुत्री, इन्द्र की पत्नी
- **पौलोमीसम्भवः**—पुं°—पौलोमी-सम्भवः—-—जयन्त का विशेषण
- **पौषः**—पुं°—-—पौषी+अण्—एक चांद्रमास का नाम जिसमें चन्द्रमा पुष्य नक्षत्र में रहता है
- **पौषी**—स्त्री°—-—पौषी+अण्+ङीप्—पौष मास में आने वाली पूर्णिमा
- **पौष्कर**—वि°—-—पुष्कर+अण्—नील कमल से संबंध रखने वाला
- **पौष्करक**—वि°—-—पुष्कर+अण्, पौष्कर+कन्—नील कमल से संबंध रखने वाला
- **पौष्करिणी**—स्त्री°—-—पुष्कराणां समूहः-पौष्कर+इनि+ङीप्—कमलों से भरा हुआ सरोवर, सरोवर
- **पौष्कलः**—पुं°—-—पुष्कल+अण्—अनाज का एक भेद
- **पौष्कल्यम्**—नपुं°—-—पुष्कल+ष्यञ्—परिपक्वता, पूर्ण विकास, पूरी वृद्धि
- **पौष्कल्यम्**—नपुं°—-—पुष्कल+ष्यञ्—बाहुल्य
- **पौष्टिक**—वि°—-—पुष्टि+ठञ्—वृद्धि करने वाला, कल्यान कारक
- **पौष्टिक**—वि°—-—पुष्टि+ठञ्—पोषण करने वाला, पोषक, पुआष्टिकारक, बलवर्धक
- **पौष्णम्**—नपुं°—-—पूषादेवता अस्य-पूषन्+अण्, उपधालोपः—रेवती नक्षत्र
- **पौष्प**—वि°—-—पुष्प+अण्—फूल संबंधी या फुलों से प्राप्त, पुष्पमय, पुष्पित
- **पौष्पी**—स्त्री°—-—पुष्प+अण्+ङीप्—पटलिपुत्र नगर, पटना
- **पौष्पी**—स्त्री°—-—पुष्प+अण्+ङीप्—शराब
